CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पढ़िये ! अवश्य पढ़िये ! नहा तो पछताओगे ?

हिन्दी भाषा का अपूर्व ग्रंथ

धर्म शास्त्रों का सार, कई वर्षों के कठिन परिश्रम का फूल.

प्रभु भक्ति

प्रत्येक प्रभुभक्त को नित्य अवश्य पढ़ने योग्य.

हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारे फ़ानी में, कुछ अच्छे कर्म करले चार दिन की ज़िन्दगानी में।
बहा लेजाएगा एक दिन वो दरयाए फ़ना सबको, रुकावट आ नहीं सक्ती कभी उसकी रवानी में।
कयामिस जान ही कूंच कर जावेंगे दुनियाँ से, कोई बचपन कोई पीरी कोई अहदे जवानी में।

प्यारे धर्मबंधुओ!

जगत् के सुख दुःखरूपी जाल में क्यों आप ऐसे फंस गये हैं कि कभी भगवत की भक्ति का स्मरण भी नहीं। ज़रा एक श्वान (कुत्ता) को भी तो देखियेगा कि प्रभुभक्ति (मालिक की ख़िदमत) ही में अवसर पर अपने प्राण तक न्योछावर कर देता है तो मनुष्य होकर प्रभुभक्ति को भूल जाना कितनी बड़ी भूल है। भाइयो ! और सचेत होकर अपने कर्त्तव्य पालन में ध्यान दो, आयु का कुछ भी भरोसा नहीं है यदि काल के सिरपर चढ़ आने पश्चात् भगवत् की भक्ति का स्मरण हुआ तो वही कहावत चरितार्थ होगी कि "अब छताये क्या हुये जब चिड़ियाँ चुग गई खेत" अतएव परमात्मा की भक्ति में सदैव कटिबद्ध रहियेगा।

परम आनन्द अर्थात् मोक्ष सुख को प्राप्त करने के लिये योग्य साधन संस्कृत के अनेक शास्त्रों को पढ़ने से प्राप्त हो सके। जिसके लिये पूरे २ विद्याध्ययन की आवश्यक्ता है अनेक शास्त्रों को पढ़कर सद् ज्ञान प्राप्त करने के लिये यदि आपने योग्य विद्याध्ययन नहीं किया है भगवान का वंदन पूजन ध्यान आदि करते समय मन की चंचलता के कारण यदि आपका चित्त स्थिर नहीं रहता है संस्कृत के स्तोत्र स्तुति आदि पाठ करते समय भावार्थ नहीं समझने के कारण यदि प्रभु से पूर्ण प्रेम उत्पन्न नहीं होता है और न भक्ति का आनन्द आता है तो हमारे धर्मबंधुओं ! लीजिये आपकी सेवा में "प्रभुभक्ति" ग्रंथ भेट करते हैं। कई वर्षों तक कितने ही शास्त्र पढ़कर जो ज्ञान आप संपादन कर सकते हैं वह केवल एक "प्रभुभक्ति ग्रंथ" पढ़कर प्राप्त कर सकते हैं। ग्रंथ जितना बड़ा है उतना ही अधिक आनंददायक और उपयोगी है। इस ग्रन्थ में १६ प्रकरण हैं। सुन्दर टाइप, मनोहर कागज़, और पक्की ज़िल्द बंधी है। यह ग्रंथ हिन्दीभाषा में होने से प्रत्येक हिन्दी जानने वाला इसको भले प्रकार समझ सकता है। इसको पढ़ते समय अन्य सर्व बातों को भूलकर चित्त एकाग्र होकर प्रभुप्रेम में मग्न होजाता है और भक्ति का अपूर्व आनंद आता है और ऐसा प्रतीत होने लगता है मानों साक्षात् प्रभुही के दर्शन होरहे हैं, साक्षात् प्रभुही से वार्त्तालाप में अपनी सर्व निवेदने कह रहें हैं अनेक युक्तियों द्वारा निवेदनों की स्वीकृति करा रहे हैं। ग्रंथ पढ़ते २ हाथ से छोड़ते समय ऐसा मालूम होता है मानों एक आनंदभवन छोड़ कर किसी दुःखागार में आफँसा। स्थानाभाव से इस ग्रंथ की पूरी प्रशंसा यहाँ नहीं की जासक्ती है और न यहाँ पर अधिक प्रशंसा शोभा देती है। जब पाठक इस ग्रंथ को पढ़कर स्वयं अपने मुख से प्रशंसा करेंगे तब पाठकों के मुख पर ही इसकी प्रशंसा शोभा देगी और तबही लेखक का परिश्रम सफल होगा। अब आपसे हमारा अंतिम हार्दिक निवेदन यही है कि आप क़िस्से, नाटक, उपन्यास आदि पढ़ने में अपने अमूल्य समय और द्रव्य को वृथा व्यय न कीजियेगा, इस प्रभुभक्ति ग्रंथ को नित्य एक वा आधा प्रकरण अवश्य पाठ कीजियेगा और अपनी संतान को भी पढ़ाइयेगा जिससे ज्ञानी सदाचारी धर्मज्ञ बने और आत्मा का कल्याण करे। प्रत्येक भाई इस ग्रंथ को ख़रीद कर अवश्य लाभ उठावें अतएव इस ग्रंथ का मूल्य केवल १) एक रुपया रक्खा गया है। डाकव्यय ≡) इस ग्रन्थ की दो प्रति एकही साथ मंगाने वालों को डाकव्यय माफ़ होगा।

इन्द्रियों के क्षणिक सुखों के लिये सैकड़ों रुपये सदा व्यय करते हो तो प्यारे भाइयों ! आत्मा के कल्याणार्थ इस ग्रंथरूपी योग्य साधन को केवल एक रुपये में प्राप्त करने में भी हर्गिज़ देर न कीजियेगा—निम्नलिखित पते से शीघ्र वी. पी. द्वारा मंगवा लीजियेगा॥

पत्रव्यवहार करने का पता—बाबू बालचन्द ऐण्ड मूलचन्द बोहरा, नया बाज़ार, अजमेर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

❊ पृथ्वीराज ❊

पृथ्वीराज चौहान का यह प्रमाणित इतिहास उपन्यासाकार में प्रकाशित किया गया है। इसमें चौहानों का साम्राज्य, वीरवर पृथ्वीराज की बाल-लीला, यवनों का भारतवर्ष पर दाँत लगाना, पृथ्वीराज का घोर संग्राम करके सात वार यवनों को परास्त करना, आल्हा ऊदल का घनघोर संग्राम, चामुण्डराय की वीरता, कैमास का उद्दण्डपन, संयोगिताहरण, जयचन्द और पृथ्वीराज का घोर युद्ध, वीरभद्र का पृथ्वी फाड़कर प्रकट होना, भारत का भविष्य, पुनर्वार यवन बादशाह का चढ़कर आना, संयोगिता से विदा लेकर पृथ्वीराज का रण में जाना, वीरों के द्वारा अपूर्व वीरता का प्रकट होना, नदी के जल में वीरों के रुधिर का मिल जाना और भारत का दीप-निर्वाण हो जाना इस पुस्तक में ऐसा दिखाया है कि पत्थर का कलेजा भी फट जाता है। मूल्य १≡)

❊ ताँतिया भील ❊

इस प्रसिद्ध डाकू ने मध्यप्रदेश, अहाता बंगाल, राजपूताना, गुजरात आदि में लगभग ४०० डाके डाले हैं। इस इतिहास को देखने से अपूर्व आनंद तथा विस्मय प्राप्त होता है। मूल्य १।)

❊ चौदह रत्न ❊

ऐसा समय फिर हाथ न आयगा। रु० १।) में १२५ पुस्तकें। मूल तथा भाषाटीका सहित।

वेदवेदांगसंग्रह पुस्तक १९ शास्त्र-संग्रह पु० ७ पुराणेतिहास सं० पु० ५ महाविद्या पु० १० गृह-धर्म सं० पु० ६ नित्यकर्मविधान पु० ६ कर्म-कांड सं० पु० ८ ज्योतिष-गणित और फलित पु० ९ वैद्यकशास्त्र पु० २ तंत्र और मंत्र शास्त्र पु० ११ साहित्यशास्त्र पु० १० इतिहास, नाटक पु० १५ उपाख्यान सं० पु० ६। मूल्य १।) डाकव्यय ≡) उप-रोक्त तीनों पुस्तकें एक साथ लेने वाले को डाकव्यय सहित ३ में दी जावेंगी।

मैनेजर सुलभ-मूल्य-प्रकाशक कार्यालय,

(धर्मशाला स्ट्रीट), मुरादाबाद।

आधा दाम! आधा दाम!!

ना पसन्द होने से दाम वापस।

केवल एक महीने के लिये।

हमारा मधुर सुरवाला और मज़बूत एवं खूब-सूरत शटिश-फेक्शन फूट हारमोनियम भारतीय राग रागि-नियों के लिये बड़ा ही उपयोगी है। इतना अच्छा होने पर भी दाम बहुत ही कम है। ग्यारंटी तीन वर्ष। मूल्य सिंगल रीड असली दाम ३८), ४४), ५०), अभी आधा दाम १९), २२), २५), डबल रीड असली दाम ६०), ७०), ८०), अभी आधा दाम ३०) ३५), ४०); हाथ और पैर से बजाने के लिये सिंगल रीड असली दाम ९०) अभी आधा दाम ४५); डबल रीड असली दाम १२०) अभी आधा दाम ६०); आर्डर के साथ ५) रुपया पेशगी भेजना चाहिये। रेलवे स्टेशन इत्यादि साफ़ साफ़ लिखना चाहिये। हिन्दी हार-मोनियम शिक्षा मूल्य १) रु०।

पता—नेशनल हारमोनियम कम्पनी

२० नं० मदनमित्र लेन (S)

कलकत्ता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हर जगह एजेन्टों की ज़रूरत है

बाल उड़ाने का ख़ुशबूदार साबुन इसे कहते हैं (बाल उड़ जायँ फिर पैदा न हों)

रमेश साबुन बिना किसी तरह की तकलीफ़ के बालों को उड़ा कर जिल्द को मुलायम और ऐसी चमकदार कर देता है **मानों बाल यहाँ कभी थेही नहीं।** इसका चन्द रोज़ बरताव रहा तो उस जगह बाल आने ही बन्द हो जायँगे। एक टिकिया का दाम।) तीन टिकियों का बक्स ॥=) एजेन्टों को कम से कम ५) रुपये का माल मँगाने से २५) सैकड़ा कमीशन मिलता है, और वी० पी० पार्सल ख़र्चा ख़रीदार के ज़िम्मे है।

नयनामृत सुरमा नेत्रों की हर प्रकार की बीमारी के लिये अमृत के तुल्य है—एक शीशी ॥)

ब्यौपाररत्नाकर—इसकी प्रसिद्ध २ अख़बारों ने प्रशंसा की है, जिसमें त्रिकालदर्शी अंगूठी, ताम्बूलविहार, कपूर की माला, गन्धक का गिलास, कपूर का कटोरा, पारे का गिलास, विलायती खिज़ाब, चाँदी सोने का मुलम्मा, साबुन, दाद की दवा, रबर की मोहरें, आदि बनाने की सैकड़ों तरकीबें लिखी हैं, सच्चा हुनर हासिल करना है तो सिर्फ़ ॥) का टिकट भेज कर मँगा लीजिये। जल्दी कीजिये, थोड़ी जिल्दें रह गई हैं।

केश-कलप इस खिज़ाब के लगाने से पाँच मिनट में बाल घोर काले भौंरे के मानिन्द और मुलायम हो जाते हैं, जो बाल एक दफ़े काले होजाँयगे वह फिर कभी सफ़ेद नहीं होते—बराबर इस्तेमाल करने के लायक उमदा चीज़ है कीमत १॥) रु०

श्रीराधाविहार हेयर ऑइल, यह अपने ढङ्ग का विचित्र ख़ुशबूदार अनोखा ही तैल है—दिल और दिमाग़ को ताक़त देता हुआ नये फ़ैशन के चेहरे की ख़ूबसूरती बढ़ाता है—इसे ज़रूर मँगाकर इस्तेमाल कीजिये—सचाई का परिचय तो आपको लेना ही है। मूल्य एक शीशी का १) रु० तीन शीशी लेने से पारसल ख़र्चा माफ़।

अग्निसंदीपन चूर्ण, उदर की अनेक बीमारियों को दूर करके भूक बढ़ाता हुआ आदमी को हट्टा कट्टा पट्ठा बनाता है—फ़ायदा न करे तो दाम वापस—एक शीशी का मूल्य ॥) आना।

दद्रु दावानल, हर तरह के दाद के दादा को बग़ैर तकलीफ़ के तगादा कर भगाने की गारंटी रखता है एक शीशी।) तीन शीशी लेने से पार्सल ख़रचा माफ़।

अमृत लहर, इसका परिचय देने की कोई ज़रूरत नहीं है। क्योंकि यह दवा सैकड़ों बीमारियों में अपना तत्काल गुण दिखाती हुई हर जगह आदर पारही है और हमने भी हर एक को फ़ायदा पहुँचाने के लिए इसकी रियायती क़ीमत सिर्फ़ तीन माह के वास्ते ॥) आना करदी है।

तिलस्मी मिठाई, एक शीशी १४ सेर बूरे का काम देती है, चाह, शरबत, दूध, दही, जी चाहे जिसमें डालकर मिठाई का काम लेकर घरख़रच में बख़ूबी किफायत कीजिये एक शीशी का दाम ॥) आना बारह का ५) रु०

जेबी सफरी हुक्के, पानी भर कर जेब में डाल लीजिये, पानी की बूँद भी नहीं गिरेगी, नय और नैचा इसी के साथ है पीने के समय आवाज़ बड़ी कली के माफिक देते हैं घर और मुसाफरी में हर जगह काम लीजिये बड़े उमदा ख़ूबसरत बने हुए हैं पीतल का दाम १॥) २) जरमन सिलवर का दाम २) २॥) ३)

पता—रमेशचन्द्र एन्ड को०

(बी ब्रांच) स्वामीघाट, मथुरा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

RUPEES THREE A YEAR.
STUDENTS—Rs. 2.

The Dawn MAGAZINE

Devoted entirely to
INDIAN CIVILIZATION and CULTURE, HISTORY and ACHIEVEMENTS, ARTS and CRAFTS, INDUSTRIES and EDUCATION.

"High-class and very Popular Monthly."
—observes THE PANJABEE

"Excellent and carefully edited Magazine."
—SAYS THE LEADER.

"Not a second of its kind in India."
—REMARKS THE MUSLIM REVIEW.

"That Most Useful National Organ."
—SAYS THE HINDU OF MADRAS.

Rs THREE a Year
For STUDENTS: Rs. TWO.
Anna Postage for stray Specimen.
Manager—**THE DAWN MAGAZINE,**
P O Box 263=K. B. CALCUTTA

देवदर्शनी जेबीघड़ी
एक पंथ दो काज

क्या आप समय देखने के साथ साथ देवदर्शन भी किया चाहते हैं ? तो हमारी देवदर्शनी जेबी घड़ी मंगाइये—मिनट २ में राम, कृष्ण, शिव, पार्वती आदि तथा महर्षि दयानंद, म० मुंशीराम, म० लेखराम, मु० गुरुदत्त के दर्शन कर जन्म सफल कीजिये—हर घड़ी में पाँच चित्र होते हैं—गारंटी ५ वर्ष। मूल्य केवल ५॥) तीन का १५)

दी स्विज़र लेंड वाच कंपनी, नं० ७, हाथरस।

स्वर्गीय जीवन

अमेरिका के प्रसिद्ध अध्यात्मिक विद्वान राल्फ वाल्डो ट्राइन की अंग्रेज़ी पुस्तक का अनुवाद है। पवित्र शान्त, और सुखमय जीवन कैसे बन सकता है, मानसिक प्रवृत्तियों का शरीर पर और शारीरिक प्रवृत्तियों का मन पर क्या प्रभाव पड़ता है आदि बातों का इस में बड़ा ही हृदयग्राही वर्णन है। प्रत्येक सुखाभिलाषी पुरुष स्त्री को अवश्य पढ़ना चाहिये मूल्य सिर्फ ॥≡) पता—

दुलीचंद सिंघई, चंदावाड़ी, बम्बई, नं० ४

सर्वोत्तम न हो तो चौगुनी क़ीमत फेर देंगे

नक़्क़ालों से **शुद्ध शोधित शिलाजीत** सावधान

यह त्रिदोषनाशक, योगवाही, अग्निदीपक और ख़ून को शुद्ध करके बलिष्ठ बनानेवाली महाशक्तिसञ्चारिणी चिरप्रसिद्ध रसायन है। रासायनिक क्रिया से सूर्य्यताप में तैयार किये जाने से यह बिलकुल सौम्य है। हर एक ऋतु में निःशङ्क सेवन की जाती है। बाल, युवा, वृद्ध, यहाँ तक कि गर्भिणी स्त्री भी सेवन कर सकती है। अनुपान-विधान से सरल तथा जटिल रोगों में शास्त्रकथित गुण दिखाती है। बहुमूत्र ओजक्षय Albumanuria, Debility, and Diabetes को अमोघ शक्ति है। नं० १ का सर्वोत्तम शोधित शिलाजीत १॥) रु०, और नं० २ का ॥।) तोला। नं० ३ का अग्निद्वारा बना हुआ =) तोला। प्रत्येक ४ तोला एक साथ ख़रीदने पर १ तोला बिना मूल्य मिलता है। सैकड़ों प्रशंसापत्र मिले हैं।

Kindly send me four tolas of your world famed "Silajit." I find your "Silajit" pure; and the patients when I tried with it give satisfactory result. With respects.

RAI BAHADUR,
DR. T. JANARDANA SINGH, I.S.M.D.
Choolay, Madras.

पता—

पं० महेशानन्द शर्म्मा।
(नौटियाल)
श्रीबद्रिकाश्रम, पो० नन्दप्रयाग, ज़ि० गढ़वाल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारत सरकार से रजिस्ट्री की हुई।

रजिस्टर्ड] ताक़त-बहार गोलियां [रजिस्टर्ड

यह वही "ताक़त बहार गोलियां" हैं, जिनकी हमारे ग्राहकों को अत्यन्त आवश्यकता थी। मनुष्य चाहे जैसा दुबला पतला कमज़ोर या सुस्त क्यों न हो, उसे पहिले ही दिन दो गोलियों के खाने से शरीर में ताकत मालूम होने लगती है। कुछ दिन सेवन करने से नाताक़ती हमेशा के लिए किनारा कर जाती है। भूख ज्यादा लगती है। दस्त साफ़ होता है। हर समय सुस्ती रहना, पेशाब में जलन या

देखिये ताक़त की गोली की बहार।

शेरों का करता है ये इन्सां शिकार ॥ २ ॥

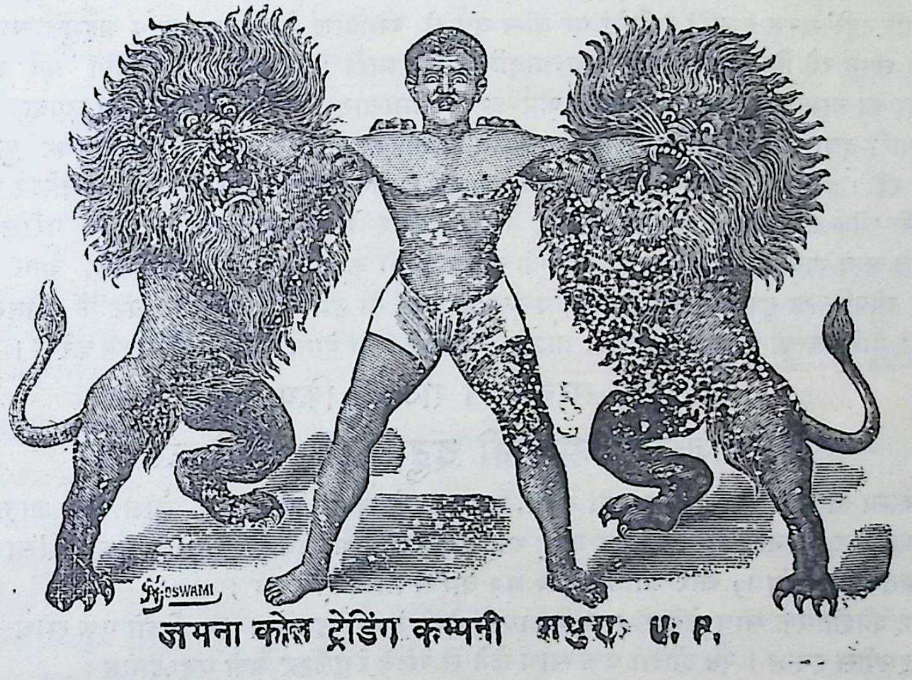

गोली खाकर ताक़त आई बेशुमार।

हो गये ख़ुश रोते थे जा जार जार ॥ १ ॥

सुर्ख़ों का होना, सिरमें चक्करों का आना या दर्द होना, हाथ पैरों में कमजोरी, आंखों में बार बार पानी भर आना, थोड़ा चलने या परिश्रम करने से थकावट मालूम होना, किसी काम में मनका न लगना, चेहरे पर ख़ुश्की या पीलापन होना, शरीर में फुर्ती न होना, इन सबको दूरकर नया वीर्य पैदा करती है। बुढ़ापे में जवानी की सी ताक़त मालूम न हो तो दाम वापिस। जिस समय आप इन गोलियों का सेवन करेंगे, अपने मनोरथ को भली भांति पूरा करके मनमें फूले न समायेंगे। पास के बैठने वाले कहने लगेंगे कि जनाब! आपने क्या चीज़ खाई है कि, जिससे आपके चेहरे पर इस क़दर रौनक़ आ गई? हम को भी बतला दीजिये? तब आपको बड़ी ख़ुशी के साथ यह साफ २ कहना पड़ेगा कि, जनाब! बहुत से लोगों से धोखा उठाकर मथुरा की "जमुना कोल ट्रेडिङ्ग कम्पनी" की "ताकत बहार गोलियें" से फायदा उठाया। और उसे जैसा सुना था उससे भी बढ़कर अधिक गुणकारी पाया। २१ इक्कीस गोलियों की एक शीशी का मूल्य १) एक रुपया। दो शीशी का मूल्य १॥।) एक रुपया बारह आना। ६ शीशी एक साथ लेने से ५) पांच रुपया। १२ शीशी एक साथ लेने से ९ नौ रुपया। डाक महसूल वगैरह जिम्मे ख़रीदार।

मिलने का पता:—

जमुना कोल ट्रेडिंग कम्पनी—मथुरा। (नं० २)

Nepal Sanskrit University, Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृपया इसे ध्यान देकर पढ़िये ।

आजकल विज्ञापन का बाज़ार गर्म है । जिस समाचारपत्र को उठाकर देखते हैं, ताक़त की दवाओं के सैकड़ों विज्ञापन छपे हुए दृष्टिगोचर होते हैं; जिनकी प्रशंसा में दस बीस लाइन की क्या चली कालम के कालम रंगे रहते हैं। लेकिन ! लोगों ने जब वे दवाइयाँ मँगाईं तब टाँयँ ! टाँयँ ! फिस ! फिस ! ! के सिवाय जरा भी ताक़त देखने में न आई। सारांश यह कि, ऐसे धोखेबाज़ों ने झूठे और लम्बे चौड़े विज्ञापन दे देकर अपना काम तो तमाम किया ही; पर सत्य व्यवहार करनेवालों को लोगों की दृष्टि से गिरा दिया। खैर ! अब उन्हीं लोगों को—जो झूठे विज्ञापनदाताओं द्वारा ठगे गये हों और नोटिसी चीज़ें मँगाते मँगाते हैरान हो बैठे हों—इस बात का विश्वास दिलाने के लिये कि "अभी संसार में सत्य व्यवहार करने वाले लोग भी मौजूद हैं, जिन की औषधियों में सच्चा और पूरा प्रभाव है" अपनी नीचे लिखी हुई औषधियाँ—खास कर "ताक़तबहार गोलियाँ" पेश करते हैं, जो सैकड़ों ही नहीं वरन हज़ारों रोगियों पर बीस वर्ष से रामबाण के समान अपना अद्भुत चमत्कार दिखा रही हैं। ध्यान रहे कि, बहुत से चालाक आदमियों ने हमारी "ताक़तबहार गोलियों" की अधिक बिक्री देख दवा का नाम बदलकर और कीमत कम करके समाचार पत्रों मे विज्ञापन तो छपवा दिया पर वे लोग हमारी दवा का ठीक ठीक नुसख़ा न मिलने से ग्राहकों को प्रसन्न न कर सके और फुदक फुदक कर बैठ रहे। हमारा तो कहना है कि "हाथ कंगन को आरसी की क्या ज़रूरत" इसलिए नीचे लिखी हुई किसी चीज़ को मँगाकर हमारा उत्साह बढ़ाइये और हमारे सत्य व्यवहार की परीक्षा कीजिए ! हम अपने सत्य व्यवहार के भरोसे ही आप के साथ इतनी कड़ी प्रतिज्ञा करते हैं कि, अगर हमारे यहाँ की कोई ओषधि या दूसरी वस्तु आपको पसन्द न आवे तो हम उसे चौबीस घंटे के भीतर वापिस ले लेंगे, पर दोनों तरफ़ का डाक महसूल ग्राहकों को नहीं देना होगा यानी हमी सहन करेंगे।

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ

रजिस्टर्ड] असली दद्रुनाशक [रजिस्टर्ड

कैसा ही नया पुराना दाद क्यों न हो, इस दवा के लगाते ही उसका खोज मिट जाता है। किसी प्रकार का कष्ट भी नहीं होता। जिस वक्त आप लगावेंगे तअज्जुब करेंगे। अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है। क़ीमत फ़ी शीशी ।) चार आना। डा० म० वग़ैरः जिम्मे ख़रीदार।

६ शीशी एक साथ लेने से एक विलायती जेबी उस्तरा इनाम। १२ शीशी एक साथ लेने से एक वर्मा टाइमपीस इनाम। २४ शीशी एक साथ लेने से रेलवे रेगुलेटर जेबी घड़ी इनाम।

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ

सुधासमुद्र ।

एक शीशी का मूल्य १।) सवा रुपया। डाक महसूल अलग।

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ

केशबहार तैल ।

मूल्य १) रुपया। डा० व्य० पृथक्।

भारत सरकार से रजिस्ट्री किया हुआ

दंतपुष्पाकर मंजन ।

क़ीमत फी शीशी ॥) आठ आना। डाक महसूल अलग।

नोट—इन ओषधियों के सिवाय हर एक रोग की ओषधि हमारे यहाँ से मिलती है और मथुराजी की हर तरह की चीज़ भी किफ़ायत के साथ भेजी जाती है।

मिलने का पताः—जमुना कोल ट्रेडिंग कम्पनी—मथुरा [नं०२]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक बार आदि से अन्त तक पढ़ जाइए।

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीज़ के नये ग्रन्थ।

यह सीरीज़ थोड़े ही समय में सर्वप्रिय हो गई है। प्रायः सभी पत्र-सम्पादक और लेखक इसकी एक सुर से प्रशंसा कर रहे हैं। काम भी इसका ख़ूब तेज़ी के साथ हो रहा है। इसमें अब तक १० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं जो एक से एक बढ़कर हैं। नीचे लिखे दो ग्रन्थ हाल ही में तैयार हुए हैं:—

चौबे का चिट्ठा—बंगभाषा के अमर लेखक बाबू बंकिमचन्द्र के लिखे हुए कमलाकान्तेर दफ़्र का हिन्दी अनुवाद। हँसी दिल्लगी और मनोरंजन के साथ इसमें देश की सामाजिक, धार्मिक, नैतिक और राजनैतिक बातों की बड़ी ही मर्मभेदी आलोचना है। हिन्दी में तो इसकी जोड़ का निर्दोष परिहासमय किन्तु शिक्षापूर्ण ग्रन्थ है ही नहीं, पर दूसरी भाषाओं में भी इस श्रेणी के बहुत कम ग्रन्थ हैं। शिक्षा के विद्वान् सम्पादक लिखते हैं:—"यह आनन्द देने में उपन्यासों से कम नहीं है, यत्र तत्र ऐसी गंभीर बातें लिखी हुई हैं जिन्हें पढ़ कर बड़े बड़े विद्वान् चकित हो जाते हैं। यदि इसकी बिक्री के लिए यह नोटिस दें कि पुस्तक पाठक को नापसन्द हो, तो दूना दाम लौटा देंगे तो अनुचित न होगा।" सद्धर्मप्रचारक के सम्पादक अपनी विस्तृत समालोचना के भीतर लिखते हैं—"गद्यमय होने पर भी यह एक तरह का गंभीर हास्यरसपूर्ण काव्य है। 'चाँदनी में' और 'वसन्त का कोकिल' नामक निबन्ध गद्य-कविता के उत्कृष्ट नमूने हैं। बंकिम उपन्यास-लेखक था, कवि था, दार्शनिक था और विनोदपूर्ण लेखों में भी सिद्धहस्त था। इस ग्रन्थ में वह अपने सभी रूपों में प्रकट हुआ है—" ग्रन्थ बहुत ही सुन्दरता से छपा है। मूल्य ग्यारह आने।

मितव्ययिता—(गृहप्रबन्धशास्त्र)—प्रसिद्ध अँगरेज़ लेखक डा० सेमुएल स्माइल्स के 'थिरिफ़्ट' नामक अँगरेज़ी ग्रन्थ का उत्तम सरल और उपयोगी भावानुवाद। इस फ़िज़ूलख़र्ची और विलासिता के ज़माने में यह ग्रन्थ प्रत्येक भारतवासी के नित्य स्वाध्याय करने योग्य है। प्रत्येक घर को सुखी सभ्य सदाचारी और सुव्यवस्थित बनाने के लिए यह पुस्तक अच्छे गुरु का काम देगी। इसमें सामाजिक, धार्मिक, नैतिक और राष्ट्रीय आदि सभी दृष्टियों से धन और उसके उपयोग का विचार किया गया है। इसकी शिक्षा स्वावलम्बन की नीव और शील की जड़ है। अँगरेज़ी में अब तक इसकी कई लाख कापियाँ बिक चुकी हैं। अनुवाद भी इसका सभी प्रधान प्रधान भाषाओं में हो चुका है। छपाई, काग़ज़, जिल्द आदि सभी दर्शनीय हैं। मूल्य चौदह आने।

पूर्व प्रकाशित ग्रन्थ।

१ **स्वाधीनता**—पण्डित महावीरप्रसादजी द्विवेदी कृत। मूल्य २)

२ **मिल की जीवनी**—स्वाधीनता के मूललेखक का जीवनचरित। मूल्य ।)

३ **प्रतिभा**— बहुत ही सुन्दर और भावपूर्ण उपन्यास। मूल्य १।)

४ **फूलों का गुच्छा**—सुन्दर सुन्दर ग्यारह गल्पों का संग्रह। मूल्य ॥=)

५ **आँख की किरकिरी**—जगत्प्रसिद्ध डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'चोखेरबाली' नामक बँगला उपन्यास का हिन्दी अनुवाद। हिन्दी में मनुष्य के आन्तरिक भावों के जीते जागते चित्र खींचने वाला, सुन्दर, सरस और मनोमोहक ग्रन्थ। मूल्य १॥।)

(आगे का भी पृष्ठ देखिए)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ।

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'स्वदेश' और 'शिक्षा' नामक दो ग्रन्थों के अनुवाद छप रहे हैं। अगस्त के अन्त तक दोनों तैयार हो जावेंगे। और भी कई अच्छे अच्छे ग्रन्थों के प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है।

स्थायी ग्राहकों को सब ग्रन्थ पौनी क़ीमत में दिये जाते हैं।

स्थायी ग्राहकों को या तो प्रवेश फी का आठ आना पहले ही भेज देना चाहिए, या पहला ग्रन्थ आठ आना अधिक के वेल्यूपेबिल से मंगा लेना चाहिए। पूर्व प्रकाशित ग्रन्थों का लेना न लेना ग्राहकों की मर्ज़ी पर है, परन्तु आगे प्रकाशित होने वाले सब ग्रन्थ लेने होंगे। तैयार होते ही प्रत्येक ग्रन्थ पौनी क़ीमत के वी. पी. से भेज दिया जाता है। प्रतिवर्ष लगभग चार या पाँच रुपये के ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं। यदि अधिक हों, तो ग्राहक उनके लेने से इनकार कर सकते हैं।

प्रत्येक हिन्दीहितैषी को इस सीरीज़ का स्थायी ग्राहक बनकर हमारे उत्साह को बढ़ाना चाहिए जिससे हम इनसे भी अच्छे और उपयोगी ग्रन्थों को प्रकाशित करने का साहस कर सकें। ५०० स्थायी ग्राहक होते ही इसमें स्वामी विवेकानन्द, रामतीर्थ, बंकिम, रवीन्द्र, द्विजेन्द्रलालराय, मिल, स्पेन्सर, सेमुएल स्माइल्स, आदि नामी नामी ग्रन्थकारों के ग्रन्थ निकालना शुरू कर दिया जायगा।

पता—मैनेजर, हिन्दीग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, हीराबाग़, पो० गिरगाँव—बम्बई।

ONE

PAYING COURSE.

"ACCOUNTANCY" course is taught by correspondence. No condition of age or University Certificate. No study by heart. Grand reduction in fees. Course is most useful for service and promotion. Candidates enrolling daily. Candidates are prepared for London Chamber of Commerce examination. School is recognised by Government. Do not lose this golden opportunity, but write to-day for full particulars to :—

C. C. Education Office,

POONA CITY.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा राममोहन राय।

इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नं० ४२७

सरस्वती

सचित्र मासिक पत्रिका।

भाग १५, खण्ड २] १ अगस्त १९१४—श्रावणशुक्ल १०, १९७१। [संख्या २, पूर्ण संख्या १७६

अनुरोध।

(एक बन्द कमल के प्रति)

कालिङ्गड़ा।

अब तो आँखें खोलो प्यारे।
पूर्व दिशा अब अरुण हुई है,
प्रकृति देवि पट बदल रही है,
यम ने तम की बाँह गही है,
छिप कर भागे तारे ॥ १ ॥

प्रमुदित नलिनी बिहँस खिली है,
प्रिय समीर से सुरभि मिली है,
अति शोभामय वनस्थली है,
अलिगण हैं गुञ्जारे ॥ २ ॥

नव-जीवन-सञ्चार हुआ है,
ऐक्य-भाव-विस्तार हुआ है,
सुखमय सब संसार हुआ है,
जागे साथी सारे ॥ ३ ॥

उषा-देवि के दर्शन पाकर,
हुए प्रफुल्लित सभी चराचर,
तुम क्यों सोये शीश झुकाकर,
सुधिबुधि सभी बिसारे ॥ ४ ॥
अब तो आँखें खोलो प्यारे।

बदरीनाथ भट्ट।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतवर्ष में देवताओं की प्रतिमाओं का पूजन कब से चला?

धार्मिक समाजों और सभाओं में कभी कभी यह बात सुनी जाती है कि भारतवर्ष में मूर्त्तिपूजा जैन अथवा बौद्ध सम्प्रदाय की बदौलत ही चली है। उसके पूर्व इसका अभाव था। आज हम जिज्ञासा के तौर पर इसी बात पर विचार करना चाहते हैं, जिससे सरस्वती के पाठकों में से कोई विद्वान् सत्यासत्य का निर्णय करने की कृपा करें। धार्मिक पक्षपात से हमारा कुछ भी प्रयोजन नहीं। यह विचार हम एक अधिकरणिक अथवा जज की दृष्टि से किया चाहते हैं। हम किसी विशेष सम्प्रदाय के अनुयायी नहीं होना चाहते।

मनुष्य ने पाषाणादि की मूर्त्तियों को पूजना कैसे सीखा, इससे भी हमारा कुछ सम्बन्ध नहीं। हमें तो केवल यही जानने की इच्छा है कि क्या उक्त दो सम्प्रदायों ने ही, पहले पहल, इस देश में देव-प्रतिमा का निर्माण और पूजन आरम्भ किया या कराया, और, क्या उनसे पहले यहाँ देवताओं की मूर्त्तियाँ न बनाई जाती थीं? अथवा दूसरे शब्दों में हमारे प्रश्न का यह रूप हो सकता है कि प्राचीन भारत में प्रतिमा-पूजन का प्रमाण कहाँ तक मिलता है? यद्यपि हम लोग प्रायः पतञ्जलि महाराज के

"शब्दप्रमाणका वयं यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्"

कथन के अनुयायी हैं, तथापि आज कल प्रत्यक्ष प्रमाण की ही प्रधानता है। अतः हम भी प्रत्यक्ष ही से अपने विषय का प्रारम्भ करते हैं।

जहाँ तक हमें मालूम है सबसे पुरानी मूर्त्ति या देवप्रतिमा, जिसका निर्माण-काल निश्चित है, मथुरा के अजायबघर में रक्खी है। वह मथुरा से १४ मील दूर परखम नामक गाँव से, कई साल हुए, लाई गई थी। वहाँ उसे लोग नगर-देवता मान कर उसका पूजन करते थे। विस्तार में वह आठ .फुट आठ इंच ऊँची और दो .फुट आठ इंच चौड़ी है। उसके जानु और भुजायें टूटी हुई हैं; चेहरा भी घिस गया है। उसके कपड़े बड़े विलक्षण हैं, जो प्रायः किसी भी Indo-Scythian समय की मूर्त्तियों पर नहीं पाये जाते। वास्तव में यह किसी पुरुष या यक्ष की (शायद कुबेर की) प्रतिमा है। इसकी पीठ के ऊपरी भाग पर, तीन पङ्क्तियों का, एक लेख है। यद्यपि उसमें कोई संवत् या तिथि नहीं, तथापि तत्कालीन ब्राह्मी अक्षरों के सादृश्य से वह महाराज अशोक (मौर्य) के समय का, अर्थात् ईसा से प्रायः २५० वर्ष पहले का, लेख मालूम होता है। जहाँ तक पढ़ा गया है, वह लेख इस प्रकार है—

"...नि भदपुगरिना [क]...[ग] अ-
पि...कुनि [क] तेवासिना [गोमितकेना]
कटा"

अर्थात् भदपुगरिन ने बनाया...। कुनिक का शिष्य गोमितक...।

ऐसी ही एक मूर्ति रियासत ग्वालियर में, भिलसा के पास, बेसनगर में मिली थी। अब वह कलकत्ते के अजायबघर में है। वह किसी स्त्री अथवा यक्षिणी की बड़ी विशाल प्रतिमा है। उसकी बनावट परखम की मूर्त्ति की समकालीनता की सूचक है।

इस देश में इनसे अधिक पुरानी मूर्त्तियाँ अभी तक नहीं मिलीं। यद्यपि ये देव-प्रतिमायें नहीं हैं, क्योंकि यक्षों की गणना देवयोनि में तो है, पर देवताओं में नहीं, तथापि ये उस समयके प्रतिमा-पूजन का साक्ष्य अवश्य देती हैं। इसके अनन्तर बुद्ध भगवान् और जैन तीर्थङ्करों ही की प्रतिमायें, जो औरों की अपेक्षा प्राचीनतर हैं, देखने में आती हैं। यह निश्चित है कि पहले पहल महात्मा बुद्ध (गौतम) की मूर्त्ति न बनाई जाती थी। बुद्ध की मूर्त्ति बनाने से प्रायः 'परहेज़' ही किया जाता था। सत्कारार्थ कोई विशेष चिह्न बना लिया जाता था—जैसे 'चरण-कमल'। इसका एकमात्र कारण यही है कि पूर्वकालीन बौद्धों ने बुद्ध के निर्वाण को यथार्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूप में माना था। निर्वाण हुए देह की प्रतिमा वे भला क्या बनाते ? शनैः शनैः जब महायान सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ तब गौतम बुद्ध देवतारूप में पूजे जाने लगे और उनकी मूर्त्तियाँ बनने लगीं। यही कारण है कि महाराज अशोक के समय की और उसके आगे पीछे वाली शताब्दी की भी गौतम बुद्ध की कोई प्रतिमा नहीं मिलती। उस समय तो 'धातु' ही की पूजा प्रधान थी। धातु पारिभाषिक शब्द है। उसका वाच्यार्थ प्रायः शरीर की भस्म या हड्डी आदि है। धातु किसी चैत्य में स्थापित किया जाता था और चैत्य ही की पूजा से धातु की पूजा हो जाती थी। बौद्धों का सबसे पहला चैत्य या स्तूप (समाधि या क़बर), जिसका हमें पता है, नेपाल-प्रान्त के पिप्राहवा नामक स्थान में है। वह हिन्दुस्तान का प्राचीनतम मन्दिर या मकान कहा जाता है। उसका निर्माणकाल प्रायः निश्चित है। उसकी जाँच, १८९८ ईसवी में, डब्लू० सी० प्यपी साहब ने की थी। जो विचित्र चीज़ें वहाँ मिली थीं वे प्रायः कलकत्ते के अजायबघर में रक्खी हैं; कुछ लखनऊ के अजायबघर में भी हैं। वे प्रत्यक्ष दिखला रही हैं कि भारतवर्ष में ईसामसीह से चार पाँच सौ वर्ष पहले कैसे कैसे कारीगर थे। यह स्तूप भगवान् गौतम बुद्ध के निर्वाण के कुछ ही समय पीछे, अर्थात् मोटे तौर पर ईसा से ४५० वर्ष पूर्व, बनाया गया था।

इसी प्रकार जैनधर्मावलम्बियोंके भी एक स्तूप का पता मिला है, जो पिप्राहवा के स्तूप से कम पुराना नहीं प्रतीत होता। तथापि इस जैन-स्तूप के निर्माणकाल का ठीक ठीक अनुमान नहीं किया जा सका। लखनऊ के अजायबघर में एक शिलालेख है, जिससे इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यह स्तूप भी शायद उतना ही पुराना हो जितना कि पिप्राहवा का है। यह लेख कुशान-समय की एक मूर्त्ति की पीठ पर है। इस लेख का अन्तिम अंश इस प्रकार है:—

"...प्रतिमा वोड्वे थूपे देवनिर्मिते..."

इसमें 'देवनिर्मित' विशेषण से यह अनुमान होता है कि दीर्घकाल व्यतीत होने के कारण लेख खोदने वाला मूर्त्ति के निर्म्माता का नाम भूल गया है। उस समय उसके निर्म्माता का नाम किसी को मालूम ही न होगा।

इनके बाद साँची का प्रसिद्ध स्तूप है, जो बहुत प्राचीन है और जो शायद अशोक के पहले ही बना होगा।

ऊपर के लेख का तात्पर्य यह है कि ईसवी अथवा विक्रमी संवत् के तीन चार सौ वर्ष पहले की बनी हुई कोई देवप्रतिमा नहीं मिली और न किसी ऐसे मन्दिर या मकान ही का हाल मालूम हुआ जिसमें देवप्रतिमा उस समय स्थापित की गई हो। स्तूपों या चैत्यों में उस समय मूर्त्तियाँ स्थापित न होती थीं।

हिन्दू-धर्म या पौराणिक सम्प्रदाय का सबसे प्राचीन मन्दिर, जिसका पता मिला है, रामनगर में है। वह संयुक्त प्रान्त के बरेली ज़िले के अन्तर्गत है। पूर्वकाल में वह अहिच्छत्र कहा जाता था। यह एक शिव-मन्दिर था, जो ईसा की प्रथम शताब्दी के आसपास बना होगा। इसी तरह अति प्राचीन हिन्दू-प्रतिमा, जिसका मुझे पता मिला है, एक पञ्चमुखी शिवलिङ्ग की प्रतिमा है। वह ज़िला इलाहाबाद के बीठा नामक गाँव से प्राप्त हुई है। यह प्रतिमा ईसा से प्रायः १०० वर्ष पहले बनी होगी। यह अनुमान इस मूर्त्ति पर उत्कीर्ण लेख से होता है। उसमें है:—

१ खजहुति पुतानं लिङ्गो पतिठापितो

२ वसेठु पूत्रेण नागशिरिणा...

अर्थात्—खजहुति पुत्रों के द्वारा दान किये गये लिङ्ग की स्थापना वसेठु-पुत्र नागशिरि ने की। इस लेख के अक्षर उसी समय के, अर्थात् कोई दो हज़ार वर्ष पहले के, हैं। यह मूर्त्ति भी लखनऊ के अजायबघर में रक्खी हुई है।

पाण्डुपुत्र अर्जुन के प्रपौत्र, जनमेजय महाराज, के बनवाये एक शिव-मन्दिर का लेख तो मिला है;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परन्तु वह कूट-लेख या जाली सिद्ध हुआ है। इन सब बातों से यही ज्ञात हुआ कि शायद प्रथम शताब्दी में ही मूर्त्तिपूजन शुरू हुआ हो। उसी समय में बुद्ध-प्रतिमाओं का ख़ूब प्रचार पाया जाता है। इसी से बहुत विद्वानों का ख़याल है कि भारतवासियों ने केवल बुद्ध-मूर्त्ति-निर्माण ही यूनानियों या यवनों से नहीं सीखा, किन्तु तक्षणकला का विकास भी यहाँ यूनानी संसर्ग के प्रभाव से ही हुआ। कुछ लोगों ने यहाँ तक अनुमान लड़ा डाला है कि धनाढ्य बौद्धों ने यवन शिल्पकारों को अपने यहाँ नौकर रख कर उनसे मूर्त्तियाँ बनवाईं। इन महात्माओं के इस अनुमान का यह आशय तो कदापि नहीं जान पड़ता कि भारतवर्ष में तक्षणकला का अभाव ही था। क्योंकि जानवरों की जो मूर्त्तियाँ यहाँ के कारीगरों ने बनाई थीं उनको देख कर तो इन्हें भी चकित होना पड़ा है। ये मूर्त्तियाँ यहाँ के कारीगरों के अतुलित वैचक्षण्य की अद्यावधि साक्षीभूत हैं।

यद्यपि यह कहना हास्यकर होगा कि सारे भारतवर्ष की छानबीन हो गई है और ऊपर निर्दिष्ट प्रतिमाओं से अधिक प्राचीन देव-प्रतिमाओं का यहाँ अत्यन्ताभाव ही है, तथापि प्रत्यक्षवादी तो यही कहेंगे कि यदि होतीं तो एक आध तो अवश्य निकल आती। अतः यह अनुमान ठीक सा प्रतीत होता है कि प्रतिमापूजन बौद्ध और जैन सम्प्रदायों के संसर्ग से ही चला होगा।

तो क्या इस निष्कर्ष को हम अबाध्य रूप में स्वीकार कर लें? मैं तो इस क्लिष्ट प्रश्न का उत्तर 'नहीं' में दूँगा। इस उत्तर की पुष्टि में, पाठकों के विचारार्थ, मैं ये प्रमाण पेश करता हूँ:—

(१) इसमें सन्देह नहीं कि हमें अभी तक कोई ऐसी प्रतिमा नहीं मिली जिसे हम निश्चयपूर्वक महाराज अशोक के समय से प्राचीन कह सकें। इसके सिवा प्रत्यक्ष में हम जैन और बौद्ध धर्म के साथ ही साथ मूर्त्तिपूजन का प्रचार देखते हैं, यह भी निःसन्देह है। परन्तु कुछ बातें ऐसी भी हैं जो इसका साक्ष्य देती हैं कि अशोक के समय से पहले भी मूर्त्तिपूजा हमारे देश में अवश्य प्रचलित थी। इनमें से पहले तो वैष्णव और शैव धर्म की सत्ता का विचार करना चाहिए। इसका प्रमाण ईसा मसीह के सौ दो सौ वर्ष पूर्व मिलता है। शिवपूजन के अस्तित्व का प्रमाण तो ऊपर दिया ही जा चुका है। विष्णु-पूजा की सूचना भी सरस्वती के पाठकों को, कुछ समय पूर्व, एक लेख में मिल चुकी है। ईसा के १४० वर्ष पहले महाराजा अंतल्किदस के समय में राजा चण्डदास ने तक्षशिला-निवासी डियन के पुत्र परम भावगत हेलियो डोरस द्वारा वासुदेव श्रीकृष्ण भगवान् के प्रीत्यर्थ एक गरुड़ध्वज स्थापित किया था। वह रियासत ग्वालियर में, भिलसा के पास, बेसनगर के डूह पर खड़ा है और वैष्णव धर्म के बहुत प्राचीन होने का स्पष्ट प्रमाण है। यह प्रमाण काटा नहीं जा सकता। यवन-राजदूत डियन के पुत्र हेलिओ डोरस का विशेषण परम भागवत, जो इस स्तम्भ के लेख में दिया गया है, बड़े महत्त्व का है। यवनों और अर्द्ध-यवनों तक के ऊपर इस धर्म के प्रभाव की गवाही मिलती है!

(२) पाणिनि के समय में प्रतिमायें बिका करती थीं। इसका प्रमाण हमें उनके अप्रतिम ग्रन्थ अष्टाध्यायी से मिलता है। ये प्रतिमायें या प्रतिकृतियाँ केवल पशुओं ही की न बनती थीं, किन्तु देवताओं की भी बनती थीं। इनका व्यापार होता था। कुछ मूर्त्तियाँ बेचने के लिए और कुछ जीविका के लिए बनाई जाती थीं। उनके नाम में ही भेद होता था। बिकने वाली मूर्त्तियों के नाम में 'कन्' प्रत्यय रहता था, अन्यत्र इस प्रत्यय का अभाव होता था। अष्टा०, अ० ५, पा० ३, सू० ९६—१०० देखिए। यथा:—

(क) इवे प्रतिकृतौ
(ख) संज्ञायाञ्च
(ग) लुम्मनुष्ये
(घ) जीविकार्थे चापण्ये
(च) देवपथादिभ्यश्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

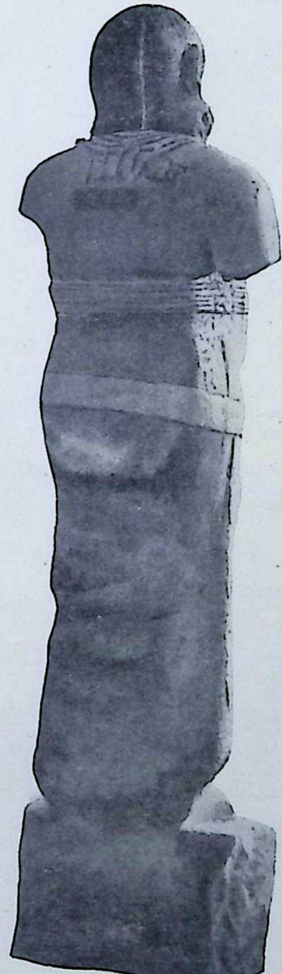

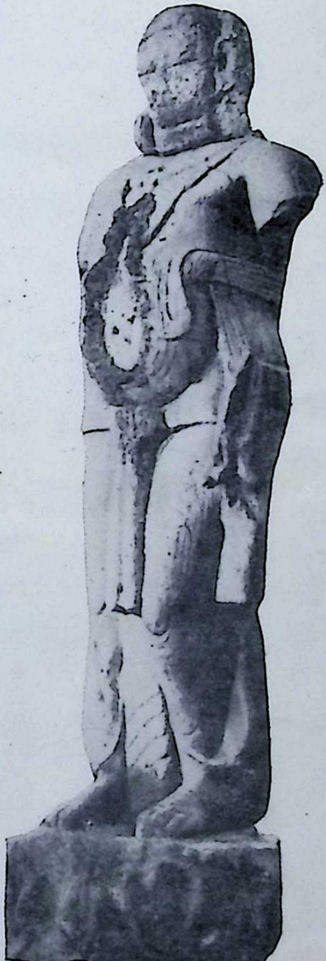

परख में प्राप्त प्राचीन मूर्त्ति ।

पृष्ठ-भाग

सम्मुख-भाग

इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बीठा में प्राप्त पञ्चमुखी शिवलिङ्ग की प्रतिमा ।

इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नं० ४२७

इन सूत्रों से जो अश्वकः, रामः, शिवः, इत्यादि शब्द सिद्ध किये गये हैं उनसे स्पष्टतापूर्वक प्रमाणित है कि ईसा के प्रायः ३०० वर्ष पूर्व देवताओं की प्रतिमायें बनाई जाती थीं।

पतञ्जलि ने इन सूत्रों के भाष्य में शिव आदि देवताओं की प्रतिमाओं का उल्लेख किया है। अब यदि आप 'देवता' शब्द को मनुष्यवाचक समझ लें तो भी हमारी कोई क्षति नहीं।

(३) पाणिनि के पहले देव-प्रतिमाओं के पूजन के साक्षी यूनानी इतिहास-लेखक हैं। कर्टिस (Curtias) लिखता है कि महाराज पोरुस (Porus) जब सिकन्दर (Alexander the Great) का सामना करने के लिए मैदान में निकले तब वे हरक्युलिस (Herculis Simulacrum) की मूर्त्ति को अपनी चतुरङ्ग-सेना के आगे किये हुए थे। मानों उसी को वे अपना नेता माने हुए थे। यह मूर्त्ति शायद सूर्य भगवान् की थी, जिनकी पूजा के साक्षी मेगास्थनीज़ (Megasthnese) जैसे प्रसिद्ध पुरुष हैं। इसके सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं कि सिकन्दर ने भारत पर कब आक्रमण किया और मेगास्थनीज़ यहाँ कब आये। मोटे तौर पर यह सिद्ध हो गया कि ईसा से ३२५-२६ या ३५० वर्ष और अशोक से १०० वर्ष पहले देव-प्रतिमा-पूजन हिन्दुस्तान में प्रचलित था और मूर्त्तियाँ बनती थीं।

यद्यपि यह समय भी बुद्ध और जिन के समय की अपेक्षा अर्वाचीन है, तथापि उस समय इन धर्मों का इतना प्रभाव या प्रचार न था कि लोग इनके अनुयायी होते या इनका अनुकरण करते। यदि किसी ने किया भी होगा तो भी उस समय इनकी कोई प्रतिमा न बनी थी। फिर अनुकरण कोई किसका करता? सुतरां स्पष्टतापूर्वक विदित हो गया कि इन सम्प्रदायों के पूर्व एवं यवनों और अर्द्ध-यवनों के प्रभाव के पहले इस देश में तक्षणकला के पण्डित विद्यमान थे और देवताओं की, मनुष्यों की एवं अन्य जीवादिक की मूर्त्तियाँ बनाई जाती थीं।

अनुमान यह है कि ये मूर्त्तियाँ प्रायः दारुमयी होती होंगी। इसी लिए शायद वे नष्ट-भ्रष्ट हो गई हैं। दारुमयी मूर्त्तियों का होना यास्काचार्य के ग्रन्थ से सूचित होता है। निरुक्त, अध्याय ४, पाद २, खण्ड ७ के:—

कनीनकेव विद्रधे नवे द्रुपदे अर्भके—

मन्त्र के पदों का विवेचन देखिए।

विस्तार-भय से मैं अब अपने लेख को, एक ही बात और लिख कर, समाप्त करता हूँ। उसे लिखते मुझे कुछ सङ्कोच अवश्य होता है; परन्तु लाचारी है, लिखना ही पड़ेगा। तथापि मैं उसे जिज्ञासा के भाव से ही लिखता हूँ। मेरा कोई आग्रह या हठधर्म्मी नहीं। यदि यह बात ठीक है तो मूर्त्ति-पूजा और मूर्त्तियों का बनना या बनाना या तक्षण-कला का अस्तित्व इस देश में हज़ारों वर्ष पहले मानना पड़ेगा। इस देश में मूर्त्तियां और मूर्त्ति-पूजा का अस्तित्व उस ज़माने में भी था जब पूर्वोक्त दो सम्प्रदायों का कहना ही क्या है, यूनानी महाशयों का भी नामोनिशान न था। नीचे का वेदमन्त्र देखिए:—

क इमं दशभिर्ममेन्द्रं क्रीणाति धेनुभिः।
यदा वृत्राणि जङ्घनदथैनं मे पुनर्ददत्॥

(ऋग्वेद, मण्डल ४, सूक्त २६, मन्त्र १०)

इस ऋचा में इन्द्र की प्रतिमा का स्पष्ट उल्लेख प्रतीत होता है। मन्त्र का अर्थ स्पष्ट है; लिखने की आवश्यकता नहीं।

इन सब प्रमाणों से तो यही सिद्ध होता है कि प्रतिमापूजन एवं निर्माण इस देश में अति प्राचीन समय से चला आता है—उस समय से जब कि जैनों या बौद्धों का अस्तित्व भी न था।

हीरानन्द शास्त्री।

तू ही तू।

तू ही तू है विश्व में रामरूप गुण-धाम।
है तेरी ही सुरभि से सुरभित यह आराम॥
आंखें उठती हैं जिस ओर तू ही तू देखा जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दे दे कर निज दिव्याभास,
करके हास-विलास-विकास,
रहता सदा हमारे पास,
फिर भी हाथ नहीं आता है।
आंखें उठती हैं जिस ओर तू ही तू देखा जाता है॥
कुछ कुछ प्रकट और कुछ गुप्त,
पूरा प्रकट न पूरा लुप्त,
रह कर जागृत और न सुप्त,
अद्भुत लीला दिखलाता है॥
आंखें उठती हैं जिस ओर तू ही तू देखा जाता है॥
नीचे, ऊपर, भूतल, व्योम,
ज्योतिर्मय तारे, रवि, सोम,
मारुत की गति लोम-विलोम,
ऋतुओं का क्रम मन भाता है॥
आंखें उठती हैं जिस ओर तू ही तू देखा जाता है॥
है तुझ में ही सारी सृष्टि,
खोजे कहां तुझे फिर दृष्टि?
करता है तू करुणा वृष्टि;
आत्मा स्वयं शान्ति पाता है।
आंखें उठती हैं जिस ओर तू ही तू देखा जाता है॥
[वैदिक-सर्वस्व]

मैथिलीशरण गुप्त।

सौर मास और शकाब्द के प्रचलन की आवश्यकता।

अपने देश की वर्णमाला और भाषा अपने देश के लिए बहुत हितकारिणी है। वह देश को गैरवान्वित कर सकती है। उसी तरह अपने देश की मिती और संवत् का प्रचलन भी देश को उपकृत तथा गैरवान्वित कर सकता है। वर्त्तमान समय में स्वदेशी वर्णमाला तथा भाषा के सार्वजनिक प्रचार का ख़ूब यत्न हो रहा है। परन्तु शोक का स्थल है कि स्वदेशी मिती और संवत् का प्रचलन दिन पर दिन कम होता जाता है; अँगरेज़ी तारीख़ तथा सन् का प्रचार दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है।

संयुक्त-प्रान्त, बिहार तथा मध्यप्रदेश में चान्द्र मास और संवत् का प्रचलन था और अब भी एक दम उठ नहीं गया। परन्तु चान्द्र वर्ष किसी साल में १२ और किसी में १३ महीनों के होते हैं। किसी महीने में कोई तिथि अन्तर्हित हो जाती है और किसी में एक दिन में दो तिथियाँ हो जाती हैं। चैत्रवदी १५ को संवत् समाप्त होता है और चैत्रसुदी १ को नये संवत् का प्रारम्भ होता है। अर्थात् चैत्र का आधा महीना एक संवत् में और आधा दूसरे में पड़ता है। इन कारणों से लोगों को काम-काज में बहुत अड़चनें पड़ती हैं। उन्हें मिटाने के लिए ही इस समय अँगरेज़ी तारीख़ और सन् का प्रचलन हो पड़ा है। अँगरेज़ी तारीख़, महीने और सन् अङ्कों से भी सूचित किये जा सकते हैं। इससे लेखकों को तारीख़, महीना और सन् शीघ्रतापूर्वक लिखने का बहुत सुभीता होता है। चान्द्र मास में यह गुण नहीं। यही अन्यतर मुख्य कारण है कि हमारी मिती और संवत् का प्रचलन दिन पर दिन उठता जाता है और अँगरेज़ी महीने तथा सन् का प्रचलन बढ़ता जाता है। इस समय अँगरेज़ी तारीख़, महीने और सन् का प्रचार इतने ज़ोरों पर है कि हिन्दी-भाषा के समाचार-पत्र और मासिक पुस्तकें भी अँगरेज़ी महीनों के हिसाब से अपना नवीन वर्ष प्रारम्भ करती हैं। आर्थिक लेन-देन भी इन्हीं महीनों के हिसाब से होता है। हिन्दी की तो बात ही क्या, संस्कृत के व्याख्यानों और पुस्तकों पर भी अँगरेज़ी महीनों ने अपना अधिकार जमा लिया है, जो कि हमारे राष्ट्रीय गैारव पर धब्बा लगाता है।

इस आपत्ति से बचने का यह उपाय हो सकता है कि सैार मास और शकाब्द का प्रचलन किया जाय। अँगरेज़ी महीनों के सदृश सैार मास के भी १२ महीनों का एक वर्ष होता है; १३ महीनों का कभी नहीं होता। सैार मास और वर्ष सूर्य्य की चाल पर निर्द्धारित हैं;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् एक राशि से दूसरी राशि पर्यन्त सूर्य के पहुँचने तक समय का जो व्यवधान होता है वही सौर मास है; और सौर मास के प्रत्येक अहोरात्र उसकी मिती या तारीख़ हैं। अतएव अँगरेज़ी तारीख़ों के सदृश किसी भी सौर मिती का लोप या आधिक्य नहीं होता। ऐसी ही १२ राशियों में परिभ्रमण करते समय प्रत्येक राशि के संक्रमण से १२ सौर मास निर्द्धारित हुए हैं। यही कारण है जो सौर वर्ष सदा बारह ही महीनों का होता है।

महाराष्ट्र-राजवंश में शालिवाहन नाम के एक हिन्दू-सम्राट् हो चुके हैं। उन्होंने शकों को परास्त किया था। शकाब्द इसी विजय का स्मारक है। इसे उन्होंने प्रचलित किया था। परन्तु इसका प्रचलन कारोबार में नहीं होता। शकाब्द, सौर मास की चैत्र-संक्रान्ति के दिन समाप्त होता है और सौर मास के वैशाख महीने की पहली मिती को नये शकाब्द का प्रारम्भ होता है। इससे मेरा प्रस्ताव यह है कि सौर मास और शकाब्द का प्रचलन सर्वसाधारण में करना और उन्हें राष्ट्रीय मिती तथा सन् स्वीकार करना देश को लाभ पहुँचावेगा। इस शकाब्द का सम्बन्ध ज्योतिष के साथ है। अतएव यह विज्ञान-सम्मत भी है। अँगरेज़ी तारीख़ों की तरह सौर मिती, मास और शकाब्द भी केवल अङ्कों द्वारा ही सूचित किये जा सकते हैं। इस हेतु यत्न करने से इनका प्रचलन बढ़ सकता है।

अँगरेज़ी तारीख, महीने और सन् का सम्बन्ध ज्योतिष से नहीं। ईसा की मृत्यु के समय से सन् का प्रारम्भ हुआ है। देव-देवियों के नाम से जनवरी, मार्च, मई, और जून महीने; एक उत्सव के नाम से फ़रवरी; वसन्त ऋतु के कारण अपरेल; राजाओं के नाम से जूलाई और अगष्ट; तथा गिनती के हिसाब से अवशिष्ट महीनों के नाम हैं—अर्थात् सात से सप्टेम्बर, आठ से अक्टोबर, नौ से नवंबर, और दस से दिसम्बर निर्द्धारित हुए हैं। विज्ञान से इनका कुछ भी सम्बन्ध नहीं। इससे मैं सर्व-साधारण की, विशेषतः प्रसिद्ध प्रसिद्ध संस्थाओं के सञ्चालकों की, दृष्टि इस ओर आकर्षित करने के लिए प्रार्थना करता हूँ। वे विचार करें कि विज्ञान-सम्मत सौर मास और शकाब्द का प्रचलन देश-हितकर होगा अथवा अँगरेज़ी तारीख और सन् का प्रचलन।

अयोध्याप्रसाद वर्म्मा।

अक्षर-विज्ञान।*

(समालोचना)

हिन्दी-लेखकों पर बहुधा यह दोष लगाया जाता है कि वे अनुवाद करने ही में बड़े दक्ष हैं; आश्रय और आधार के भरोसे ही वे लेखक और ग्रन्थकार बनना चाहते हैं। यह आरोप निर्मूल नहीं। तथापि सभी अनुवादकों को, केवल अनुवादक होने ही के कारण, तुच्छ-दृष्टि से देखना अन्याय है। अनुवाद यदि किसी अच्छे उपयोगी और समयोचित ग्रन्थ का है तो ऐसा एक ही अनुवाद अनेक छोटी छोटी नई पुस्तकों की अपेक्षा अधिक आदर की चीज़ है। फिर, एक बात यह भी है। दुनिया में नयापन—नूतनत्व—ऐसी चीज़ नहीं जो गली गली मारी मारी फिरती हो। नूतन ग्रन्थों और लेखों में भी और लोगों के विचार बहुधा पाये ही जाते हैं। ऐसा कौन है जिसने अपने पूर्ववर्त्ती ग्रन्थकारों के विचारों से लाभ न उठाया हो और जिसके ग्रन्थों पर पुराने लेखकों के विचारों की छाया न पड़ी हो? फिर, हिन्दी का साहित्य अभी बाल्यदशा ही में है। कुछ ही समय से दस पांच कृत-विद्य जनों की दृष्टि इस ओर खिँची है। अतएव सभी अनु-वादों को कुदृष्टि से देखना और आश्रय तथा आधार शब्दों पर नाक-भौंह चढ़ाना युक्ति-सङ्गत नहीं।

हर्ष की बात है, ऐसी दशा में भी, आज, हमें एक ऐसी पुस्तक का परिचय पाठकों से कराना है जिसका अधि-

* लेखक, पण्डित रघुनन्दन शर्म्मा; प्रकाशक, सूरजी वल्लभदास एँड कम्पनी, बड़गादी, मुम्बई; पृष्ठ-संख्या १५ × १३६; मूल्य १ रुपया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कांश बिलकुल ही नया है; जिसके लिखने में लेखक ने अपने दिमाग़ से बहुत कुछ काम लिया है; जिसमें जगह जगह पर लेखक की चिन्ताशीलता का प्रमाण मिलता है; जिसको लिखने के पहले लेखक को भिन्न भिन्न भाषाओं की अनेकानेक पुस्तकों का परिशीलन करना पड़ा है। अक्षर-विज्ञान नामक पुस्तक ऐसी ही है। ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखने के कारण लेखक महाशय को बहुत बहुत साधुवाद। आपकी लिखी और कोई पुस्तक या और कोई लेख आज तक हमारे देखने में नहीं आया। यह प्रस्तुत पुस्तक आपकी पहली ही रचना मालूम होती है, और, इस पहली ही रचना में आपने ख़ूब विचार-स्वातन्त्र्य और स्वाधीन चिन्ता से काम लिया है। अतएव आपकी इस पुस्तक का महत्त्व और भी बढ़ गया है। इसमें क्या है, सो लेखक ही के मुख से सुन लीजिए:—

"इस पुस्तक में तीन प्रकरणों में बताया गया है कि सृष्टि का रचने वाला परमेश्वर अवश्य है। आदि में मनुष्य का बाप मनुष्य ही था, बन्दर नहीं। सारी सृष्टि एक ही स्थान अर्थात् हिमालय पर ही पैदा हुई थी। मूल-पुरुष भाषा बोलते ही पैदा हुए थे और जो शब्द बोलते थे वे अर्थ और ज्ञान से युक्त होते थे। दूसरे प्रकरण में दिखाया गया है कि वह आदि-ज्ञान वेद और आदि-भाषा वैदिक थी। इसकी पुष्टि में बतलाया गया है कि ज्योतिष, वैद्यक, नीति, धर्म, व्यापार और राज्यप्रणाली पृथ्वी भर में भारत-वर्ष और वेद से ही फैली है तथा संस्कृत, ज़ेन्द, फ़ारसी, अँगरेज़ी, अरबी, स्वाहिली, चीना, जापानी और द्राविड़ी आदि संसार की प्रधान प्रधान भाषायें, जो अपनी अनेक शाखाओं के साथ दुनिया भर में फैली हैं, वेद-भाषा से ही निकली हैं। सब भाषाओं के शब्द देकर यह विषय प्रमाणित किया गया है कि वेद-भाषा मनगढ़न्त नहीं है। उसके धातु सृष्टि-नियम के अनुकूल और एक एक अक्षर विज्ञान के अनुसार अपना अपना अर्थ रखता है। अतः अर्थ के अनुरूप ही उन अक्षरों का रूप भी बताया गया था और ऋषि लोग वैदिक काल में भी लिखना जानते थे"।

यही पुस्तक-प्रणेता महाशय की पुस्तक का सार अंश है। इन्हीं बातों का विस्तार आपने पुस्तक में किया है। विषय-प्रतिपादन में आपने तर्क और युक्ति से अच्छा काम लिया है। अपने कथन की पुष्टि में आपने प्रमाण भी दिये हैं। आपकी युक्तियां सबल हों या निर्बल और आपके प्रमाण वर्ण्य विषय के यथेष्ट परिपोषक हों या न हों, यह बात ही और है। कहने का मतलब केवल इतना ही है कि आपने जो कुछ लिखा है सो समझ बूझ कर, विचारपूर्वक, लिखा है और प्रतिपादन की इतिश्री आपने अपने ही कथन पर नहीं कर दी। आपके इस गुण और इस लेखन-शैली का हम हृदय से अभिनन्दन करते हैं।

पुस्तक का प्रधान विषय यद्यपि अक्षर-विज्ञान है तथापि पुस्तक का अधिकांश मनुष्य की आदिम सृष्टि और भाषा-विज्ञान के वर्णन में ही ख़र्च हो गया है। इससे मूल-विषय का सङ्कोच हो गया है। वही विषय प्रधान था। अतएव वह कुछ और विस्तार के साथ वर्णन किया जाता तो अच्छा होता।

बेचारे डारविन के कीर्ति-चन्द्र पर खग्रास ग्रहण लगने के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। प्रोफ़ेसर बेटसन, प्रोफ़ेसर मेंडल और मैडम हेनरी आदि के युक्ति-समूह राहु बन कर उसका ग्रास करने के इरादे में थे ही कि अक्षर-विज्ञान के लेखक के युक्तिवाद भी उनकी सहायता के लिए तैयार होकर निकल पड़े। दुःख इतना ही है कि आपकी पुस्तक अँगरेज़ी में नहीं। इस कारण डारविन के प्रतिपक्षी शायद उससे फ़ायदा न उठा सकें।

लेखक महाशय ने विकासवाद के खण्डन में जिन युक्तियों का प्रयोग किया है उनके परीक्षण की न तो हममें योग्यता है और न हमें उस काम के लिए अवकाश ही है। अतएव हम केवल आपके निष्कर्षों का उल्लेख ही करके चुप रहेंगे। आपकी उक्तियां नीचे लिखी जाती हैं:—

विकासवाद के सिद्धान्त हैं:—(१) "आपही आप, धीरे धीरे, माता-पिता के अतिरिक्त भी कुछ गुण एकत्रित करते करते कुछ काल में एक नये रूप की नई जाति बन जाती है अथवा (२) पृथक् पृथक् दो श्रेणियों के मिश्रण से मिश्रयोनिज जाति बन जाती है"।

पुस्तककार ने इन दोनों बातों का खण्डन करते हुए इनके सिद्धान्तों की जगह जगह पर दिल्लगी उड़ाई है। पिछली बात, अर्थात् मिश्रयोनिज जाति, के विषय में लिखा है कि "क़लमी आम में आम के बीज नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होते" और "घोड़े-गधे से उत्पन्न हुए खचर से वंश नहीं चलता।" अतएव गोरिला आदि बन्दरों से मनुष्य की सृष्टि होना असम्भव है। क्योंकि न्यायशास्त्र के अनुसार—"समानप्रसवात्मिका जातिः"—अर्थात् जिसमें समान-प्रसव हो वही जाति है। मनुष्य और बन्दर के संयोग से गर्भ धारणा नहीं होती। इस कारण यह सिद्धान्त ग़लत है। आपकी दी हुई युक्तियों का विचार इस शास्त्र के जानने वाले करें। हम केवल क़लमी आम की प्रसव-शक्ति के विषय में ही एक बात कह कर आगे बढ़ेंगे। कोई ३० वर्ष हुए हम हुशङ्गाबाद के रेलवे स्टेशन पर थे। स्टेशन के पास ही एक बँगले के आंगन में हमने बम्बई के 'हापुस' नामक क़लमी आम की एक गुठली गाड़ दी। उससे पौधा निकला। उसका पेड़ हो गया। आज से कोई १२—२० वर्ष पूर्व हम बम्बई से झांसी आ रहे थे। मार्ग में हुशङ्गाबाद मिला। वहाँ हमने स्टेशन-मास्टर, दामोदर विनायक चापेकर, से अपने लगाये हुए आम का हाल पूछा। उन्होंने कहा—"वह पेड़ अब फल देने लगा है"। अक्षर-विज्ञान के लेखक महाशय यदि हुशङ्गाबाद से कभी गुज़रें तो कृपा करके स्टेशनमास्टर से इस पेड़ की बाबत ज़रूर पूछपाछ करें। वह अब तक बना है या नहीं, और है तो फल देता है या नहीं? एक क़लमी आम की गुठली से उत्पन्न हुआ पौधा हमने अपने जन्म-ग्राम में भी लगाया था। वह जल्द बढ़ा और फल देने लगा। पर, आज कोई चार साल का अरसा हुआ, जड़ में दीमक लग जाने से, वह सूख गया। इन उदाहरणों से हमारा अभिप्राय आपकी युक्तियों को काटना नहीं है। हमने सिर्फ़ अपना तजरुबा लिख दिया है। सम्भव है, हमारे ये तजरुबे अपवाद-रूप हों। इनकी सङ्गति लगाना पुस्तककार का काम है। उनका कथन है:—

"वंशपरम्परा के प्रतिकूल ज़रा भी आकार-प्रकार में परिवर्तन होने से वंश नहीं चलता। तब विकासवाद में, क्रम क्रम उन्नति वाले धोखे के विश्वास में, कुछ भी दम नहीं। × × × × बन्दर और गोरेला (वनमनुष्य) की बनावट में इतना अन्तर नहीं है जितना गोरेला और मनुष्य में अन्तर है। और यह अन्तर ऐसा है जिसको विज्ञान कभी भी एक न होने देगा। × × × × अतः यह निश्चय है—निर्विवाद है, निःसंशय है—कि आदि-सृष्टि में मनुष्य इसी प्रकार हुआ जिस प्रकार का अब है, और होना ही चाहिए था"।

रसायनशास्त्र के आचार्यों ने प्राणियों के ख़ून की परीक्षा का एक नया ढँग निकाला है। उससे उन्होंने यह निश्चय किया है कि प्राणियों के ख़ून की कणिकाओं का आकार जुदा जुदा होता है। आप कुत्ता, बिल्ली, हिरन, बन्दर, मनुष्य, सांप आदि के ख़ून उनको दीजिए। वे बता देंगे कि कौन ख़ून किस जाति के प्राणी का है। इनकी परीक्षाओं से सिद्ध हो गया है कि मनुष्य और बन्दर के ख़ून की कणिकाओं का आकार प्रायः एक ही सा होता है। अतएव इन्होंने यह सिद्धान्त निश्चित किया है कि मनुष्य बन्दर ही की कोटि का प्राणी है। इससे डारविन के सिद्धान्त की तो पुष्टि हुई; पर अनेक पशु-विद्याविशारदों के सिद्धान्तों को धक्का पहुँचा। कितनी ही पशु-पक्षियों के जाति-निर्देश में भूलें निकलीं। यथा—अब तक विद्वानों की समझ थी कि गिनी फाउल नामक चिड़िया मुरग़ी की जाति की है; पर वह यथार्थ में है शुतुरमुर्ग़ की जाति की। इसी तरह भालू को ये लोग, कुत्ते और गीदड़ की तरह, स्थलचर समझते थे, पर यथार्थ में है वह जलचर—सील आदि—प्राणियों की जाति का। यह रासायनिक परीक्षा अब सर्वमान्य समझी जाती है। इससे इस पुस्तक के लेखक के सिद्धान्त का खण्डन और डारविन के सिद्धान्त का मण्डन होता है। अतएव लेखक महाशय को चाहिए कि पुस्तक के अगले संस्करण में इस रुधिर-विषयक सिद्धान्त के खण्डन की भी चेष्टा करें।

जैसा ऊपर, एक जगह पर, लिखा जा चुका है, आपकी राय है कि—"आदि-सृष्टि हिमालय पर ही हुई और वहीं से मनुष्य सारी पृथिवी में गये। यह ख़याल ग़लत है कि मनुष्य पृथिवी के हर भाग में पैदा हुए"। इसलिए कि—

"मनुष्यों की आदि सृष्टि गर्म, मोतदिल और पृथिवी के सबसे ऊँचे स्थान में" ही हो सकती थी। और ऐसा—"स्थान हिमालय ही है, जो शीत और उष्णता को मिलाता और पृथिवी भर में सबसे ऊँचा है"।

हिमालय पर आदि सृष्टि करके परमेश्वर ने—

"हमारे बुज़ुर्गों को शुरू में सब आवश्यक और प्रावेशिक तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म विषयों को बतला दिया, जिसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हम बुनियादी इलहाम कहते हैं × × × मूल-पुरुषों को सूक्ष्म ज्ञान सिखाने और वह ज्ञान औरों में फैलाने के लिए उनको परमात्मा ने भाषा अवश्य दी"।

क्योंकि—

"जिस प्रकार बिना भाषा के सूक्ष्म ज्ञान नहीं सिखलाया जा सकता उसी प्रकार बिना किसी भाषा के भाषा भी तो नहीं सिखलाई जा सकती"।

लेखक महाशय का कहना है कि ईश्वर ने हिमालय पर मनुष्यों की आदि-सृष्टि करके उन्हें सूक्ष्म से भी सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्ति का साधन दे दिया और उन्हें भाषा भी सिखला दी।

पुस्तककार का मत है कि—"ज्ञान की सीमा बहुत लम्बी-चौड़ी है, तथापि हम ज्ञान के सबसे बड़े छः विभाग करते हैं"। वे विभाग, कुछ कुछ ग्रन्थकार ही के शब्दों में, ये हैं:—

(१) ज्योतिष और भूगोल-शास्त्र।

(२) वैद्यक-शास्त्र।

(३) राजनीति और समाजनीति।

(४) धर्मशास्त्र।

(५) रङ्ग और मणि-मुक्ता तथा नौकाशास्त्र।

(६) जीव, ब्रह्म, प्रकृति, पुनर्जन्म, स्वर्ग, नर्क (नरक), मोक्ष आदि और योगादि गुप्त क्रियाओं और शक्तियों का शास्त्र।

यह सारा शास्त्रज्ञान ईश्वर ही की कृपा से आर्यों के आदिम पूर्वजों को मिला और उन्हीं के जन्मस्थान से अन्यत्र फैला। आपका मत है कि "उक्त समस्त विद्यायें आर्यों ही की 'आविष्कार' (?) की हुई हैं"। इससे- - "यह बात निर्विवाद है कि जगत् भर की भाषा आर्यों ही की भाषा का अपभ्रंश है, क्योंकि विद्या बिना भाषा अर्थात् ज्ञान (अर्थ) बिना शब्द के दूर देश जा ही नहीं सकता"।

यह ज्ञान-राशि प्राचीन ऋषियों ने वेदों से प्राप्त की। "अतएव समस्त ज्ञान का उद्गम वेद है"।

यह ज्ञान अन्य देशों में किस तरह पहुँचा, इसका उत्तर अक्षर-विज्ञान के कर्त्ता इस तरह देते हैं:—

"आर्य्यावर्त्त के ज्ञान के साथ अर्थात् वेदों के ज्ञान के साथ, वेदों की भाषा में ही बन्द होकर वह दुनिया में फैला और आर्य्यावर्त्त की ही भाषा सारे संसार में फैली है"।

इसके आगे आपने अरबी, फ़ारसी ज़ेन्द, अँगरेज़ी, चीना, जापानी और द्राविड़ आदि भाषाओं के शब्दों की सूचियाँ देकर यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि हज़ारों वर्ष बीत जाने पर भी इन भाषाओं में अब भी सैकड़ों शब्द ऐसे वर्त्तमान हैं जो वैदिक संस्कृत-भाषा ही के अपभ्रंश हैं। मतलब यह कि सृष्टि के आदि में वैदिक भाषा ही प्रचलित थी। वही धीरे धीरे अन्य देशों में भी फैल गई और कालान्तर में अपभ्रष्ट होकर उसने नये नये रूप धारण कर लिये। यह सब तो ठीक। इसके प्रमाण भी आपने बहुत दिये। पर एक बात के प्रमाण आपने काफ़ी नहीं दिये। आपकी जो यह सम्मति है कि ईश्वर ही की कृपा से, वेदों के द्वारा, हमारे पूर्वजों को समस्त ज्ञान-राशि का ज्ञान हुआ, सो इसकी पुष्टि में भी दस बीस प्रमाण आपको देने थे। आपकी इस विषय की उक्तियाँ सुनकर हमें हरविलास महाशय की "हिन्दू सुपीरियारिटी" और कांगड़ी के गुरुकुल से निकले हुए भारतवर्ष के एक इतिहास का स्मरण हो आया। साथ ही वेदों को ज्ञानकाण्ड का आकर बताने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके अनुयायियों की भी बात याद आ गई। हमारी क्षुद्र बुद्धि में ऐसी ऐसी बे-रोक और सर्व-व्यापिनी उक्तियों से बड़ी हानि हो सकती है। इससे वेदों का यथार्थ भाव न समझने वाले महाशयों की बुद्धि और विचार के भ्रम से आच्छन्न हो जाने का डर रहता है। हम वेदों के अच्छे ज्ञाता नहीं। परन्तु अक्षर-विज्ञान के लेखक उनके पूर्ण ज्ञाता मालूम होते हैं। उनकी उक्तियों से यही मालूम होता है। अतएव उनको उचित था कि वेदों में समस्त ज्ञान भरे रहने के वे प्रमाण देते। प्रमाण-द्वारा उन्हें सिद्ध करना था कि अमुक वेद के अमुक मन्त्र में यह ज्ञान है, और अमुक में यह। उदाहरण के लिए "अग्निमीळे पुरोहितं"—ऋग्वेद के इस पहले ही मन्त्र को देकर उन्हें बतलाना चाहिए था कि इसके द्वारा अमुक विद्या या शास्त्र के अमुक अंश के ज्ञान का उल्लेख है। ऐसा करने ही से आपके कथन पर समझदार आदमियों की श्रद्धा होने की सम्भावना थी। इस विज्ञान के ज़माने में—जब सैकड़ों-हज़ारों प्रकार के नये नये ज्ञानों और विज्ञानों का आविष्कार हो रहा है—कथन-मात्र से संशयालु लोगों को विश्वास नहीं हो सकता कि वेदों के मन्त्ररूपी सन्दूकों में सारे ज्ञान और विज्ञान बन्द पड़े हैं। लेखक महाशय की राय है कि सृष्टि के आरम्भ में, हमारे सबसे पहले पूर्वजों को, वेदों की भाषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी सिखलाकर ईश्वर ने उन्हें पैदा किया। परन्तु कृष्णयजुर्वेद (का० ६, प्र० ४) में—

" वाग् वै पराची अव्याकृता अवदत् "—

इत्यादि लिखा है। टीकाकारों के मत से इससे तो यह अर्थ निकलता है कि पुरानी वाणी अव्याकृत अर्थात् अव्यक्त थी। इन्द्र आदि के द्वारा उसका धीरे धीरे विकाश हुआ। मतलब यह कि आदि में लोगों को सार्थक वाणी या शब्द बोलना आता ही न था। अतएव लेखक को वेद के इन वचनों की भी सङ्गति लगानी चाहिए।

भाषा के सम्बन्ध में लेखक महाशय ने अपने विचारों का सार, पुस्तक के दूसरे प्रकरण के अन्त में, इस प्रकार दिया है:—

" वेद-भाषा मनुष्य-कृत नहीं है, क्योंकि मनुष्य-कृत वस्तु कृत्रिम होती है। वह नेचुरल अर्थात् स्वाभाविक नहीं होती। किन्तु वेद-भाषा स्वाभाविक अर्थात् सृष्टि-क्रमानुकूल है। अतः वह मनुष्य-कृत नहीं है और न किसी का अपभ्रंश अथवा शाखा है। जो मनुष्य-कृत नहीं है वह ईश्वर-कृत है, अतः वेद-भाषा आदि-सृष्टि में ईश्वरदत्त वैज्ञानिक मूल भाषा है "।

सम्भव है, आपका यह सब कथन ठीक हो। सम्भव है, वेदों की भाषा ईश्वर ही की दी या बनाई हुई हो और साथ ही वह वैज्ञानिक भी हो। परन्तु ऊपर के उद्धृतांश में कहे गये आपके न्याय या अनुमान-वाक्य और उनका निगमन सुन कर न्यायशास्त्री ज़रूर विस्मित होंगे। गङ्गा हमारे सामने से बही चली जा रही है; वह मनुष्य-कृत नहीं। अतएव ईश्वर-कृत है! हमारे पड़ोस में सैकड़ों बीघे ऊसर ज़मीन पड़ी है। वह मनुष्य-कृत नहीं। अतएव ईश्वर-कृत है! आपका तर्क और उसका निगमन इसी कोटि का है।

पुस्तक के तीसरे प्रकरण में लेखक महाशय ने लिखा है:—

" वेद-भाषा स्वाभाविक (क़ुदरती) है। उसका एक एक शब्द वैज्ञानिक रीति से बनाया गया है। हर एक शब्द जिन अक्षरों से बना है वे स्वयं विज्ञानमय और प्रत्येक अपना अपना स्वाभाविक (क़ुदरती) अर्थ रखने वाले हैं। इस बात का प्रमाण हमें दो प्रकार से मिलता है। एक तो प्रत्येक अक्षर के अर्थ से, दूसरे उन अक्षरों को लिखने के लिए जो साङ्केतिक चिन्ह बनाये गये हैं उनकी सूरतों और बनावटों से "।

इसके बाद आपने लिखा है कि भारत के प्राचीन निवासियों को लिपि-ज्ञान लाखों वर्षों से था। सूर्य्य सिद्धान्त के—

"कल्पादस्माच्च मनवः षड् व्यतीताः ससन्धयः" आदि दो श्लोक उद्धृत करके आपने इस सिद्धान्त के बनने का समय इक्कीस लाख पैंसठ हज़ार वर्ष पूर्व बतलाया है !!! फिर आपने यह सम्मति दी है कि यहाँ की लिपि यहीं आविष्कृत हुई थी। कई वर्ष पूर्व, "बार्हस्पत्य" जी ने अपने एक लेख में देवनागरी लिपि की परिणामदर्शक वर्णमाला का एक नक़शा सरस्वती में प्रकाशित कराया था। इसी नक़शे को अक्षर-विज्ञान के कर्त्ता ने अपनी पुस्तक में देकर हमारी वर्त्तमान वर्णमाला के रूपान्तर दिखाये हैं।

पुस्तक-प्रणेता महोदय की राय है कि हमारी लिपि की उद्भावना का कारण ज्योतिषशास्त्र है। इस शास्त्र के साध्यों को सिद्ध करने के लिए तीन प्रकार के चिह्नों की आवश्यकता होती है—संख्या-सम्बन्धी, दिक्सम्बन्धी और संज्ञा-सम्बन्धी।

इन तीनों चिह्नों का नाम अङ्क, रेखा और बीज पड़ा। एक, दो आदि संख्यायें सूचित कराने वाले चिह्नों का नाम अङ्क; ऊपर, नीचे, सीधे, टेढ़े, गोल, त्रिकोण सूचित करानेवाले चिह्नों का नाम रेखा; और जिसको अङ्क तथा रेखा में बताया जाता है उस मैं, तुम, सूर्य्य, चन्द्र आदि के चिह्नों का नाम बीज है। × × × × संसार में जितनी संज्ञा (संज्ञायें) हैं, बीजाक्षरों से लिखी जाती हैं। तात्पर्य्य यह कि लिपि की उत्पत्ति का कारण ज्योतिष है"।

" यद्यपि मूल-लिपि के असली रूप अब नहीं मिलते, किन्तु उनके अस्थिपञ्जरों से मूल-रूप का अनुसन्धान हो सकता है। अनुसन्धान करने के लिए अक्षरों के साथ ही पैदा होने वाले अङ्क और रेखा (यें) हमें सुगम रास्ता बता रहे (रही) हैं, उसी मार्ग से हम उनके असली रूप तक पहुँच सकते हैं "।

इसके आगे लेखक ने अपने कल्पित बीजों, अङ्कों और रेखाओं के मूल-चिह्नों के चित्र दिये हैं, जिनका फ़ोटो यहाँ पर तद्वत् प्रकाशित किया जाता है।

देवनागरी अक्षरों के सम्बन्ध में इस पुस्तक के प्रणेता का वक्तव्य उन्हीं के मुँह से सुनिए:—

" एक एक परमाणु से पृथ्वी बनी है। अतः पृथ्वी में वही गुण हैं जो परमाणुओं में थे। भाषा-रूप पृथ्वी भी अक्षर-रूप परमाणु से बनी है। अक्षर शब्द के उस टुकड़े को कहते हैं जिसका फिर टुकड़ा न हो सके × × × × ×

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषा उत्पन्न होने के पूर्व उसके कारणरूप अक्षर आकाश में विद्यमान थे। क्योंकि आकाश अक्षरों (शब्दों) का कारण है। अक्षरों के ही योग से धातु और धातुओं से शब्द और वाक्य बनते हैं। इससे ज्ञात होता है कि ये सार्थक हैं"।

"आकाश का गुण शब्द है, जो अकाररूप से नित्य व्याप्त रहता है, किन्तु ऊँच नीच भाव से उसके सात भाग हैं, जिन्हें स्वर (अर्थात् स रि ग म प ध नी) कहते हैं। उसी शब्द के स्थान-प्रयत्न-भेद से १६ विभाग और हैं, जिनको अक्षर कहते हैं। इन्हीं १६ के सङ्कर-संयोग से ६२ या ६३ या ६४ अथवा और अनेक अक्षर बन जाते हैं। यही १६ अपने विकृतरूप से संसार भर में व्याप्त पाये जाते हैं। × × × × × जितना शब्द-समूह है, चाहे प्राणियों की भाषा में हो या वाह्यध्वनि में, सब मूल-अक्षरों के अन्तर्गत है। कोई भी शब्द तोड़ो और जोड़ो, उन्हीं मूल अक्षरों को पाओगे। बस उनके ही संयम से, सृष्टि-नियम के अनुसार, विज्ञान के अनुसार, समस्त शब्दों का क़ुदरती ज्ञान प्राप्त होगा"।

"बच्चे मा को 'मा' और पानी को 'पा' आदि कहते हैं। इन शब्दों का जब विज्ञान द्वारा अर्थ जांचा जाता है तो 'माता' और 'पानी' ही होता है"।

अक्षरों का कभी नाश नहीं होता। वे आकाश में व्याप्त रहते हैं। वे विज्ञानमय हैं। उनका ज्ञान, सृष्टि के आदि में, हमारे पूर्व पुरुषों को ईश्वर की कृपा से ही हो गया। यह सब तो हुआ। परन्तु 'मा' का वैज्ञानिक अर्थ माता ही होता है और 'पा' का पानी ही, इसका विवेचन भी तो करना था। लेखक को यह बात प्रमाणपूर्वक सिद्ध करके दिखानी थी। परन्तु आपने नहीं सिद्ध की। यदि आपका कथन ठीक है तो हमारे बच्चों की तरह अँगरेज़ों, चीनियों, जापानियों और अरबवालों के बच्चे भी क्या आपके कल्पित अर्थों में 'मा' और 'पा' का प्रयोग करते हैं ? यदि नहीं, तो इस व्यभिचार का कारण क्या ? विज्ञान तो सब देशों और सब जातियों के लिए एक ही रूप में रहता है। फिर यदि आपके बतलाये हुए नियम में कहीं विपरीत-भाव देख पड़े तो उसका कारण क्या ? लेखक ने अक्षरार्थ और धात्वर्थ के जो थोड़े से नमूने पुस्तकान्त में दिये हैं उनमें पा—का अर्थ 'रक्षा करना' और मा—का 'मापना' है। पानी से बच्चे की रक्षा होती है, इससे यदि उसका वैज्ञानिक उच्चारण 'पा' माना जाय तो दूध के विषय में लेखक की क्या राय है ? जन्मोत्तर वर्ष डेढ़ वर्ष तक तो बच्चे की रक्षा पानी से कम, दूध से ही अधिक होती है। फिर यदि मा—का अर्थ 'मापना' है तो यह अर्थ माता में किस तरह घटित हो सकता है ? अस्तु। अब अक्षरों के बीजों के विषय में लेखक महाशय का तर्कवाद सुनिए—

"अ, इस ध्वनि के बोलने के वक्त जिह्वा सम और मुख चारों ओर से एकसमान खुला हुआ रहता है। मुख-मार्ग से अकाररूपी ध्वनि मूल तालू से लेकर बाहर तक आ ३ ...... करती हुई '।' इस आकार की होकर निकलती है। यह चिह्न अकार शब्द (वर्ण ?) का निर्भ्रान्त रूप है"।

इसी से अपनी बीज-माला में लेखक महाशय ने अकार का पूर्वोक्त ही रूप रक्खा है। यहाँ पर प्रश्न यह है कि ध्वनियों के आकार-विशेष का ज्ञान आपको हुआ कैसे ? यह आपने जाना कैसे कि अ-कार के उच्चारण की ध्वनि का रूप वैसा ही होता है जैसा आपने समझा है ? किस नियम से अथवा किस यन्त्र की सहायता से आपको उसके आकार या रूप का ज्ञान हुआ ? विज्ञान सदा सच्चा होता है। उसके नियम निर्दिष्ट होते हैं। वे जांचे जा सकते हैं। आपने स्वरों और व्यञ्जनों के ये जो टेढ़े मेढ़े बीज बनाये हैं उनकी सत्यता की जाँच कैसे की जाय ? आपने संख्या-सूचक १ का बीज तो ०। बताया, २ का = क्यों ? २ का बीज ॥ क्यों न माना जाय ? इसी तरह और भी समझिए।

इस अक्षर-विज्ञान नामक पुस्तक के तीसरे ही प्रकरण में पुस्तक के प्रधान विषय का वर्णन है। परन्तु इसी विषय के विवेचन का सङ्कोच कर दिया गया है। जो विषय गौण हैं उनके प्रतिपादन में अकारण ही विस्तार किया गया है। लेखक महाशय को प्रधान विषय के विवेचन में कमी न करना था। ख़ैर, कमी की थी तो अपने कथन की पुष्टि में कुछ न्यायसङ्गत युक्तियाँ और प्रमाण तो अवश्य ही दे देने थे। इन बातों के अभाव में आपके अक्षर-विषयक वक्तव्य बहुत ही निर्बल हो गये हैं। उनका स्वीकार करने में हृदय गवाही नहीं देता। आपकी युक्तियों से अधिक बलवती तो बाबू जगन्मोहन वर्म्मा की युक्तियां है, जिनके अशोक-लिपि-विषयक लेख बहुत समय से सरस्वती में निकल रहे हैं। लेखक महाशय की उक्तियों से तो बहुत लोगों को श्रीयुत श्याम-शास्त्रीजी की उक्तियां ही विशेष मनोग्राह्य मालूम होंगी। इस स्पष्टोक्ति के लिए, आशा है, लेखक हमें क्षमा करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

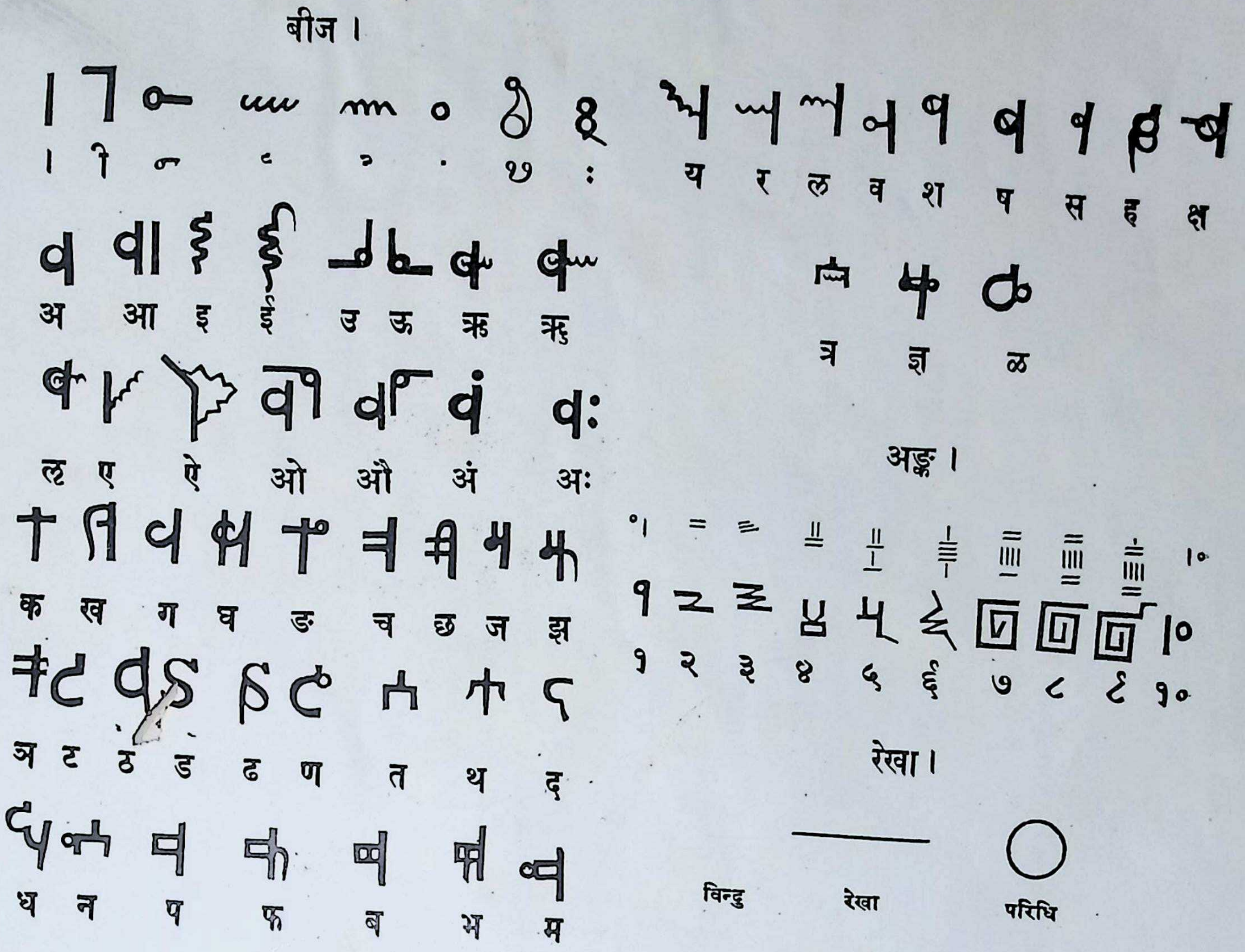

अक्षरविज्ञान-सम्बन्धी एक चित्र।

इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

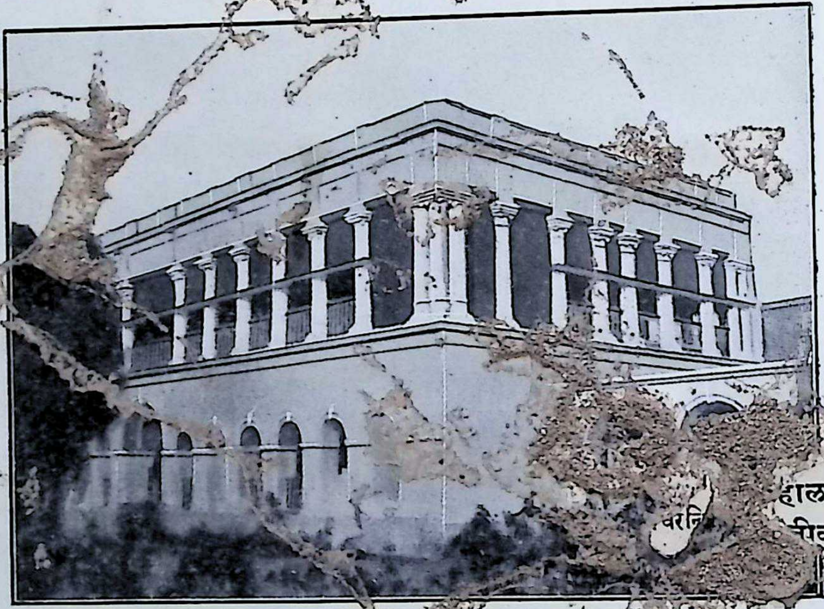

खुदा[illegible] बांकीपुर।

इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि अक्षर-विज्ञान के कर्त्ता ने अपने विषय का विशेष मनन किया है। उनकी विद्याभिरुचि और गवेषणा-शक्ति सर्वथा प्रशंसनीय है। उन्होंने यह पुस्तक लिख कर अपनी योग्यता और चिन्ताशीलता का अच्छा परिचय दिया है। इस कारण हम साधुवाद से आपका पुनर्वार अभिनन्दन करते हैं। ह[illegible] प्रार्थना है कि देवनागरी की उत्पत्ति और विकास का सविशेष [illegible] रखनेवाले विद्वान् आपकी पुस्तक को मनोनिवेश-पूर्वक पढ़ें और आपकी [illegible] पर विचार करके अपनी सम्मति प्रकट करने की कृपा करें।

.खुदाबख्श-लाइब्रेरी।

बाँ[illegible]कीपुर में [illegible] पुस्तकाल[illegible] है। उसका नाम है खुदाबख्श-लाइब्रेरी। १९०३ ईसवी तक [illegible]से बहुत कम [illegible] [illegible]न्तु पूर्वोक्त [illegible]र्ज़न ने उसका मला[illegible] [illegible]ट के [illegible] लेख सुत का उत्के[illegible] [illegible]सन सूर्योद[illegible] देख कल्ज[illegible] [illegible] का [illegible] [illegible]ाग अपनी आँखों देख[illegible] [illegible] कोई चीज़ दिखा देता है [illegible] [illegible]ा बता देता तब हम भी उसकी क़दर कर[illegible] हैं। ला[illegible] कर्ज़न की बदौलत ही हम लोगों ने [illegible] पुस्त[illegible] को पहचाना। अब तो इसका नाम दे[illegible]देश[illegible] [illegible] गया है। इस पुस्तकालय में [illegible] पुस्तकें—हस्तलिखित—ऐसी भी हैं जो अन्य[illegible] नहीं। लन्दन, बर्लिन, पेरिस, न्यूयार्क [illegible] पिटर्सबर्ग में भी उनकी कापियाँ नहीं।

गत एप्रिल में बाँकीपुर के "एक्सप्रेस" [illegible] अँगरेज़ी भाषा के समाचार-पत्र ने अपना एक [illegible] अङ्क निकाला। उसमें इस पुस्तकालय प[illegible] सचित्र लेख है। उसी से लेकर, कुछ बातें [illegible] पुस्तकों के सम्बन्ध की, नीचे लिखी जाती हैं।

इसमें जो पुस्तकें हैं वे .खुदाबख्श नामक एक पुस्तक-प्रेमी विद्वान् की एकत्र की हुई हैं। उनका चित्र और संक्षिप्त चरित सरस्वती में निकल चुका है। उनको पुस्तकें एकत्र करने का व्यसन सा था। मरते द[illegible] तक उन्होंने दूर दूर से पुस्तकें मँगाकर और हज़ा[illegible] रुपया .खर्च करके उन्हें इसमें रक्खा। पुस्त[illegible] [illegible] उन्होंने एक अच्छी इमारत भी [illegible] [illegible] विशेष करके अरबी-फ़ारसी की ही [illegible] अधिक हैं। ये पुस्तकें बड़े ही महत्त्व की हैं। कोई कोई तो अनमोल और दुष्प्राप्य भी कही जा सकती हैं। इनमें से [illegible] [illegible] हुई [illegible]। अरब, देहली के बादशाहों को [illegible] फ़ारिस और तुर्किस्तान तक [illegible] [illegible]मी नामी लेखकों [illegible] वे लिखी हुई हैं। लाखों [illegible] उनके लिखाने में ख़र्च हुए [illegible]।

पुस्तकें अनेक विषयों [illegible], दर्शन-शास्त्र, धर्मशास्त्र, सा[illegible] आयुर्वेद आदि कोई विषय ऐसा [illegible]र अनेक अनेक [illegible]कें न हों। [illegible] सब मुसल्मानों ही की [illegible] और लिखी [illegible]ई। जिनका सम्बन्ध धर्म से है वे सबकी सब [illegible] प्रायः मुसल्मानी ध[illegible] की ही हैं। डाक्टर डेनिस[illegible] रास ने इस पुस्तकालय की पुस्तकों की ए[illegible] बहुत बड़ी सूची तैयार की है। वह शीघ्र [illegible] प्रकाशित होने वाली है। उसके प्रकाशित हो[illegible] इस पुस्तकालय के अनमोल रत्नों का ज्ञान [illegible]ण को होने में बहुत सुभीता होगा। इस[illegible] में हज़ारों अलभ्य ग्रन्थ-रत्न ही नहीं, [illegible]राने ग्रन्थकारों के हाथ से लिखी [illegible] की असल कापियाँ भी हैं। उनमें [illegible] किये गये संशोधन, परिशोधन, [illegible] काट-छाँट, जैसे के तैसे, देखने को [illegible]रब में जबसे विद्या-दीपक की ज्योति [illegible] जितने उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्रकाशित हुए [illegible] उनमें से अधिकांश की कापियाँ इस पुस्तकागार में [illegible]गृहीत हैं। इस पुस्तकागार को देख लिया मानों [illegible]मुसल्मानों के विद्या-विकास का मूर्त्तिमान् रूप देख लिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसमें शाहनामा की एक कापी है। वह काबुल ग्रार काश्मीर के गवर्नर, अली-मरदान-खाँ, ने शाहे-जहाँ बादशाह को नज़र की थी। उसकी लिपि बड़ी ही सुन्दर है। हाशिये पर सुनह… है। ९४२ हिज़री की लिखी हुई है। ६१२ पृष्ठ … अली-मरदान के ही हाथ का एक लेख है, जि… लिखा है कि यह पुस्तक मैंने बादशाह को… कापी शाहिन्शाहनामे की है … तान मुहम्मद (तीसरे) का च… पुस्तक की दूसरी कापी …

कुस्तुन… यह देहली पहुँची … गई। इस पर … ग्रार … तातारी … इसकी थी… मुहर… की कई का… एक कापी बड़े महत्त्व… जहाँगीर के …थ से… हाशिये पर … दीवाने हाफ़िज़ … यथाविधि पुस्तक… देखा जाता है जो … के अनुसार प्रश्न करनेवाला … जान लेता है। इस तरह … प्रश्नों ग्रार उनके फल… का उ… बादशाहों ने, इस कापी के हाशि… से, किया है।

कुरान की तो न मालूम कित… पुस्तकालय में हैं। वे इतनी सुन्दर … लिपि इतनी मनोहर है कि देख कर चित्त … जाता है।

खान-खाना अब्दुर्रहीम ने यूसुफ़ ज़ुलेखा … एक कापी लिखाई थी। उसके लिखाने में उसने ए… हज़ार मुहरें ख़र्च की थीं। यह कापी उसने जहाँगीर बादशाह को नज़र की थी। यही कापी बाँकीपुर के इस पुस्तकागार की शोभा बढ़ा रही है। यह ९३० हिजरी की लिखी हुई है।

हुमायूँ के भाई मि… कामरान के दीवान की भी एक कापी दर्शनीय … यह एक नामी लेखक की लिखी हुई है। जहाँगीर ग्रार शाहेजहाँ के दस्त-… ग्रार भी कितने ही बड़े बड़े अमीरों के … इस कापी … हैं।

… कुछ पुस्तकें बहुत पुरानी … पुस्तकें इसमें हैं। जह-… कोम की पुस्तक, … । यह शल्य-… पुर है। इस …

…डराज।

… उसीके पीछे उस… मिलता है … तो दूर … बात …

माता की महिमा।

…माता! अत्यन्त अपरिमित तेरी महिमा,
अतुलनीय है पुत्र-प्रेम की तेरे गरिमा।
…धन्य धन्य तू धन्य महा-मुद-मङ्गलकारी,
…जननी के तुल्य वन्द्य है विपदाहारी ॥१॥
…धारा नीर नीरनिधि का चुक जावे,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाहे अपना अन्त अनन्त गगन दिखलावे।
पर इसमें सन्देह नहीं है कुछ भी माता !
तेरा सुत-वात्सल्य [illegible] कि [illegible]त न पाता ॥ २ ॥
तेरा पावन प्रेम जग[illegible] [illegible]वन करता,
मद, मत्सर, [illegible] मन का है हरता।
नहीं [illegible] [illegible]का होता है,
ब[illegible] [illegible] है ॥ ३ ॥

चाहे प्यारे मित्र-बन्धु हों उससे न्यारे,
[illegible]ाहे हों म[illegible] जगत भर के जन सारे।
[illegible] सदा तू सुत के माता !
[illegible]ल है प्रेम एक तेरा सुखदाता ॥ ११ ॥
[illegible]र्म तू सभी पुत्र के ही हित करती,
[illegible] के लिए जोड़ कर धन तू धरती।
[illegible] सौख्य अपना तज देती,
[illegible] तू सह लेती ॥१२॥
[illegible] सन जाता,
[illegible] बन जाता।

७—विजयराज[illegible]

चामुण्डराज़ का पुत्र था। [illegible] बैठा। इसके [illegible]

[illegible]e and Wa[illegible]

[illegible]भ-वंशी

[illegible] नीचे के श्लोकों [illegible]

मरकतमणिपट्टमौ[illegible]

नगरपरिचदै[illegible]

गिरसि कुलिशपाती वैरिणा[illegible]

पतिरभवदपत्यं यस्य गाङ्गेय[illegible]

सिंहासननैालिरत्नं

यह शोचनीय [illegible]

अँगरेज़ों के ध्यान में आई और [illegible]

[illegible]-सरकार ने पु[illegible]व-विभाग खो[illegible]

[illegible] दिया ज[illegible]

तुझको सुत[illegible]
कौन कष्ट [illegible]
उसे खिला[illegible]
अपने [illegible]
देती [illegible]
करती [illegible]
लख सुत का उत्क[illegible]
सूर्योद[illegible] देख कञ्ज[illegible]

[illegible]हार [illegible]ाम, बढ़ई [illegible] बिजली का काम। [illegible] हम असभ्य कह[illegible]

[illegible]कर [illegible] [illegible]ा देर थ[illegible] [illegible]ल मर[illegible] [illegible]हातों में [illegible] खेमा डाले [illegible] में हृद्रोग [illegible] मालिक [illegible], और, कुछ [illegible]ासिक देवता [illegible] घटितघटना- [illegible]कर स[illegible] सम्पन की माँ [illegible] झटपट मर ही जाती। उसको [illegible] रहा, क्योंकि जो सामने बैठ कर [illegible]ललाना सुनने के आदी हैं उनको [illegible] रही वह बुढ़िया जो घाट पर बेहोश [illegible] वाली के घर है, वह औरों के काम की [illegible]ने पर भी उपन्यास वालों के बड़े काम आ[illegible] [illegible]ती है। सम्पत नाम ऊभर-खाभर होने से रस [illegible]हाव में रोक करे तो वह नाम दुलार-प्यार

अर्थूणा के प[illegible] अधीनता में थे। स[illegible] अर्थूणा वालों के वं[illegible] के इलाक़े का कुछ [illegible] [illegible] भी [illegible]

यदि तेरे [illegible] से [illegible] [illegible]रित [illegible],
तो भी है वह [illegible] गोद में तेरे पाता।
उसको कर से खींच गले से तू लिपटाती,
उसके मलिन कपोल चूम कर अति सुख पाती।
जो तुझ पर पड़ जाय देवि ! विपदा भी भारी,
तो भी सुत को छोड़ नहीं तू होती न्यारी।
राहु-ग्रस्त जब कला कलाधर की हो जाती
मृगशिशु को वह कभी न तब भी दूर[illegible]

जोजेफ़ चेम्बरलेन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब अभाग्यवश मनुज आपदा में फँस जाता,
तब तेरा ही ध्यान उसे आता है ... !
तू ही उसको देवि ! उस समय धीरज ... है।
उसके दुख में भाग सदा तू ही है ले... अली-
सुत पर तेरी प्रीति देवि! रहती है भारी,
पर पुत्री भी तुझे सर्वथा जी से प्यारी।
मधुप-पङ्क्ति जो पुष्प-प्रेम-रस में ... को मूर्च्छा हुई
आम्रमञ्जरी पर क्या वह ... हुआ। विष...
हो अयोग्य गुण हीन भले ... का प्रत्यक्ष ...
रहती तेरी प्रीति ...ल ...

कुस्तुन... मे ...
यह देहली पहुँची ...
गई। इस पर ...
और ...
तातारी ...
इसली थी ...
मुहर ...त
की कई का...
एक कापी बड़े महत्त्व ...
जहाँगीर के ...थ से ...
हाशिये पर ...
दीवाने हाफ़िज़ ...
यथाविधि पुस्तक ...
देखा जाता है जो ...ने ...
के अनुसार प्रश्न करनेवाला ...
जान लेता है। इस तरह ...
प्रश्नों और उनके फलाफल का उ...
बादशाहों ने, इस कापी के हाशि...
से, किया है।

कुरान की तो न मालूम कित... पुस्तकालय में हैं। वे इतनी सुन्दर ... लिपि इतनी मनोहर है कि देख कर चित्त ... जाता है।

ख़ान-ख़ाना अब्दुर्रहीम ने यूसुफ़ ज़ुलेख़ा ... एक कापी लिखाई थी। उसके लिखाने में उसने ...

ज्येष्ठ पुत्र वैरिसिंह अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ और छोटे पुत्र डम्बरसिंह को वागड़ का इलाका जागीर में मिला। इ... में डूँगरपुर और बाँसवाड़े का कुछ हिस्... था।

२— ... एक ... १०२१

यह डम्बरसिं... और शाहेजहाँ के द... ...र भी कितने ही बड़े बड़े अमीरों ... पुस्तकें बहुत पुरानी ... पुस्तकें इसमें हैं। जह- ...कौम की पुस्तक, ...। यह ...

...उडराज।

...। उसीके पीछे उसक... ... मिलता है ... तो दूर ... बात ...

माता की महिमा।

... माता ! अत्यन्त अपरिमित तेरी महिमा,
अतुलनीय है पुत्र-प्रेम की तेरे गरिमा।
धन्य धन्य तू धन्य महा-मुद-मङ्गलकारी,
...ननी के तुल्य वन्द्य है विपदाहारी ॥१॥
... सारा नीर नीरनिधि का चुक जावे,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसके समय के दो लेख अर्थूणा में मिले हैं। पहला वि० सं० ११३६ (ई० स० १०७९) का और दूसरा वि० सं० ... (ई० स० ११००) का है। वि० सं० ११३६ ... में (१) डम्बरसिंह को वैरिसिंह का छोटा ... लिखा है तथा डम्बरसिंह से चण्डप ... दी गई है।

न तो विशेष इतिहास ही मिलता है और न करते पूर्वजों ... वंशावली ही। इससे उनके कथन ... नहीं हो सकता। परन्तु पास ही ... परमारों का राज्य रहने से, सम्भव है, ... उन्हीं के वंशज हों। इनका वंश-वृक्ष गत ... सरस्वती में दिया जा चुका है।

... लेख को समाप्त करते हुए ... पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ... धन्यवाद देते हैं; क्योंकि ... पुस्तकादिकों और ...

अर्थूणा के ... अधीनता में थे। ... अर्थूणा वालों के वं... के इलाक़े का कुछ ... राज्य में ...

यदि तेरे ... से ... चरित ...
तो भी है वह ... गोद में तेरे पाता।
उसको कर से खींच गले से तू लिपटाती,
उसके मलिन कपोल चूम कर अति सुख पाती॥
जो तुझ पर पड़ जाय देवि! विपदा भी भारी,
तो भी सुत को छोड़ नहीं तू होती न्यारी।
राहु-ग्रस्त जब कला कलाधर की हो जाती
मृगशिशु को वह कभी न तब भी दूर ...

... खेमा डाले ... में हृद्रोग ... मालिक ..., और, कुछ ... मासिक देवता ... घटितघटना- ... कर स... सम्पत की माँ ... झटपट मर ही जाती। उसको ... रहा, क्योंकि जो सामने बैठ कर ... ललाना सुनने के आदी हैं उनको ... रही वह बुढ़िया जो घाट पर बेहोश ... वाली के घर है, वह औरों के काम की ... ने पर भी उपन्यास वालों के बड़े काम आ ... ती है। सम्पत नाम ऊभर-खाभर होने से रस ... हाव में रोक करे तो वह नाम दुलार-प्यार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कितने ही बड़े बड़े अमीरों

छ पुस्तकें बहुत पुरानी

पुस्तकें इसमें हैं। ज़ह-

कौम की पुस्तक

कुस्तुनतु...

यह देहली पहुँची

गई। इस पर

और

तातारी

इसली थी

मुहर

की कई

एक कापी बड़े महत्त्व

जहाँगीर के

हाशिये पर

दीवाने हाफ़िज़

यथाविधि पुस्तक

देखा जाता है

के अनुसार प्रश्न करनेवाला

जान लेता है। इस तरह

प्रश्नों और उनके फल ... का उल्लेख

बादशाहों ने, इस कापी के हाशिये ...

से, किया है।

कुरान की तो न मालूम कितनी ... पुस्तकालय में हैं। वे इतनी सुन्दर ... लिपि इतनी मनोहर है कि देख कर चित्त ... जाता है।

ख़ान-ख़ाना अब्दुर्रहीम ने यूसुफ़ ज़ुलेखा ... एक कापी लिखाई थी। उसके लिखाने में उसने ...

...डराज।

। उसीके पीछे उस... मिलता है

तो दूर ... बात

माता की महिमा।

... माता! अत्यन्त अपरिमित तेरी महिमा,

अतुलनीय है पुत्र-प्रेम की तेरे गरिमा।

धन्य धन्य तू धन्य महा-मुद-मङ्गलकारी,

...ननी के तुल्य वन्द्य है विपदाहारी ॥१॥

... सारा नीर नीरनिधि का चुक जावे,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कालवश होकर वे ग्रन्थों से भी शीघ्र नष्ट हो जाते
योग से किसी ग्रन्थ में उनका वर्णन न किया
...हो तो ... हैं कि ... शेष रह जाती है। इ...
... वर्तमान सम... मकानों और पदार्थों की
सरल और ... किया जायगा तो वे भी नष्ट
को ... ों के आधार पर प्राचीन
में ... समय अवशिष्ट हैं

१७९४ ई० में जोन्स साहब की मृत्यु हुई। जोन्स के
... उनके ... पर हेनरी कोलब्रुक साहब की स्थापना
... कोलब्रुक के ... ना काम बड़ी योग्यता से किया। उन्नीसवीं
... वर्ष में उन्होंने दिल्ली के स्तम्भ पर खुदी हुई
वि... की प्रशस्ति का अनुवाद प्रकाशित किया। कोलब्रुक
... ों के ज्ञाता थे। उन्होंने भिन्न भिन्न विषयों पर
... त किये। १८०० में मार्क्विस वेलज़ली
... पाई। इसी ... इत्यादि की जांच करने के लिए
... साहब को नियत किया।
... साथ ही साथ उस प्रान्त ...
... उनके ...

७—विजयराज ...
चामुण्डराज़ का पुत्र था।
... बैठा। इसके ...

... यह शोचनीय ...
... अँगरेज़ों के ध्यान में आई और ...
...-सरकार ने ...त्त्व-विभाग खो...
... दिया ...

मरकतमणिपट्टमो...
नगरपरिघदैर्घ्यो...
गिरसि कुलिशपातो वैरिणा...
पतिरभवदपत्यं यस्य गाङ्गेय...
सिंहासनमौलिरत्नं

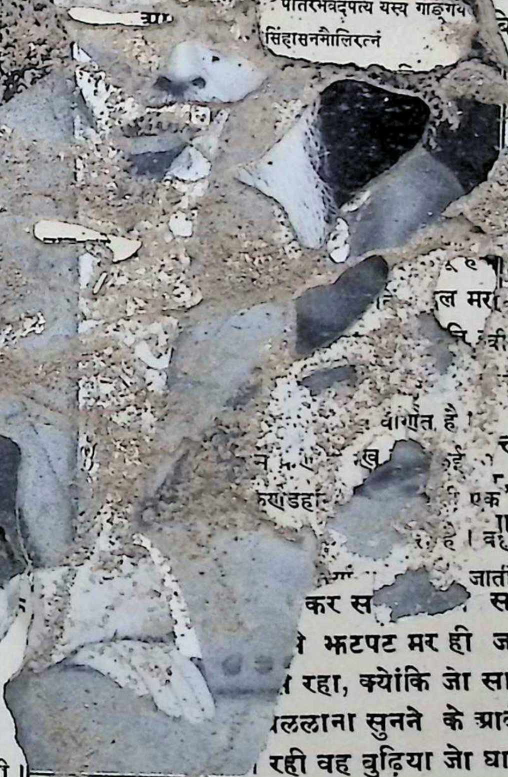

जोज़ेफ़ चेम्बरले...

... हार ... म, बढ़ई
... बिजली का काम
... हम अस...

... देर थे
... हातों में
... खेमा डाले
... में हृद्रोग
... के मालिक
..., और, कुछ
... ासिक देवता
... घटितघटना-
... कर स... सम्पन की माँ
... झटपट मर ही जाती। उसको
... रहा, क्योंकि जो सामने बैठ कर
... ललाना सुनने के आदी हैं उनको
... रही वह बुढ़िया जो घाट पर बेहोश
... वाली के घर है, वह औरों के काम की
... ने पर भी उपन्यास वालों के बड़े काम आ
... ती है। सम्पत नाम ऊभर-खाभर होने से रस
... हाव में रोक करे तो वह नाम दुलार-प्यार

अर्थूणा के प...
अधीनता में थे। स...
अर्थूणा वालों के वं...
के इलाक़े का कुछ...
... में ...

यदि तेरे ... से बाँच ... ,
तो भी है वह ... गोद में तेरे पाता।
उसको कर से खींच गले से तू लिपटाती,
उसके मलिन कपोल चूम कर अति सुख पाती।
जो तुझ पर पड़ जाय देवि! विपदा भी भारी,
तो भी सुत को छोड़ नहीं तू होती न्यारी।
राहु-ग्रस्त जब कला कलाधर की हो जाती
मृगशिशु को वह कभी न तब भी दूर...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सघन थी। लोग कहते हैं कि कर्ण के समय ... व्यापारी ऊँट पर लाद कर सिन्दूर बेचने आया था। ... वह नगर की स्त्रियों को बानगी दिखाते ही दिखाते समाप्त हो गया। व्यापारी ने यह बात कर्ण की सभा में कही। तब कर्ण ने आज्ञा दी कि सब नागरिक इसे एक ... कौड़ी दे दें। इससे उसे चौगुने का लाभ हो गया। कर्ण ... विषय में इसी तरह की अनेक दन्तकथायें हैं, जिन्हें सुनने से उसके प्रतापी होने का अनुमान सहज ही में ... सकता है।

कर्ण ने अपने नाम पर कर्णावती नाम की नगरी बसाई। कनिंहम के मतानुसार यह नगरी मध्य-प्रदेश में कारी तलाई के पास है। काशी ... का कर्णमेरु भी इसी का बनवाया हुआ है।

कर्ण की पटरानी ... का नाम आवल्लदेवी था ... की कन्या ... तातारी ... ता था। ... इस पर ... और ... प्रतापी ... कर ... नामक ... हुआ। ... है। नीचे ... श्लोक देखिएः—

> अजनि कलचुरीणां स्वामिना तेन ...
> न्वयजलनिधि ... लक्ष्मीश्रीमहाबार ...
> शशभृदुदयशब्दच्चु ... दुग्धाब्धिवेला-
> सहचरितयशःश्रीः श्रीयशःकर्णदेवः ...

कागज़ पर लगाई जाने वाली यशःकर्ण ... हमने स्वयं देखी है। वी ... चतुर्भुजा ल ... है। उसके दोनों तरफ़ हाथ ... प्रसन्न के ... हुआ है। व्यास कोई ३ इंच ...।

यशःकर्ण के क्रमशः ... गयकर्ण, जय ... नामक तीन पुत्र हुए। विजयसिंह के सम ... लेख, चेदि-संवत् ९४४ का, मिला है ... विजयसिंह के समय में १२१ वर्ष का ... समय में चार पुश्तों का हो जाना असम्भव न ... शिलालेख का कुछ हाल सुनिएः—

पांच वर्ष हुए यह शिलालेख, रीवां-राज्यान्तर्गत, ... गांव में एक तालाब पर मिला था। इसकी लम्बाई ... गज़ और चौड़ाई एक हाथ है। वज़न में यह कोई ३ ... होगा। इस पर २४ श्लोक और २७ पंक्तियां हैं।

... का यह शिला-लेख है उस समय यशःकर्ण ... में चौथा राजा विजयसिंह, त्रिपुरी में, ... उसका प्रधान मन्त्री मलयसिंह था। वह क्षत्रिय था, पर यह नहीं लिखा कि कौन क्षत्रिय। इसी मल-यसिंह के खुदाये हुए तालाब का इसमें कुछ भी सप ... लेखक उदार विद्वान् था ... व्यञ्जक हैः—

... इस शि ... राजधानी त्रिपुरी ... बस्ती ...

... अब वि ... डराज। ... उसीके पी ... मिल ... तो ... बुड्ढे होने ... कर था। निम्नलिखित श्लोक देखिएः—

> ... पूर्वैःपूर्वा भुवि ये बभूवु-
> स्तेषां यशोवर्द्धनमन्त्रमन्त्री।
> श्रीजाटनामा विषये नियुक्तो
> वाचस्पतिः स्वर्गपतेरिवाभूत्॥
> ... धर्मध्वजानामुरुभारमुर्वी-
> विश्राणनेनावहतो द्विजेभ्यः।
> ... आहवेऽपि पौरुषेण
> ... कर्णदेवो जितवान् रिपूँश्च॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मि० जोजेफ चेम्बरलेन ।

From the Illustrated Times of India.

इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वस्त्राह्वयां कर्णमहीशभक्तो-
मन्त्रस्य गोप्ता भुवि वन्द्यजीवः ।
जज्ञे यशःपाल इति प्रतीत-
स्तस्यात्मजः सौम्य इवेन्द्रदेवात् ॥
तस्याथ पुत्रोऽपि विशालबाहुः
स्रष्टा जगद्वीक्ष्य तमोधिरूढम् ।
तद्द्योतनायावयवी सुधांशु-
र्दीप्तः प्रक्लृप्तः खलु मूर्तिमानिव ॥
पद्मं हि पद्मालयपद्मसिंहः
सत्पत्रशुभ्राङ्कुरशुद्धगोत्रः ।
चत्रस्य वंशे स निदानबीजः
श्रीचन्द्रसिंहावरजो विजज्ञे ॥
सर्वत्र दिक्षु ख-विसर्पि यशः प्रचण्ड-
चेदीन्द्रराड्-विजयसिंहगृहैकमन्त्री ।
यो विप्रवीर्यवरदानबलेन रत्ते-
द्दारिद्र्यदन्तिपटलद्विजरुद्धदेहम् ॥
श्रीपद्मसिंहविदुषोऽत्र विशालबाहुः
श्रीकीर्तिसिंह इति सिंहबलो विजज्ञे ।
आरातिचक्रहृदि शङ्कुरसौ विशङ्को
रामः पुरा दशरथादिव कोशलेशः ॥
सामन्तमण्डलशिरोरुहधूननेन
निःशङ्कपादवनजो मलयसिंहः ।
श्रीकीर्तिसिंहतनयः स बभूव वीरः
चत्रस्य वंशजयमुद्धरणैकमन्त्रः ॥

विजयसिंह के समय में भी वेद-विद्या का अधिक प्रचार था। खेलते हुए बालकों के मुख से भी ब्रह्मवाद सुनाई देता था। ये लोग सोम और श्येन नामक अग्नि रखते थे। यज्ञ के लिए वैदिक ब्राह्मण नियुक्त थे। मत इनका शैव था। देवालय बनवाना ये अपना मुख्य कर्तव्य समझते थे। इस शिलालेख में यह भी लिखा है कि उस समय के लोग मगर आदि जल-जन्तुओं को हाथ से खिलाते थे।

विजयसिंह ने विक्रम नाम के किसी राजा पर विजय प्राप्त किया था। परन्तु यह नहीं मालूम होता कि यह कौन सा विक्रम था।

विजयसिंह के मन्त्री मलयसिंह के कर्मचारियों और उस समय के विद्वानों के नाम नीचे दिये जाते हैं:—

रणसिंह का पुत्र मगनसिंह शिक्षाविभाग, अश्वशाला और ख़ज़ाने का अफ़सर था। जगत्सिंह का पुत्र हरिसिंह बीड़ा खिलाने तथा सैनिक मन्त्री के पद पर नियुक्त था। त्रिपुरी के निवासियों में उद्धरण नाम का एक पुरुष बहुत नामी था। उसके पुत्र का नाम श्रीधराचार्य था, जो शायद भागवत का टीकाकार हो। उसके क्रमशः लक्ष्मीधर और विद्याधर नामक दो पुत्र हुए। यही विद्याधर पूर्वोक्त तालाब खुदाने में इञ्जिनियर का काम करता था। तालाब में १२०० हेमटङ्क (सुवर्ण-मुद्रा) व्यय हुए थे।

रामचन्द्र नाम का एक प्रसिद्ध विद्वान् था। उसके दिवाकर और पुरुषोत्तम नामक पुत्र हुए। यह पुरुषोत्तम कृष्णात्रि-गोत्री ब्राह्मण था और प्रायः काशी में रहता था। वहीं इसने षट् शास्त्रों का अध्ययन किया था। तालाब की प्रतिष्ठा इसी ने की थी। शिलालेख की प्रशस्ति की रचना भी इसी की है। चन्देरी के रहनेवाले बल्हण के पुत्र अनन्त ने इस प्रशस्ति को पत्थर पर खोदा था।

इस शिलालेख पर, तालाब खुदाये जाने का संवत्, इस प्रकार है:—

चत्वारिंशत्यधिकेऽब्दे चतुर्भिर्नवमे शते ।
शुक्रे साहसमल्लोके नाभस्ये प्रथमे दिने ॥

संवत् ९४४, भाद्रपद सुदि १, शुक्रे श्रीमद्विजयसिंहदेवराज्ये, मङ्गलं महाश्रीः ।

यह संवत् सम्भवतः चेदियों का होगा। चेदियों ने अपना स्वतन्त्र संवत् चलाया था। इसके प्रमाण भी शिला-लेखों और ताम्र-पत्रों मे मिलते हैं। परन्तु चलाने वाले का पता नहीं। हमने जो कुछ अनुसन्धान किया है उससे मालूम हुआ है कि हैहयों का अन्तिम राजा मोरध्वज हुआ। उसका ज़िक्र पुराणों मे भी है। मोरध्वज के बाद बारह राजे और हुए। उनका हाल और उनके नाम सिलसिलेवार ठीक ठीक नहीं मिलते। तेरहवां राजा कृष्णराज हुआ। उसीने चेदि-संवत् चलाया, जो विक्रमीय संवत् ३०६ से आरम्भ होता है। यहां के वृद्ध कलचूरियों के मुख से इसके विषय में हमने ये दोहे सुने हैं:—

मोरध्वज सों इत भये तेरहवें नृप जौन।
कृष्ण-नाम यहि वंश कर कलचुरि धारयो तौन ॥
कलचुरि-संवत् को सोई भूप कियो निरमान।
त्रैशत अरु षट् विक्रमी संवत् तासु प्रमान ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृष्णराज वि० संवत् ३०६ में हुआ। क्रमशः उसके शङ्कर-गण, बुद्धराज और कोकल्लदेव ये तीन पुत्र हुए। कोकल्लदेव के बाद विजयसिंहदेव तक के राजों के नाम इस लेख में हैं। तदनन्तर केवल दो राजे, अजयसिंहदेव और कीर्तिवर्मा, हुए। कीर्तिवर्मा वि० संवत् १२९८ में हुआ। उसीके समय में हैहय-शासन का सूर्य अस्त होगया। वि० सं० १४०० तक चेदि-संवत् चला। अनन्तर कालचक्र में वह भी लीन होगया।

कलचूरियों का एक बहुत बड़ा समुदाय रीवाँ-दरवार में सेवा दे रहा है। सन् १८३१ के लगभग नायक यशवन्तराय ने रीवाँ पर हमला किया था। उस समय इन लोगों ने अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया था। इनको अपने इतिहास का कुछ भी ज्ञान नहीं। परन्तु भारत-भ्रमण-नामक पुस्तक के कर्त्ता ने लिखा है कि सन् १३०० ई० के क़रीब कलचूरियों का राज्य रीवाँ के वघेलों (सोलङ्कियों) ने नष्ट किया। इसी गड़-बड़ में हम्मीरदेव कलचूरी अलवर की तरफ़ गया और वहाँ से भागकर फिर वघेलखण्ड आया। क्या आश्चर्य जो ये लोग उसीके वंशज या उसी की शाखा के हों।

मधुरप्रसाद शर्मा।

न्यायमूर्त्ति रानडे की कुछ विशेष बातें।

न्यायमूर्ति माधवराव गोविन्द रानडे बड़े ही प्रख्यात पुरुष हो गये। उनकी योग्यता का अनुमान इसी एक बात से कर लेना चाहिए कि भारतवर्ष के सबसे बड़े नेता गोखले महाशय आपके शिष्यों में से हैं और मिस्टर गोखले आपकी गणना उन महापुरुषों में करते हैं जिन्हें ईश्वर किसी विशेष कार्य्य के निमित्त, अपना अंश देकर, पृथ्वी पर भेजता है। अस्तु; ऐसे ही महानुभाव की जीवन-सम्बन्धिनी कुछ विशेष बातें आज हम सरस्वती के पाठकों को सुनाते हैं। रानडे महाशय की धर्म्म-पत्नी, श्रीमती रमाबाई, ने अपने परलोकवासी पति के विषय में एक पुस्तक, मराठी में, लिखी है। उसी से ये बातें उद्धृत की गई हैं।

(१)

एक बार माता ने बालक रानडे के एक हाथ में बरफ़ी का एक टुकड़ा दिया और दूसरे हाथ में एक छोटा टुकड़ा। फिर उनसे कहा—"इसे तू खा ले और उसे उस लड़के को दे दे"। माधव ने तत्काल ही छोटे टुकड़े को अपने मुँह में रख लिया और बड़े टुकड़े को दासी के लड़के के हाथ में दे दिया। माता ने यह देख कर कहा—"अरे, तू ने बड़ा टुकड़ा क्यों दे दिया? वह तो तेरे लिए था"। माधव ने सरल भाव से कहा—"तुम्हीं ने तो कहा था कि इस टुकड़े को तू खा ले और उसे उस लड़के को दे दे"। बालक की इस सरलता को देख कर माता पानी पानी हो गई।

(२)

रानडे के पिता ख़र्च से तङ्ग रहा करते थे। अतएव जब माधव ने अपनी कमाई के पैसे से—गृहस्थी का बोझा सँभालते हुए—पूने में एक घर ख़रीदा तब पिता को बड़ा आनन्द हुआ। उन्होंने चट ब[illegible] का मज़मून लिख कर पुत्र को देखने के लिए भेजा। पुत्र ने उसे पढ़ कर एक एतराज़ किया। उसने लिखा—"एक ग़लती के सिवा मज़-मून ठीक है। वह ग़लती यह है कि जहाँ पर मेरा नाम है वहाँ आपका होना चाहिए"। पिता ने इस बात को न माना। उन्होंने कहा—"हमारा परिवार बहुत बड़ा है। यद्यपि इस समय हम लोगों में झगड़ा नहीं। तथापि, आगे भी न होगा, यह कौन कह सकता है। न जाने कब जुदा होने का मौक़ा आ जाय। अतएव, बयनामा तुम्हारे ही नाम से होना चाहिए"।

पुत्र ने उत्तर दिया—"तो मैं मकान ख़रीदने से बाज़ आया। आपको मेरी प्रार्थना माननी ही होगी"।

पुत्र के सामने पिता को हार माननी पड़ी। घर पिता ही के नाम से ख़रीदा गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धन्य, रानडे की पितृभक्ति !

(३)

रानडे के पिता कोल्हापुर में बहुत दिन तक रह चुके थे। वहाँ के अनेक लोगों से उनका परिचय था। एक बार रानडे महोदय की बदली वहीं कोल्हापुर को हो गई। सम्भव था कि बहुत लोग अपने मामले की पैरवी के लिए इनके पिता से मिलते। पर पिता को पुत्र का स्वभाव मालूम था। अतएव वे सबसे निःस्पृह और चोखा व्यवहार रखते थे।

किन्तु एक बार एक ऐसा प्रसङ्ग आ ही पड़ा। रानडे की अदालत में एक मुक़द्दमा आया। प्रतिवादी एक कुलीन घराने का प्रतिष्ठित व्यक्ति था। इसके सिवा रानडे महोदय के पिता से उसका विशेष परिचय भी था। यही नहीं, वह उनका रिश्तेदार भी था। उसने रानडे के घर आकर उनके पिता से प्रार्थना की। वह बोला—"मैं जानता हूँ कि यह बात आपको पसन्द नहीं। फिर भी अपने ऊपर सङ्कट आया देख मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप कृपा कर माधवराव से मेरे विषय में कुछ कह दीजिए। मेरी इच्छा [illegible] नहीं। मैं केवल यही चाहता हूँ कि अवकाश के समय मेरे काग़ज़ पत्र वे एक बार देख लें। उन पर अच्छी तरह विचार करके मुक़द्दमे का फ़ैसिला करें"।

उस व्यक्ति के बहुत हठ, प्रार्थना और आग्रह करने पर रानडे के पिता ने लाचार होकर उसका कथन स्वीकार किया। वे उसको साथ लेकर पुत्र के कमरे में गये। माधवराव उनको देखते ही उठ खड़े हुए। उन दोनों के बैठ चुकने पर आप भी बैठे। तब पिता ने कहा—"ये तुम से कुछ कहना चाहते हैं। इनकी बातें सुन लो"।

रानडे को कुछ उत्तर देते न देख वह मनुष्य आप ही कहने लगा—"अभी मैं काग़ज़-पत्र नहीं लाया। यदि आपको अवकाश हो तो ले आऊँ।"

रानडे ने कहा—"जी नहीं; आज मुझे बहुत काम है। अवकाश मिलने पर आपको सूचना दूँगा।"

यह सुन कर उसने 'बहुत अच्छा' कहा और नमस्कार करके चला गया। पिता भी चलने को तैयार हुए। तब रानडे ने खड़े होकर, नम्रतापूर्वक किन्तु स्पष्ट शब्दों में, कहा—"कोल्हापुर में ऐसा एक भी आदमी नहीं जो आपसे परिचित न हो। आप कहाँ तक न्याय के विरुद्ध सब की पैरवी कर सकेंगे। इससे मैं कर्तव्य-विमुख होता हूँ। आप विचार कीजिए। नहीं तो लाचार होकर मुझे यहाँ से अपनी बदली करा लेनी होगी"।

इस घटना के बाद रानडे कोल्हापुर में तीन चार महीने और रहे। पर ऐसा और कोई मौक़ा नहीं आया।

धन्य माधवराव ! यदि आप में इतनी न्यायपरता न होती तो कौन "न्यायमूर्ति रानडे" कहते ही आपकी पवित्र प्रतिमा को अपने हृत्पटल पर तत्काल ही चित्त कर लेता ?

(४)

फाइनन्स कमिटी में नियुक्त होकर रानडे महोदय जब शिमला, दिल्ली, मदरास आदि स्थानों में घूमते हुए कलकत्ते पहुँचे तब उनकी पत्नी भी उनके साथ थी। एक दिन आप अपने बँगले में बैठे उनसे बातचीत कर रहे थे। इतने में एक बँगला-अख़बार बेचने वाला वहाँ पहुँचा और पूछने लगा—"क्या आप कृपा करके इस पत्र के ग्राहक हो जायँगे ?"

रानडे महोदय की पत्नी ने कहा—"भाई, हमें तो यहाँ की भाषा आती ही नहीं; पत्र ले कर क्या करेंगे"।

पर उस मनुष्य ने इनकी बात पर कुछ भी ध्यान न दिया और रानडे महोदय से फिर वही प्रश्न किया। तब उन्होंने कहा—"आज का अख़बार दे दो। पर अब बीच में न आकर एकदम अगले सोमवार को आना और हमारा नाम ग्राहक-श्रेणी में लिख लेना"।

यह सुन कर अख़बार बेचने वाला अख़बार देकर चला गया। तब न्यायमूर्ति ने अपनी पत्नी से कहा—"जिस शहर में हमें दो चार महीने रहना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है वहाँ की भाषा के सम्बन्ध में यह कहना कि वह हमें नहीं आती, बड़ी लज्जा की बात है"।

पत्नी ने कहा—"जो हमारी भाषा नहीं, वह हमें आती भी नहीं। इसमें लज्जा की कौन सी बात है। मालूम होता है, आप मुझे इसे सीखने के लिए कहेंगे। कुछ हर्ज़ नहीं। मैं ज़रूर सीखूँगी, पर आपसे। किसी और से नहीं"।

रमाबाई को मालूम था कि पतिदेवता केवल बँगला अक्षर पहचान सकते हैं। इसी से उन्होंने हँसी में ऐसी बात कह दी।

रानडे ने पत्नी की बात का कुछ उत्तर न दिया। वे थोड़ी देर तक चुप रह कर और और बातें करने लगे।

दूसरे दिन सबेरे जब वे घूमने निकले तब और दिनों की अपेक्षा देर से लौटे। साथ में एक आदमी ले आये। वह छोटी बड़ी दस पन्द्रह किताबें लिये था। उसने उन किताबों को मेज़ पर रख दिया। रानडे ने पत्नी से उन किताबों की क़ीमत दिला कर उस आदमी को बिदा कर दिया। उसके चले जाने पर रमाबाई ने उन पुस्तकों में से एक को उठा कर देखा तो मालूम हुआ कि वह अँगरेज़ी की मदद से बँगला सीखने की किताब थी।

बस फिर क्या था। रानडे महोदय ने उन किताबों से बँगला सीखना शुरू कर दिया। दिन को भी वे उन्हें पढ़ते और शाम को घूमने के समय भी उनके हाथ में पुस्तक रहती। दूसरे ही दिन, सबेरे, उन्होंने अपनी पत्नी को स्लेट पर बँगला-वर्णमाला का सबक़ दिया।

उसी दिन प्रातःकृत्यों से निपट कर वे हज़ामत कराने बैठे। तब भी उनके हाथ से बँगला की पुस्तक न छूटी। वे उसे ज़ोर से पढ़ते जाते थे और नाई उनकी ग़लतियाँ सुधारता जाता था। रमाबाई उस समम पास ही के एक कमरे में थीं। उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि बैठक में कोई दूसरा आदमी बोल रहा है। उन्होंने दरवाज़े से झाँक कर देखा तो यह माजरा! इस दृश्य को देख कर रमाबाई से हँसी न रोकी गई। नाई के चले जाने पर उन्होंने पति के पास आकर कहा—"वाह, मास्टर तो मज़े का मिला! मालूम होता है, दत्तात्रेय के समान आप भी चुन चुन कर गुरु बना रहे हैं।"

इस तरह हँसी मज़ाक की दो एक बातें कह कर रमाबाई ने उस दिन की अपनी बात के लिए क्षमा माँगी और ध्यानपूर्वक रानडे महोदय से बँगला सीखने लगीं। महीने ही डेढ़ महीने में उन्होंने उक्त भाषा में इतना नैपुण्य प्राप्त कर लिया कि दुर्गेशनन्दिनी, आनन्दमठ आदि बँगला-उपन्यास उनकी मेज़ पर दृष्टिगोचर होने लगे।

(५)

एक दफ़े रानडे महोदय कृषिविभाग के स्पेशल जज की हैसियत से बम्बई-प्रान्त के कुछ ज़िलों में दौरा कर रहे थे कि एकाएक शोलापुर के मुक़ाम में वे बीमार हो गये। इसी बीमारी की दशा में उनके नाम हाईकोर्ट की जजी पाने का परवाना आया। सरिश्तेदार जब उस परवाने को उनके पास पेश करने चला तब रानडे महोदय की पत्नी ने—जो दौरे पर साथ ही थीं—उसे ऐसा करने से मना कि[illegible]न्होंने समझा कि ज्वर की अवस्था में एकाएक आनन्द का समाचार सुन कर पति के हृदय में आवेश न उत्पन्न हो जाय जो बीमारी बढ़ जाय। दूसरे दिन जब उनकी तबीयत कुछ ठीक हुई तब सरिश्तेदार ने वह परवाना पेश किया। उसे पढ़ कर रानडे महोदय की मुखचर्या पर कुछ भी अन्तर न दिखाई दिया। उन्होंने सहज ही कहा—"तब तो जान पड़ता है, इस कार्य्य को पूर्ण करके शीघ्र ही पूने जाना होगा।" इस घटना पर रमाबाई लिखती हैं—"जब सरिश्तेदार के चले जाने पर भी उन्होंने उस पद-प्राप्ति के सम्बन्ध की कोई बात मुझ से न कही तब मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। साथ ही पहले दिन के अपने अनुमान के सम्बन्ध में हँसी भी आई। मैं बड़ी पागल थी। अहर्निश उनके साथ रह कर भी मैंने उनके स्वभाव को न पहचाना! जो हृदय, विपत्ति का पहाड़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टूट पड़ने पर भी, विचलित न होता था वह भला कहीं आनन्दातिरेक से उछलने वाला था ! सच तो यह है कि जैसे जैसे उन्हें उच्च पद की प्राप्ति होती जाती थी वैसे ही वैसे उन्हें अपने कर्तव्य की गुरुता का अनुभव और अनुमान होता जाता था"।

(६)

महात्मा रानडे अपने नौकरों पर बड़ा प्रेम रखते थे। उनके सुख दुःख का उन्हें बड़ा ख़याल रहता था। उनका व्यवहार उनके साथ ऐसा होता था जैसा कि अपने परिवार के मनुष्यों के साथ लोगों का होता है। यही कारण है कि उनके सेवक तक उन्हें अत्यन्त पूजनीय समझते थे; उन पर बड़ी श्रद्धा रखते थे; उनकी सेवा करके वे अपने को कृतार्थ मानते थे। इसका भी एक उदाहरण लीजिए:—

एक बार बम्बई में घोर प्लेग था। रानडे महोदय अपने नौकरों समेत पास ही के एक गाँव गये। काशिनाथ नाम के उनके एक आश्रित के गिल्टी निकल आई। वह चुपचाप, बिना किसी को ख़बर दिये, बम्बई के प्लेग-अस्पताल में चला [illegible]। उसने वहाँ से एक चिट्ठी सरिश्तेदार को लिखी—"मैं बीमार हूँ। आशा है तीन चार दिन में अच्छा हो जाऊँगा। पर यह बात रानडे महोदय पर ज़ाहिर न होने पावे; नहीं तो वे यहाँ आये बिना न रहेंगे"।

इस बात की ख़बर रमाबाई को लग गई। वह भी पति के समान बड़ी दयालु-प्रकृति की थीं। रानडे महोदय को तत्काल ही इस बात की सूचना देकर वे काशिनाथ को देखने बम्बई गईं। वहाँ काशिनाथ से उनकी जो बात चीत हुई उसका कुछ अंश इस प्रकार है:—

काशिनाथ—"बाई साहब तुम क्यों आईं ? तुम्हारा आना अच्छा नहीं हुआ। तुम जल्दी यहाँ से चली जाओ"।

रमाबाई—"काशिनाथ, तुम घबराओ मत। डाकृर साहब कहते हैं कि कल की अपेक्षा आज तुम अच्छे हो। वे भी (रानडे महोदय) कोर्ट जाते समय तुम्हें देखने आवेंगे। तुम उनके साथ अच्छी तरह बात चीत करना"।

यह सुन कर काशिनाथ ज़ोर से हँसा। फिर बुख़ार के वेग में डाकृर को उद्देश करके वह इस प्रकार बर्राने लगा:—"Look at my Master; how kind he is to me He has sent his wife to see me in this Plague Hospital. Besides, he is coming personally to see me. He would have come even yesterday, but busy as he always is, he gets no time, you know. He is always busy day and night, till he gets fast asleep. I am his reader, you know. I read so many hours a day; I never sit still. But you have made me a prisoner! Don't you know who I am? I am Justice Ranade's reader. He can never do without me. You have no business to detain me. I am his Private Secretary. Don't you know whose man I am? Will he like if I sit still doing nothing? I must get up and attend to my work. I shall not listen to anybody.

काशिनाथ, धन्य तुम्हारी स्वामि-भक्ति !

प्यारेलाल गुप्त।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दहेज़ की कुप्रथा।

पत्थर से दिल हुए हमारे नहीं पिघलते, कन्यायें थक रहीं आग में जलते जलते।
शुष्कहृदय हैं हाय! अश्रु भी नहीं निकलते, हम ऐसे खल हुए, नहीं ऐसे दुख खलते।
पातीं पावन प्रेम-पाथ प्यारे फल फलतीं।
क्यों वनाग्नि में स्नेहलता सी बेलैं जलतीं॥

यह दहेज़ की आग सुवंशों ने दहकाई, प्रलय-वह्नि सी वही आज चारों दिशि धाई।
घर उजाड़ बन बना रही, कर रही सफ़ाई, ताप रहे हम मुदित, समझते होली आई।
ख़बर न इसकी हमें, ख़ूब ही धूल उड़ेगी।
विकट लपट कर भस्म हमें आमूल, उड़ेगी॥

स्वत्व स्वत्व चिल्लायँ न घर हम अपना देखें, रहें झोपड़ी-मध्य महल का सपना देखें।
वज्र-हृदय हो जायँ न द्रवैं, विलपना देखें, कन्याओं का ताप-पुञ्ज में तपना देखें।
हों असभ्य या सभ्य कहीं यों अधम न होंगे।
महा दुष्ट हों, किन्तु, नहीं, यों अधम न होंगे॥

शिक्षित भी बन गये, सभ्य भी हैं कहलाते, बने सुधारक कभी सभापति भी बन जाते।
करते हुए कुकृत्य नहीं जी में शरमाते, हो जो पुत्र-विवाह हज़ारों ही ठहराते।
मिले मुनासिब मोल तभी होते हैं राज़ी।
तुर्की कोई पुत्र बना कोई है ताज़ी॥

धन्य धन्य है धन्य परस्पर नाता ऐसा, और देश में प्रेम-पन्थ कब भाता ऐसा।
गिना चले व्यवहार खोल कर खाता ऐसा, किससे यों कुल-नियम निबाहा जाता ऐसा।
शक्ति और तो हाय न हम में ख़ा[illegible] है।
कटती जिससे नाक उसी में नाक रही है॥

अड़ी कहां इस दुष्ट प्रथा की टांग नहीं है, द्रव्य छोड़ कर और गुणों की मांग नहीं है।
घर का है यह हाल कि भूनी भांग नहीं है, "आर्म्स ऐक्ट" से हाय घरों में सांग नहीं हैं।
पति से मिलता नहीं उसी से मिलता सीना।
कन्याओं का हाय न होता दूभर जीना॥

कहते हैं सब लोग "जवानी दीवानी है", देखें क्या क्या हाय व्यथा सिर पर आनी है।
अन्धी इनमें नहीं न तो कोई कानी है, फिर भी दुष्ट दहेज़-प्रथा से हैरानी है।
दीनबन्धु अब एक आसरा रहा तुम्हारा।
करदो हा हा नाथ किसी विधि से निपटारा॥

या तो करके कृपा कुलीनों में कन्यायें, दयासिन्धु दुखदलन यहां पर मत जन्मायें।
जन्में तो दो चार वर्ष ही में मर जायें, सहने को यों व्यथा जवान न होने पायें।
या युवकों के चित्त मध्य यह बात बिठा दें।
वे दहेज़ की महा घृणित दुष्प्रथा उठा दें॥

"सनेही"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा राममोहन राय।

आपका जन्म बङ्गाल के राधानगर-नामक ग्राम में, १७७४ ई० में, हुआ। आपके पिता का नाम रामकान्त राय था। आपकी गणना बहुत प्रतिष्ठित ब्राह्मणों में थी। बर्दवान ज़िले में आपकी ज़मींदारी भी थी। रामकान्त राय और उनके पूर्व-पुरुष मुर्शिदाबाद के नवाब के यहाँ प्रतिष्ठित पदों पर नियुक्त रहे थे। राममोहन राय की माता, बक़ौल ख़ुद राममोहन राय के, भक्ति और प्रेम की मूर्त्ति थीं। उन्हीं से आपने धार्म्मिक भाव और ईश्वर-भक्ति, संस्कार रूप से, प्राप्त की। १० वर्ष की अवस्था में, फ़ारसी और अरबी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए, आप पटने भेजे गये। आपने वहाँ इन भाषाओं का ख़ूब अध्ययन किया। अध्ययनकाल में मौलवियों और विशेष कर सूफ़ियों के सङ्ग के कारण आपकी श्रद्धा कुछ कुछ इसलाम-धर्म्म की ओर होगई। जिस समय इस बात का पता आपकी धर्म्मप्राणा माता को लगा उसी समय उन्होंने आपको संस्कृत-शिक्षा प्राप्त करने के लिए काशी जाने की आज्ञा दी। माता की आज्ञा शिरोधार्य्य समझ कर आप वहाँ से बनारस चले गये और देववाणी संस्कृत का अध्ययन मन लगाकर करने लगे। आपने फ़ारसी, अरबी और संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त करके जो सिद्धान्त स्थिर किया वह यह था कि ईश्वर एक है और उसकी पूजा करने के लिए उसकी मूर्त्ति बनाने की आवश्यकता नहीं। निर्गुण और निर्विकार ब्रह्म की उपासना करना और कराना ही आपका लक्ष्य हुआ।

जिस समय बङ्गाल में आपने जन्मग्रहण किया उस समय वहाँ की अवस्था बड़ी शोचनीय थी। वहाँ के निवासी पुरानी रीतियों के अन्ध-दास थे और शिक्षा का प्रचार न होने के कारण हठ और दुराग्रह का सर्वतोभाव से राज्य था। आप महापुरुष थे। आपने देश और जाति के उपकार के लिए कष्ट सहे। जब आपने अपना मत प्रकट करना आरम्भ किया तब सबसे पहला और भारी विरोध आपही के पिता की ओर से हुआ। उन्होंने अपने विद्वान् और निःस्पृह पुत्र को केवल भावगत भेद होने के कारण घर से निकाल दिया। पाठक, क्या आप जानते हैं कि उस समय हमारे चरित्रनायक की क्या उम्र थी? केवल १६ वर्ष! किन्तु महापुरुष राममोहन के हृदय में नाम मात्र को भी भय का सञ्चार न हुआ। प्रत्युत उनका सङ्कल्प और भी दृढ़ हो गया। सत्य के प्रकाश के लिए और जाति के उपकार के लिए उस महात्मा ने सब कष्ट सहने स्वीकार किये। महापुरुषों का मन और शरीर जिन उपादानों से गठित होता है उनमें दुःखों के सहन करने और अपने तिरस्कार करने वालों की भलाई करने का माद्दा सबसे ज़ियादह परिमाण में होता है। संसार ने किस महापुरुष का विरोध नहीं किया--क्या पूर्व क्या पश्चिम, दोनों दिशायें—महापुरुषों पर अकारण और अविवेकपूर्ण अत्याचारों से कलङ्कित हैं। बुद्ध, शङ्कर, ईसा और कबीर आदि महापुरुषों के साथ उस समय के जनसाधारण ने जो व्यवहार किया वह इतिहास-प्रेमियों से छिपा नहीं। इसी नियम की प्रेरणा से राजा राममोहन राय का—जो भारतवर्ष के, इस नवीन युग में, पहले उद्धारकर्त्ता और मातृभूमि के पहले सुपुत्र हुए—विरोध भी कुछ कम न हुआ। जाति से आप च्युत किये गये। पिता ने ऐसा प्रबन्ध करा दिया कि अपनी सम्पत्ति का कुछ भी अंश आपको न मिले। किन्तु भारतवासियों के दुःख से दुखी और उनके सुख में सुखी होने वाले उदारचेता राममोहन राय का मन इन बातों से ज़रा भी न हिला। आपके हृदय में भय और ईर्ष्या की मानों गन्ध भी न थी। आपका अधिक समय पुस्तकावलोकन और ग्रन्थ-लेखन में व्यतीत होता था।

भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में साधारणतः, और बङ्गाल में विशेषतः, सती होने का रवाज था। रवाज के कारण बहुत सी स्त्रियां अपनी इच्छा न रहते हुए भी, डंडों और बांसों की ताड़ना से विवश की जाकर, पति के साथ जलाई जाती थीं। धर्म्म और दया-प्रधान भारतवर्ष में यह निष्ठुरता और निर्दयता का प्रकाण्ड काण्ड बहुत समय से चला आता था। इस कारण यहाँ के निवासी उस हृदयविदारक दृश्य को देखने के आदी हो गये थे। किन्तु दयाधन राममोहन राय का मन अपने देश की इस कलङ्कमय रीति को देख कर द्रवीभूत हो गया। उन्होंने इस रीति को देश से उठा देने का पवित्र सङ्कल्प अपने मन में किया। आपने कई छोटे बड़े ग्रन्थ फ़ारसी और मातृभाषा में लिखकर प्रकाशित किये। उनमें हिन्दू-शास्त्रों के आधार पर उन्होंने यह प्रमाणित किया कि यह कर्म्म शास्त्रविहित नहीं।

१८०४ या १८०५ ईसवी में आपके पिता का स्वर्गवास हुआ। उसके बाद आपने और भी अधिक मनोयोग के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साथ देश की भलाई का काम आरम्भ कर दिया। आपने भ्रमण भी ख़ूब किया था। यहां तक कि आप कुछ दिनों तक तिब्बत में भी रहे थे और वहां रहकर पाली भाषा का ज्ञान प्राप्त किया था। आप स्वार्थत्याग, ईमानदारी और निर्भयता की मूर्ति थे। आपके विरोध की अग्नि उस समय समस्त बङ्गाल में भभक रही थी। दो चार स्काटलेंडवासी, कलकत्ता-प्रवासी, सज्जनों को छोड़कर आपका और कोई भी साथी न था।

कुछ समय तक आपने बङ्गाल के कई ज़िलों में कलेक्टरों और जजों की कचहरी में दीवान के पद पर रहकर बड़ी योग्यता के साथ काम किया। किन्तु सरकारी काम करके देशहित के काम में विघ्न पड़ता देख आपने उसको फ़ौरन छोड़ दिया और कलकत्ते आकर अपना काम फिर आरम्भ कर दिया। सर्कुलर रोड पर आपने मकान बनवाया और उसी में रह कर आप देशहित की चिन्ता करने लगे।

आपके लेखों, ग्रन्थों और व्याख्यानों के कारण कुछ लोग आपके विचारों से सहमत होगये। वे सब सर्कुलर रोड वाले आपके मकान में एकत्र होकर आपके उपदेश सुनने लगे। यह मकान और ये सज्जन ही ब्रह्मसमाज के आदि संस्थापक हुए। आपके यहां दिन भर धार्म्मिक विषयों पर विचार हुआ करता था। सामाजिक और राजनैतिक विषयों की चर्चा भी प्रायः हुआ करती थी। आप जानते थे और ठीक जानते थे कि भारतवर्ष धर्म्म-प्रधान देश है। उसका उपकार धर्म्म-शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है। आपके धार्म्मिक सिद्धान्तों और वेदान्त के सिद्धान्तों में बहुत ही कम अन्तर था। आपने कई उपनिषदों का अनुवाद किया और वेदान्त-विषयक कई स्वतन्त्र ग्रन्थ भी रचे। इसी बीच में आपने फ़ारसी, अरबी और संस्कृत भाषा की तरह अँगरेज़ी भाषा में भी दक्षता प्राप्त कर ली। आपकी फ़ारसी और अरबी भाषा की योग्यता पर मुग्ध होकर देहली-नरेश ने आपको राजा की उपाधि से विभूषित किया। सन् १८१५ में अनेक सज्जन आपके पास आकर शान्ति-लाभ करने लगे थे। आपका पहला निबन्ध, सती की प्रथा के विरुद्ध, सन् १८१८ ईसवी में निकला। उसके बाद आप बराबर इस विषय में आन्दोलन करते रहे। अन्त में ११ वर्ष के अविश्रान्त परिश्रम के बाद आपने, गवर्नमेंट द्वारा, इस कार्य्य को अमानुषिक और न्याय-विरुद्ध प्रमाणित करा ही दिया। सती की प्रथा को रोकने वाला क़ानून १८२९ ईसवी में पास होगया।

इस महासङ्कल्प-पूर्ति के बाद ही आपने इँगलेंड-यात्रा का सङ्कल्प किया। उस समय भारतवर्ष की शिक्षा की अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी। कोई नियमबद्ध या समुचित प्रबन्ध न था। भारतवर्ष में शिक्षा-प्रचार के लिए आपने इँगलेण्ड में आन्दोलन करने का सङ्कल्प किया। एक महान् कार्य्य को पूर्ण करके उससे भी अधिक गुरुतर और देशहित के काम में, बिना विश्राम किये, हाथ डालना आपही जैसे असाधारण अध्यवसाय-शील महापुरुष का काम था। भारतवर्ष में शिक्षा का सुप्रबन्ध कराने और देहली-नरेश की कुछ शिकायतों को दूर कराने के उद्देश से ही आपने, सन् १८३० ई० में, भारतवर्ष से (शोक है, सदा के लिए) इँगलेंड को प्रस्थान किया। समुद्र-यात्रा के बन्धन को सबसे पहले आपही ने तोड़ा।

भारतवर्ष में उस समय तक कोई स्कूल न था। जो कुछ शिक्षा मिलती थी वह पादरियों की कृपा से ही मिलती थी। इसी से यहां के निवासी अविद्या देवी के पूरे उपासक बने हुए थे और देशोपकारी कार्यों के मार्ग में सदा रोड़े एकत्र किया करते थे। राजा राममोहन राय ने एक बहुत विचार-पूर्ण लेख, शिक्षा के सम्बन्ध में, गवर्नमेंट की सेवा में भेजा था। शिक्षा के विषय पर उसमें विशद रूप से विचार किया गया था। उस लेख में लिखे प्रत्येक शब्द से आपका विशाल अनुभव, असीम शास्त्र-प्रवीणता और असाधारण देशभक्ति का पता लगता है।

जब आप इँगलेंड पहुँचे तब वहां आपका यथोचित सत्कार हुआ। उस समय के बड़े बड़े विद्वानों ने आप से भेंट की और आपके गुणों की शत-मुख से प्रशंसा भी की। उसी समय इँगलेंड के महाराज का राज्याभिषेक था। उसमें भी आपको सम्मिलित होने का असाधारण सम्मान प्राप्त हुआ। इँगलेंड में अपने गुणों के कारण आप अल्प काल में ही सर्वप्रिय हो गये—यदि निष्ठुर काल आप को हमसे शीघ्र ही न छीन लेता तो आपके वहां रहने से हमारे अनेक उपकार होने की प्रबल सम्भावना थी।

२७ सितम्बर सन् १८३३ ईसवी का दिन भारतवर्ष के लिए दुर्दिन था। उस दिन, भारतवर्ष का प्रतिभाशाली विद्वान्, सच्चा ब्राह्मण, भारत-माता का सुपुत्र, राजा राम-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेडी हारडिंग् ।

इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

(टाइम्स आव् इंडिया से)

From the Illustrated Times of India.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मोहन राय—जिसकी अतुल कीर्ति से आज भी इस देश की दिशायें आलोकित हैं—भारत से हज़ारों मील दूर इँगलेंड के ब्रिस्टल (Bristol) नगर में, भारतवर्ष के लिए शुभकामना करता करता, ब्रह्म में लीन होगया।

भारतभूमि का दुर्भाग्य है कि उसको अपने उस सुपुत्र की भस्म भी न मिल सकी, जिसने अपने को उसके लिए भस्म किया।

आपके सुयोग्य शिष्य, श्रीयुत द्वारकानाथ ठाकुर, ने बड़े उद्योग से आपका समाधि-मन्दिर ब्रिस्टल नगर में बनवाया, जिसके दर्शन करके आज भी इँगलेंड-प्रवासी भारतवासी अपने नेत्र पवित्र करते हैं।

आपके समाधिस्तम्भ पर निम्न-लिखित पंक्तियां खुदी हुई हैं—

Beneath this stone
Rest the remains of Raja Ram Mohan
Rai Bahadoor,
A conscientious and steadfast believer
in the unity of Godhead

He consecrated his life with entire devotion to the worship of the Divine Spirit alone.

To great natural talents he united a thorough mastery of many languages and early distinguished himself as one of the greatest scholars of his day.

His unwearied labours to promote the social, moral and physical condition of the people of India, his earnest endeavours to suppress idolatry and the rite of Satee, and his constant zealous advocacy of whatever tended to advance the glory of God and the welfare of man, live in the grateful remembrance of his countrymen.

This tablet records the sorrow and pride with which his memory is cherished by his descendants.

He was born in Radhanagar in Bengal, in 1774, and died at Bristol, September 27th, 1833.

राजा राममोहन राय न रहे, किन्तु उनकी अतुल कीर्ति की शुभ्र ज्योत्स्ना से भारत-माता का मुख आज भी उज्ज्वल हो रहा है—

कीर्तिर्यस्य स जीवति।

ज्वालादत्त शर्म्मा।

विविध विषय।

१—नया कापी-राइट एक्ट और सरकारी पुस्तकें।

पाठक, एप्रिल १९१४ की सरस्वती में प्रकाशित—"नया कापी-राइट एक्ट"—नामक लेख पढ़िए। उसके पांचवें अंश में हमने यह लिखा है कि नये एक्ट के अनुसार अब किसी को यह अधिकार नहीं कि सरकार की प्रकाशित पुस्तकों का अनुवाद १० वर्षों तक और उनकी पुनरावृत्ति २० वर्षों तक कर सके। इससे सर्व-साधारण की बड़ी हानि है। अतएव संयुक्त-प्रान्त की गवर्नमेंट से हमने पूछा कि इस सम्बन्ध में क़ानून का जो मतलब हमने समझा है वह ठीक है न? इसका जो उत्तर हमें मिला है उसकी नक़ल नीचे दी जाती है:—

"In reply to your letter of the 12th May 1914, making certain enquiries regarding the translation and reproduction of Government publications, under the Indian Copyright Act, 1914, I am directed to say that this Government cannot undertake the work of interpreting the law which has been entrusted to the courts."

अर्थात् क़ानून का अर्थ बताना न्यायालयों का काम है, संयुक्त-प्रान्त की गवर्नमेंट का नहीं। इस पर हमारा निवेदन है कि अपने प्रान्त के हित के लिए नये नये क़ानूनों के मसविदे तैयार करना गवर्नमेंट का काम है या नहीं? हर साल दो एक नये क़ानून बनाकर कौंसिल में वह पास कराती है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

या नहीं ? फिर, किसी सन्देहजनक क़ानून का अर्थ उसे क्यों न बताना चाहिए ? उसे अपनी समझ के अनुसार अर्थ बताने से हानि ही क्या ? न्यायालयों के सामने जब कोई क़ानूनी मामला पेश होगा तब तो वे उसका अर्थ बतावेंहीगे। जो गवर्नमेंट क़ानून बनाती है और बनाने के पहले उसके कारण और उद्देश बताती है वह क्या क़ानून को बिना समझे बूझे ही बनाती है ? कापी-राइट एक्ट भारतीय गवर्नमेंट की लेजिस्लेटिव कौंसिल का पास किया हुआ है। उससे ही वह पूछ लेती। गवर्नमेंट ने जो लीगल रिमेम्ब्ररेन्सर और एडवोकेट रक्खे हैं उनका काम क्या क़ानून का अर्थ बताना नहीं है ? उनसे ही राय लेकर उस राय की सूचना सर्व-साधारण के लाभ के लिए वह दे देती। उसे उड़ता हुआ उत्तर न देना चाहिए था। जिस भाव से हमने प्रश्न किया था उसी भाव से गवर्नमेंट को हमें उत्तर भी देना था। गवर्नमेंट के उदार व्यवहार से ही प्रजा की सुख-समृद्धि और सन्तुष्टि बढ़ सकती है।

गवर्नमेंट के इस उत्तर से यह ध्वनि निकलती है कि सरकारी पुस्तकों के अनुवाद और पुनरावृत्ति के सम्बन्ध में नये क़ानून का जो अर्थ हमने समझा है वही ठीक है। इस दशा में, गवर्नमेंट की प्रकाशित पुस्तकों के अनुवाद आदि का मार्ग ही बन्द सा हो गया समझिए। अनुवाद के लिए १० और पुनरावृत्ति के लिए ५० वर्षों तक ठहरने के लिए लेखकों को मजबूर करना प्रजा के लिए बहुत ही हानिकारक है। अतएव जिन माननीय मेम्बरों ने, कौंसिल में, बिना उँगली उठाये, इस क़ानून को पास कराया है उन्हें चाहिए कि इस हानि के प्रतीकार की अब चेष्टा करें।

२—अँगरेज़ अफ़सरों को भारतीय भाषाओं की शिक्षा।

जिन्हें ज्ञानसम्पादन का चसका होता है वे बिना प्रेरणा के और बिना लोभ दिखाये ही अन्य भाषायें सीखते और उनके साहित्य में भरे हुए ज्ञान की प्राप्ति करते हैं। पर यह बात विलायत से इस देश में आये हुए अफ़सरों में बहुत कम पाई जाती है। अरबी, फ़ारसी और संस्कृत का ज्ञान-सम्पादन करना तो दूर रहा, बिना प्रेरणा और सरकारी आज्ञा के वे यहां की वर्त्तमान भाषायें भी सीखने का बहुत कम कष्ट उठाना चाहते हैं। इसीसे गवर्नमेंट तरह तरह के पुरस्कार देकर उन्हें यहां की भाषायें सीखने के लिए उत्साहित करती है। इस पुरस्कार-दान आदि के नियम हैं। उनमें गवर्नमेंट ने, अभी हाल ही में, परिवर्त्तन किया है। कृषि, जङ्गल, पुलिस, पशुचिकित्सा, प्रबन्ध, न्याय, शिक्षा इत्यादि से सम्बन्ध रखनेवाले मुहकमों के अफ़सरों के लिए तीन तरह की परीक्षायें नियत हैं—उत्तम, मध्यम और निकृष्ट। वर्त्तमानकालीन प्रादेशिक भाषाओं के अतिरिक्त संस्कृत, अरबी, फ़ारसी और पाली में भी परीक्षायें होती हैं। यहाँ, इस देश में, आने पर ५ से १० वर्षों तक निकृष्ट और १० से १५ वर्षों तक मध्यम परीक्षा देने का समय निर्दिष्ट है। उत्तम परीक्षा के लिए समय की सीमा निर्दिष्ट नहीं। परीक्षाओं के लिए तैयारी करने के इरादे से यदि कोई छुट्टी लेकर देशान्तर में रहना चाहे तो उसे ६ महीने की छुट्टी भी मिल सकती है। परीक्षा पास करनेवालों को अब ७५०) से लेकर ५०००) तक के इनाम मिलेंगे। इनाम अब भी मिलते रहे हैं। पर उनकी रक़म अब बढ़ा दी गई है। इससे सूचित होता है कि थोड़ी रक़म इनाम में पाने के लोभ से काफ़ी परीक्षार्थी नहीं मिलते थे। इसी से ये रक़में बढ़ाई गई हैं। क्योंकि जो काम और बातों से नहीं होते, रुपया उन्हें भी करा लेता है। भारतीय युवक हज़ारों रुपया ख़र्च करके अँगरेज़ी पढ़ते और बड़ी बड़ी परीक्षायें पास करते हैं। तिस पर भी उन्हें कठिनता से छोटी मोटी नौकरी मिलती है। इधर जो लोग विलायत से बड़े बड़े पदों पर नियत होकर यहां आते हैं उनमें से अधिकांश, हज़ारों रुपये के इनाम का लालच दिखाया जाने पर भी, यहां की भाषायें जी लगा कर नहीं सीखते। फल यह होता है कि उनके सुभीते के लिए भारतीय भाषाओं में लिखे गये कागज़-पत्रों के एक एक टुकड़े का अनुवाद कराना पड़ता है। इससे राजा और प्रजा दोनों की हानि होती है। एक बात हमारी समझ में नहीं आती। अरबी, फ़ारसी आदि की परीक्षायें पास कर लेने पर अधिक इनाम क्यों मिलना चाहिए ? इन परीक्षाओं के विशेष ज्ञान से शासन और राज्यकार्य्य में क्या अधिक सुभीता हो सकता है ? अधिक सुभीता तो वर्त्तमान काल की प्रान्तीय भाषाओं का विशेष ज्ञान प्राप्त करने ही से हो सकता है। इन प्राचीन भाषाओं के ज्ञान की बदौलत पुरातत्त्वविषयक खोज का काम अवश्य हो सकता है। पर उससे सर्व-साधारण को क्या लाभ ? उन्हें लाभ तो तभी पहुँच सकता है जब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विलायती अफ़सर उनकी बातें अच्छी तरह समझ सकें, उनके साथ खटाखट बातचीत कर सकें, उनकी भाषा पढ़ सकें और लिख भी सकें। पर ऐसे कितने अफ़सर हैं जिन्होंने प्रान्तीय भाषायें लिखने-पढ़ने में विशेष विज्ञता प्राप्त की हो। अतएव परीक्षा के नियमों और इनाम की इन रक़मों में परिवर्त्तन होना चाहिए।

इस सम्बन्ध में एक बात और भी विचारणीय है। मर्दुमशुमारी की रिपोर्टों के लेखक हिन्दी का प्रचार हिन्दुस्तान के कोने कोने में बताते हैं। यहां तक कि ये मदरास, आसाम और ब्रह्मदेश तक में उसके बोलने और समझनेवालों का पता देते हैं। पर गवर्नमेंट के सलाहकार और अधिकारी, कितने ही प्रान्तों के अफ़सरों के लिए, हिन्दी पढ़ने और उसमें परीक्षा देने की कुछ भी ज़रूरत नहीं समझते। यह नोट हम ६ जून १९१४ के गैज़ट आव् इंडिया के आधार पर लिख रहे हैं। उसमें संयुक्त-प्रान्त, मध्य-प्रान्त, बङ्गाल और विहार-उड़ीसा के सूबों के लिए ही हिन्दी की परीक्षा नियत की जाने का उल्लेख है, और प्रान्तों के लिए नहीं। पञ्जाब, पश्चिमोत्तर सीमा-प्रान्त, ब्रह्मदेश, मदरास और बम्बई में हिन्दी-परीक्षा नहीं रक्खी गई। पर उर्दू की परीक्षा सभी प्रान्तों के लिए है। मदरास और ब्रह्मदेश के अफ़सर भी उर्दू सीख कर उसकी परीक्षा दे सकते हैं। परन्तु यदि कोई हिन्दी सीखना चाहे तो वह परीक्षा नहीं दे सकता। यह प्रजा के सुभीते की बात नहीं। प्रजा की भाषा जानने से हाकिम प्रजा की बात समझ सकते हैं। जिन प्रान्तों में हिन्दी-परीक्षा नहीं रक्खी गई उनमें लाखों आदमी ऐसे हैं जो उर्दू नहीं, हिन्दी ही जानते हैं। भला ब्रह्मदेश और मदरास में उर्दू का क्या काम? अतएव इन हिन्दी बोलनेवालों के सुभीते का ख़याल गवर्नमेंट को रखना था। आशा है, आगे वह अवश्य रक्खेगी।

३—आर्य्यसमाचार की संस्कृत और हिन्दी।

आर्य्यसमाज में जिन लोगों ने नाम लिखाये हैं उनमें से बहुसंख्यक लोग हिन्दी नहा जानते और देवनागरी नहीं पढ़ सकते; लिख सकना तो दूर की बात है। तिस पर भी ऐसे कितने ही सज्जन आर्य्यसमाजों के मन्त्री और सभापति तक हैं। ये लोग श्रुतियों का त्रिलोक से न्यारा अर्थ करने और स्मृतियों तथा पुराणादिकों की बेधड़क धज्जियां उड़ाने को सदा ही कमर कसे रहते हैं। कानपुर से आर्य्य-समाचार नाम की एक मासिक पुस्तक उर्दू में निकलती है। जो महाशय इस पुस्तक के सम्पादक हैं उनके नाम के ठीक ऊपर, टाइटिल पेज पर, इस पुस्तक का नाम देवनागरी में भी छपता है—उर्दू में آریہ سماچار और हिन्दी में 'आर्य्या-समाचार'! पुस्तक उर्दू में निकलती है; उसका नाम फ़ारसी-अक्षरों में छाप देना ही काफ़ी था। बेचारी देवनागरी पर अत्याचार करने की कौन बड़ी ज़रूरत थी? परन्तु इस पुस्तक के सम्पादक ने टाइटिल पेज के ऊपर ही अपनी वेदज्ञता का भी प्रमाण दिया है। सबसे ऊपर तो आपने फ़ारसी-अक्षरों में एक اوم छापा है। उसे चाहे आप ओं पढ़िए, चाहे अओम्, चाहे अऊम, चाहे अउम, चाहे और कुछ। और, फिर, उसके नीचे, "विद्ययामृतमश्नुते" को बिगाड़ कर आपने उसे इस तरह छापा है:—

विक्ययाऽ मृतमश्नते (!!!)

विश्वास न हो तो आप एप्रिल १९१४ का आर्य्य-समाचार देख लीजिए।

इस पुस्तक के भीतर, मज़मूनों में संस्कृत के श्लोकादि कभी कभी उद्धृत किये जाते हैं। उनकी भी बहुधा ऐसी ही दुर्दशा होती है। इसीसे, सम्पादक महाशय को सचेत करने के लिए, हमें यह नोट लिखना पड़ा। देवनागरी लिखने में यदि कापीनवीस से अशुद्धियां हो जायँ तो प्रूफ़ में तो उन्हें ठीक कर देना चाहिए। आशा है, आगे से, आप समझ बूझ कर काम करेंगे। देवनागरी-लिपि और संस्कृत तथा हिन्दी-भाषा की दुर्दशा करने से आपकी कीर्त्ति बढ़ने की नहीं।

४—तामील भाषा का एक बृहत्कोश।

मदरास में तामील भाषा का एक बहुत बड़ा कोश तैयार हो रहा है। मदरास की गवर्नमेंट ख़ुद ही इस कोश की रचना करा रही है। इस काम के लिए उसने एक लाख रुपया ख़र्च करने की मंज़ूरी दी है। उसने पांच आदमियों की एक कमिटी बना दी है। मदरास-विश्वविद्यालय के अधिकारियों की निगरानी में इस कोश का काम हो रहा है। आज तक तामील के जितने कोश बन चुके हैं वे सब इकट्ठे किये गये हैं। भाषा के प्रसिद्ध प्रसिद्ध ग्रन्थों की जांच-पड़-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताल में कई विद्वान् लगे हुए हैं। वे उनसे शब्द छांट रहे हैं। कोई साढ़े तीन हज़ार पारिभाषिक शब्दों के अर्थ और उनके प्रयोगों के उदाहरण लिखे जा चुके हैं। ये शब्द दूसरे कोशों में नहीं मिलते। अब तक ३१ हज़ार के ऊपर स्लिपें लिखी जा चुकी हैं। प्रत्येक स्लिप (काग़ज़ के टुकड़े) पर एक एक शब्द लिखा गया है। काग़ज़ के यही टुकड़े वर्ण-क्रमानुसार रख कर शब्दों का सम्पादन किया जायगा। इस कार्य का आरम्भ हुए डेढ़ वर्ष से ऊपर हो चुका। अब तक १५ हज़ार रुपया इस काम में ख़र्च हुआ है, परन्तु वर्णमाला का पहला अक्षर भी सम्पूर्णता को नहीं पहुँचा। इससे सूचित होता है कि पूरे कोश के निर्म्माण में एक लाख से अधिक रुपया ख़र्च होगा। जिन शब्दों का सङ्कलन हो चुका है उन्हें देख कर तामील भाषा के विद्वानों ने असन्तोष प्रकट किया है। कोश-रचना के अधिकारियों की प्रार्थना पर उन्होंने कोश के तैयार हुए पृष्ठ देख कर यह राय दी कि कोश का सम्पादन योग्यतापूर्वक नहीं हो रहा है। शब्दों के जो अर्थ लिखे गये हैं वे बहुधा ठीक नहीं। उनमें बहुत कुछ भ्रम और दोष हैं। यदि इसी प्रकार काम हुआ तो यह कोश सर्वमान्य न होगा। इन सम्मतियों से गवर्नमेंट और कोश के सम्पादक अवश्य ही लाभ उठावेंगे। पादरी जे० एस० चैंडलर सम्पादकों की पूर्वोक्त कमिटी के सभापति हैं। वे लङ्का गये थे। वहां तामील भाषा के कुछ विशेष शब्द बोले जाते हैं। उनका उन्होंने वहां संग्रह किया है। अब, सुनते हैं, वे छुट्टी लेकर विलायत जायँगे और इँगलेंड तथा योरप के अन्य देशों में तामील भाषा के जो विशेषज्ञ हैं उनकी सलाह लेंगे। इस प्रकार गवर्नमेंट इस कोश को सर्वमान्य बनाने की चेष्टा कर रही है। तिस पर भी उसमें दोषों का रह जाना सम्भव है। बात यह है कि कोश बनाने का काम सहज नहीं। बहुज्ञ विद्वान् और साहित्य के पूर्ण ज्ञाता ही इस काम को अच्छी तरह कर सकते हैं। प्रत्येक पेशे, प्रत्येक विज्ञान और प्रत्येक शास्त्र के पारिभाषिक और विशेषार्थ-सूचक शब्दों का संग्रह करना, उनके प्रयोगों के उदाहरण देना और भिन्न भिन्न प्रान्तों के ग्राम्य शब्दों की भी तालिका बनाना बड़े परिश्रम, अध्यवसाय और योग्यता का काम है।

५—हरद्वार का गुरु-मण्डलाश्रम और पुस्तकालय।

हरद्वार के गुरु-मण्डलाश्रम के मैनेजर श्रीयुत हरिस्वरूप जी ने एक छोटा सा लेख और आश्रम का एक फोटो भेजा है। फोटो अन्यत्र प्रकाशित है। लेख का आशय नीचे दिया जाता है:—

"उदासी साधु श्रीमान् बालराम स्वामी बड़े विद्वान्, बड़े दयालु और सच्चे साधु थे। उनकी कीर्त्ति-रक्षा के लिए उनके प्रधान शिष्य श्रीयुत आत्मस्वरूप स्वामी ने हरद्वार स्टेशन के पास गुरुमण्डल नामक एक आश्रम बनवाया है। उसमें पञ्च-देवों की प्रतिमायें स्थापित की गई हैं। उसी के पास तीर्थ-यात्रियों और साधु-संन्यासियों के ठहरने के लिए अन्नदान का भी प्रबन्ध है। सबसे बड़ी बात स्वामी जी ने यह की है कि इस आश्रम में एक प्रकाण्ड पुस्तकालय भी खोल दिया है। पुस्तकें संस्कृत-भाषा में हैं। वेद, दर्शन, स्मृति, पुराण, काव्य, नाटक आदि साहित्य की भिन्न भिन्न शाखाओं के ग्रन्थों का इसमें उत्तम संग्रह है। अनेक पुस्तकें हस्तलिखित हैं और बहुत पुरानी हैं। कितने ही ग्रन्थ तो दुष्प्राप्य हैं। हरिवंश-पुराण की एक प्रति इस पुस्तकालय में अनमोल है। वह सचित्र और सुवर्णरेखा-रञ्जित है। इस पुस्तक का मूल्य एक लाख रुपये से भी अधिक कूता जाता है। जो चाहे इस पुस्तकालय में पुस्तकावलोकन और अध्ययन कर सकता है। ६ जून १९१४ को इस आश्रम में एक सभा हुई। उसमें बड़े बड़े विद्वान् पधारे। कई प्रसिद्ध वक्ताओं की वक्तृतायें हुईं। अनेक महाशयों ने इस पुस्तकालय की उन्नति के अभिप्राय से सहायता करने की प्रतिज्ञा की।"

तीर्थों में ऐसे पुस्तकालयों का खुलना विशेष लाभदायक और मङ्गलजनक है।

६—हिन्दी में फ़ारसी-अरबी के अनावश्यक शब्द।

देशी राज्यों के राजे, यदि चाहें तो, प्रजा के हित के लिए बड़े बड़े काम कर सकते हैं, प्रजा को अधिक समृद्ध और शिक्षित बना सकते हैं, उनकी हर तरह से उन्नति कर सकते हैं। बरोदा, माइसोर और ट्रावनकोर इस बात के प्रमाण हैं। परन्तु अधिकांश देशी रियासतों की दशा बहुत ही शोचनीय है। उन्हें अपने घर ही की ख़बर नहीं; प्रजा के घर की याद उन्हें क्यों आने लगी। वे स्वयं ही सैकड़ों व्यसन-वारीशों में निमग्न हैं; दूसरों को शिक्षित और उन्नत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे बेचारे भला क्या करेंगे। और विषयों को जाने दीजिए। यदि यहां के राजे-महाराजे चाहें तो अपनी मातृभाषा की यथेष्ट उन्नति कर सकते हैं। उसका प्रचार वे अपने राज्य में बढ़ा सकते हैं और अनेक उपयोगी ग्रन्थों की रचना कराकर हज़ारों, लाखों, करोड़ों आदमियों को लाभ पहुँचा सकते हैं। परन्तु इनमें से अधिक राजे-महाराजे और तअल्लुक़ेदार तो विद्या से प्रायः पूरे ही विमुख हैं; जो साक्षर और सुशिक्षित हैं उनका भी ध्यान पोलो, टेनिस, सान्ध्य-भोज आदि को छोड़ कर और बातों की तरफ़ बहुधा जाता ही नहीं। कुछ राज्यों में फ़ारसी अक्षरों की जगह, राम राम करके, देवनागरी अक्षरों को मिल गई है। परन्तु भाषा अब भी वही फ़ारसी-अरबी के शब्दों से लदी हुई काम में लाई जाती है। प्रजा के सुभीते ही के लिए उर्दू की जगह हिन्दी को दी गई है। इसका विचार न करके कर्म्मचारी लोग पूर्ववत् "हस्ब इक्तज़ाये राय", "तारीख़ मुअय्यना", "इस्तेहक़ाक़" और "मुतसव्विर" के सदृश महाक्लिष्ट शब्द और मुहावरे देवनागरी में लिखे हुए काग़ज़ों, इश्तहारों और परवानों में ठूँसते चले जाते हैं। श्रीयुत विश्वम्भरदास गार्गीय ने झांसी से ऐसे कितने ही शब्दों की एक तालिका भेजी है, जिसे उन्होंने ग्वालियर-राज्य के एक इश्तहार की इबारत से नक़ल किया है। गार्गीय महाशय को शायद मालूम नहीं कि महाराजा सेंधिया स्वयं ही ऐसे शब्दों का प्रयोग, अपने व्याख्यानों में, बहुधा करते हैं। यहां तक कि उनकी राजधानी से हिन्दी-अँगरेज़ी में, राज्य की तरफ़ से, जो अख़बार निकलता है उसमें भी कभी कभी ज़बरदस्त उर्दू में लिखे हुए लेख प्रकाशित होते हैं। शब्द चाहे जिस भाषा के हों, यदि वे सब की समझ में आने योग्य हैं तो उनका प्रयोग होना ही चाहिए। परन्तु ग्वालियर-राज्य में फ़ी सदी ऐसे कितने आदमी होंगे जो इस्तेहक़ाक़ और इक्तज़ाय का मतलब समझते होंगे। यदि ऐसों की संख्या ५० फ़ी सदी से कम हो तो इन विदेशी शब्दों के बहाने, प्रजा के सामने, लोहे के चने रखना अत्यन्त अनुचित है।

७—श्रीयुत बाल गङ्गाधर तिलक की नई पुस्तकें।

पहले की तरह इस दफ़े भी श्रीमान् तिलक ने जेल में पुस्तक-प्रणयन-सम्बन्धी बहुत काम किया। छः साल में आपने दो पुस्तकें प्रायः पूरी लिख डालीं। एक पुस्तक तो आपने अँगरेज़ी में लिखी है और एक मराठी में। १८९३ में आपने ओरायन (Orion) नाम की एक पुस्तक लिखी थी। तब से अनेक नई नई बातें मालूम हुई हैं। इस कारण उसको आपने फिर से लिखा है। उसकी भ्रमपूर्ण बातों का संशोधन करके, और बहुत सा नया मज़मून भी लिखकर आपने उसका विस्तार बढ़ा दिया है। यह पुस्तक वैदिक विषयों से सम्बन्ध रखती है। इसमें वैदिक काल का निर्णय है। इसका नया नाम होगा—Vedic Chronology। आपकी दूसरी पुस्तक गीता-रहस्य है। यह मराठी में है। इसके लिखे जाने की तैयारी का समाचार बहुत पहले प्रकाशित हो चुका है। अब यह पुस्तक प्रायः तैयार हो चुकी है। आशा है, शीघ्र ही निकलेगी।

आपकी Arctic Home in the Vedas नाम की प्रसिद्ध पुस्तक पर कई लेख और नोट सरस्वती में निकल चुके हैं। उसके संशोधन के लिए भी आपने यथेष्ट सामग्री एकत्र कर ली है। उसे भी आप फिर से लिखकर छपावेंगे। उसके सम्बन्ध में भूगर्भ-विद्या के किसी प्रतिष्ठित विद्वान् से आपको कुछ सलाह लेनी है। एतदर्थ शायद आप जर्मनी जायँ। तिलक महाशय के इस सदुद्योग की कौन न प्रशंसा करेगा? महामना विद्वान् विपत्ति में भी परोपकार-व्रत से विरत नहीं होते; सर्वसाधारण के लाभ के लिए वे कोई न कोई काम करते ही रहते हैं।

८—बम्बई में एक उपयोगी अस्पताल।

बम्बई में हिन्दू-स्त्रियों के लिए एक अस्पताल है। उसका नाम है—The Ruxmani Hindu Lying-in-Hospital। इसे एक प्रकार का प्रसूतिकागार कहना चाहिए। इसमें प्रसूता स्त्रियों की सेवा-शुश्रूषा आदि होती है। प्रसूति के लिए भी यहां स्त्रियां आती हैं। इस अस्पताल के प्रधान डाक्टर ने इसकी एक रिपोर्ट हमें भेजी है। यह रिपोर्ट १९१२-१३ ईसवी की है। उस साल २६० स्त्रियों ने इस अस्पताल में बच्चे जने। उनमें से ख़ास ख़ास स्त्रियों का वर्णन पढ़ने से मालूम होता है कि यह अस्पताल बड़े काम का है। परोपकार से प्रेरित होकर जिसने यह अस्पताल खोला है उसकी शतमुख से प्रशंसा करने को जी चाहता है। इस रिपोर्ट में लिखा है कि २७ दिसंबर १९१३ को इस अस्पताल में एक दक्षिणी स्त्री ने लड़कियों का एक युग्म जना। एक लड़की तो मरी हुई ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पैदा हुई; दूसरी पृथ्वी पर गिरते ही, एक सांस लेकर, मर गई। प्रसूति में माता को कष्ट तो बहुत हुआ; पर बच गई। प्रसूति के ग्यारहवें दिन उठ कर वह अपने घर गई। यमज लड़कियों का पेट एकही में जुड़ा था; नाभिनाल भी दोनों का एकही था। इस संख्या में उनका एक चित्र, पूर्वोक्त रिपोर्ट से लेकर, प्रकाशित किया जाता है।

९—भारत में जावा और जापान के माल की वृद्धि।

अब तक योरप और अमेरिका के माल से ही भारत के बाज़ार भरे पड़े थे; अब एशिया के भी एक देश और एक टापू ने उस पर माली चढ़ाई की है। किसी समय यहां इतनी शकर और इतना गुड़ होता था कि यहीं से अन्य देशों को भी जाता था। पर धीरे धीरे योरपवालों ने हमारे इस व्यापार को नष्ट-प्राय कर दिया। अनेक कारणों से विदेशी शकर की इतनी कटती यहां होने लगी कि शकर के सैकड़ों-हज़ारों कारख़ाने बन्द हो गये। स्वदेशी जागरण के कारण इस व्यापार ने उन्नति के कुछ लक्षण दिखाये थे, पर कुछ ही दिनों में वे लक्षण भी लुप्त हो गये। अब जावा जैसा छोटा सा टापू भी करोड़ों रुपये की शकर इस देश में पाटता चला जा रहा है। जावा से यहां तक का किराया देने पर भी, वहां की शकर यहां सस्ती पड़ती है। इसका नतीजा अब यह होगा कि शकर का जो थोड़ा बहुत काम, अब भी, यहां होता है वह भी न होगा। कपड़े की तरह शकर के लिए भी हमें जर्मनी, मारिशस और जावा का मुँह ताकना पड़ेगा। यदि गवर्नमेंट किसी कारण से इस व्यापार-नाश को नहीं रोक सकती तो क्या भारतीयों को स्वयं भी इसे रोकने की चेष्टा न करनी चाहिए? शकर के बड़े बड़े कारख़ानों के मालिकों को चाहिए कि कुछ ऐसे लोगों को जावा भेजें जो शकर के काम से अभिज्ञ हों। वे वहां इस बात का ज्ञान प्राप्त करें कि किस तरह वहां शकर बनती है और वे कौन सी बातें हैं जिनके कारण वहां की शकर, जहाज़ का किराया देकर भी, यहां सस्ती पड़ती है।

उधर जापान दियासलाई, कांच की चीज़ें, रेशमी और सूती कपड़े तथा जूट आदि के चालान से भारत के बाज़ारों को भरता चला जा रहा है। उसका यह व्यापार दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति कर रहा है। जितने रेशमी कपड़े यहां विदेश से आते हैं उनका दो-तिहाई केवल जापान से आता है। जापान की दियासलाइयों के मुक़ाबले में स्वीडन की दियासलाइयां उठती जाती हैं। चीनी के बर्तन भी जापान से धड़ाधड़ आ रहे हैं। धातुओं की आमदनी भी वहां से बहुत होती है। एक बात ध्यान में रखने योग्य यह है कि जापान यहीं से रुई मोल लेता है और उसी रुई के कपड़े बना कर वह यहीं भेजता है और करोड़ों रुपये का मुनाफ़ा उठाता है। रुई पर भारत से जापान तक का किराया और उसी से बने हुए कपड़े पर जापान से भारत तक का फिर किराया! इस तरह दो दफ़े किराया देकर भी जापान अपना कपड़ा सस्ते दामों यहां बेचता है!!! यहां के कारख़ानेदारों और मिलों के मालिकों को चाहिए कि इन बातों की वे जांच करें, जापान में जिन लोगों ने औद्योगिक शिक्षा पाई है उनसे सलाह लें और अपनी त्रुटियां दूर करके जापान का मुक़ाबला करें। अन्यथा कपड़े की दस पांच मिलें, जो इस समय यहां चल रही हैं, बन्द हुए बिना न रहेंगी।

१०—माननीय बाबू गङ्गाप्रसाद वर्म्मा।

गत जून की २४ तारीख़ को, रात के ११-३० बजे, नैनीताल में, बाबू गङ्गाप्रसाद वर्म्मा का देहान्त हो गया। आपकी मृत्यु से युक्तप्रान्त के इने गिने जातिहितैषी पुरुषों में जो कमी हो गई वह आशा नहीं कि शीघ्र पूर्ण हो जाय। ल[illegible] का ही नहीं, सारे प्रान्त का, प्रत्युत भारत-वर्ष का दुर्भाग्य है कि उसके कर्त्तव्यपरायण जातिहितैषी सज्जन उठते—और बे वक्त—उठते जाते हैं और उनकी जगह काम करने वाला कोई दिखाई नहीं देता। कौन कह सकता था कि बाबू गङ्गाप्रसाद जैसा सुदृढ़-शरीर और स्वस्थ मनुष्य इतना शीघ्र लीला-संवरण कर देगा। जिन्होंने आपको देखा है वे जानते हैं कि आपका शरीर कितना मज़बूत, आपका मुख कितना तेजस्वी और आपका स्वभाव कितना नम्र था। आपके उठ जाने से युक्त-प्रान्त का एक चमकता हुआ नक्षत्र टूट पड़ा। लुटी और प्रभा-हीन लखनऊ नगरी में यदि किसी ने जान डाली और वहां के निवासियों को अनेक प्रकार से उत्साहित किया तो गङ्गाप्रसाद ही ने किया।

आपका जन्म सन् १८६३ ई० में हुआ। आपकी शिक्षा का आरम्भ सीतापुर में हुआ। बाद को कुछ काल तक लखनऊ में भी आपने अध्ययन किया। आपने विशेष शिक्षा नहीं प्राप्त की। परन्तु अपने अध्यवसाय और अपनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्याभिरुचि के कारण अपने ज्ञान की मात्रा आपने इतनी बढ़ा ली कि आप एक सुशिक्षित और सुविज्ञ पुरुष होकर मरे। अपने पुरुषार्थ से मनुष्य कितना ऊँचा उठ सकता है, यह बात प्रत्यक्ष देखना हो तो बाबू गङ्गाप्रसाद के जीवन-चरित को देखना चाहिए। आपका सर्वसाधारण-जीवन समाचारपत्र-सम्पादन से आरम्भ हुआ। आपके निकाले हुए दो पत्र, एक अँगरेज़ी में और दूसरा उर्दू में, बड़ी उत्तमता से निकलते हैं। आपकी लेख-शैली हृदयाकर्षक थी और विचार विवेक-पूर्ण थे। आप अपने विचार ख़ूब समझ बूझ कर प्रकाशित करते थे। आपकी सलाहें पक्की और आपकी प्रार्थनायें सदा युक्ति-युक्त हुआ करती थीं। बाबू गङ्गाप्रसाद जी की स्त्री का जब देहान्त हुआ उस समय आपकी आयु केवल २२ वर्ष की थी। विवाह का फलस्वरूप एक पुत्र होने के कारण आपने दूसरा विवाह न किया। शोक है, वह पुत्र भी, कुछ समय हुआ, बाबू जी के सामने ही, स्वर्ग-गमन कर गया। बाबू साहब २२ वर्ष की आयु से मरण-पर्य्यन्त बड़े संयम के साथ अपना जीवन व्यतीत करते रहे। आपके द्वारा अनेक लोकोपकारी कार्य्य हुए। कालीचरण-हाईस्कूल और छेदालाल-धर्म्मशाला आपके ऐसे कार्य्यों के नमूने हैं। जब तक अमीनाबाद-पार्क है तब तक, लखनऊ में, बाबू गङ्गाप्रसाद का नाम लोगों के हृत्पटल पर खुदा रहेगा। आपकी कीर्त्ति का [illegible] एक बढ़िया स्मारक है। लखनऊ-म्यूनिसिपैलिटी के आप २७ वर्ष से मेम्बर थे। आप लाट साहब की कौंसिल के भी योग्य मेम्बर थे। गवर्नमेंट की ओर से चुने जाकर कई कमिटियों के मेम्बर भी आप रह चुके थे। मृत्यु के पहले आप नैनीताल में एक ऐसी ही कमिटी में शरीक होने गये थे। कौन जानता था कि आपकी यह यात्रा अन्तिम संसार-यात्रा है।

सबसे बड़े परिताप की बात यह है कि बाबू गङ्गाप्रसादजी की वृद्धा माता को यह हृदय-विदारक दुःख सहना पड़ा। रत्न-रूप पुत्र के उठ जाने से उनकी क्या दशा हुई होगी, इस बात का चिन्तन मात्र करने से हृदय शोकाभिभूत हो जाता है।

अनेक लोकोपकारी कार्य्य सम्पन्न करने के कारण गवर्नमेंट ने आपको रायबहादुर की उपाधि से—जो आपके लिए बहुत ही छोटी और अनुपयुक्त उपाधि थी—सुशोभित किया। आप कांग्रेस के बड़े भक्त थे। जिस दिन से आप कांग्रेस में शरीक हुए, आज तक उसके जितने अधिवेशन हुए किसी में आप अनुपस्थित नहीं हुए। कांग्रेस के साथ होने वाली सभाओं के आप सभापति भी हुए। आपका एक मात्र उद्देश जातिसेवा था और उसकी पूर्त्ति में आपने अपना समय, धन और शक्ति आदि सभी कुछ लगा दिया।

ज्वालादत्त शर्म्मा।

११—जोज़ेफ़ चेम्बरलेन।

इँगलेंड के बड़े प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ जोज़ेफ़ चेम्बरलेन, ७८ वर्ष की उम्र में, गत जूलाई महीने में, इस संसार से कूच कर गये। प्रसिद्धि बुरा काम करने से भी होती है और भला काम करने से भी। मरने पर मनुष्य के बुरे कामों को याद न करना चाहिए, यह लोकाचार की आज्ञा है। परन्तु चेम्बरलेन की मृत्यु पर शोकसूचक लेख लिखते समय अनेक समाचारपत्रों ने इस लोकाचार की कुछ भी परवा नहीं की। उन्होंने इस राजनीतिज्ञ के बुरे कामों का लेखा भी प्रकट कर दिया है। तथापि, साथ ही, उन्होंने इनके गुणों और बहुकाल-व्यापी राजनैतिक कामों का उल्लेख भी किया है। देशदेशान्तरों तक से अनन्त सहानुभूतिसूचक तारों और पत्रों की वर्षा इनके कुटुम्बी जनों पर हुई है। पारलियामेंट के सदस्यों और सचिवों ही ने नहीं, स्वयं महाराज पञ्चम जार्ज ने भी इनकी मृत्यु पर दुःख प्रकट किया है। योरप के कई बादशाहों ने भी शोकसूचक तार भेजे हैं।

तीस चालीस वर्ष की उम्र तक वाणिज्य-व्यवसाय करके जोज़ेफ़ चेम्बरलेन ने अनन्त धन-संग्रह किया। तदनन्तर कोई चालीस वर्ष तक ये विलायत के राजनैतिक मामलों में बराबर लगातार उलझे रहे। बीमार रहने और बहुत अशक्त हो जाने के कारण, गत सात आठ वर्षों से, ये इन झंझटों से अलग हो गये थे। परन्तु इसका कारण उदासीनता, विरक्ति या शान्तिसुखैषणा न थी; इसका एक मात्र कारण लाचारी थी। शक्तिहीन हो जाने पर भी ये लकड़ी टेक कर अथवा अपने बड़े पुत्र आस्टिन चेम्बरलेन के कन्धे पर हाथ रख कर महत्त्वपूर्ण सभाओं में कभी कभी पधारते थे। कभी कभी तो ये अपनी पहिएदार आराम-कुरसी पर ही बैठे रहते थे और वह कुरसी ही मजलिस में रख दी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाती थी। यह उम्र और राजनैतिक कामों में यह चाव ! जिस उम्र में हम लोग "गोविन्द, नारायण, माधवेति" की आवृत्तियां करते हैं उस उम्र में ये बाधाविहित या संरक्षित व्यापार की नीति के तत्त्व लोगों को, कुरसी पर पड़े पड़े, समझाते थे !

इँगलेंड के राजनीतिज्ञों के दो दल हैं--एक उदार, दूसरा अनुदार। पहले तो ये उदार दल में थे। पीछे से अनुदार दल में शामिल हो गये। लार्ड ग्लैडस्टन के मन्त्रित्व-काल में आयरलेंड को स्वराज्य देने के क़ानून का मसविदा पारलियामेंट में पेश हुआ। वह आपको न भाया। तब आप उदार दल से अलग हो गये और उस मसविदे के नाश की चेष्टा करने लगे। उसमें आप सफल-मनोरथ हुए। इस काम से आपने बड़ा नाम कमाया। जिस समय उपनिवेशों की रक्षा और निरीक्षण का सूत्र आपके हाथ में था—आप उपनिवेश-सचिव थे—उस समय ट्रांसवाल के बोरों के साथ आपने युद्ध बोल दिया। हज़ारों आदमी काम आये। करोड़ों रुपया फूँक तापा गया। पर विजित होने पर भी ट्रांसवाल प्रायः स्वतन्त्र ही रहा। इससे भी आपका बड़ा नाम हुआ। आपकी तीसरी नामवरी अबाध-वाणिज्य के नाश की चेष्टा से सम्बन्ध रखती है। इस चेष्टा में आपको साफल्य होना तो दूर रहा, आपके विरोधियों की संख्या अवश्य बढ़ गई। स्वयं इन्हीं के दल के दो टुकड़े हो गये। जोज़फ़ चेम्बरलेन ने एक आध दफ़े छोड़ कर बेचारे भारतवासियों के दुःख दूर करने या उनके हितार्थ कुछ कर दिखाने का कभी कष्ट नहीं उठाया।

१२—लेडी हारडिंग का देहावसान।

११ जुलाई को, लन्दन में, लार्ड हारडिंग् की धर्म्म-पत्नी लेडी हारडिंग् का शरीर छूट गया। वे बीमार थीं। रोगनाश के लिए शस्त्र-क्रिया करनी पड़ी। पहले ख़बर आई कि इस क्रिया को उन्होंने बरदाश्त कर लिया; उनकी तबीयत बिगड़ी नहीं। परन्तु इसके बाद ही दूसरा तार आया कि तबीयत बिगड़ रही है। इसके कुछ ही घण्टों बाद उनके मृत्यु-समाचार ने सारे देश को शोकसन्तप्त कर दिया। जिस वाइसराय ने भारत की भलाई के कितने ही काम किये; जिसके प्रयत्न से दक्षिणी अफ़रीका के हज़ारों भारतवासियों के दुःख दूर हुए; बम के गोले से घायल होने पर भी जिसने इस देश के निरपराध निवासियों के लिए एक भी कठोर शब्द नहीं कहा—उसके इस इतने बड़े दुःख से कौन सहृदय दुखी न होगा ! मृत्यु का कोई इलाज नहीं। मृत को जीवित करना किसी के हाथ में नहीं। यदि यह सम्भव होता तो भारतवासी उस इलाज—उस सञ्जीवनी—का प्रयोग करने में कोई बात उठा न रखते। तथापि हमदर्दी से दुःख की यातना कम हो जाती है। अब हमदर्दी दिखाना और सहानुभूति प्रकट करना छोड़ कर हमारे हाथ में और कुछ भी नहीं। अतएव वाइसराय के इस पत्नी-वियोगरूपी हृदय-दाही दुःख से दुखी हुए भारतवासी अपनी आन्तरिक सहानुभूति प्रकट करके ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि लार्ड हारडिंग् को वह इस दुःख के सहन करने की शक्ति दे। लेडी हारडिंग् बड़ी दयालु थीं। देहली में स्त्रियों के डाक्टरी कालेज की प्रतिष्ठा का प्रयत्न उनकी दयालुता ही का फल है। बम की चोट से अपने पति के अच्छे होने पर सारे भारत में लाखों लड़कों को मिष्टान्न और भोजन देना भी उनके दयालुत्व का परिचायक है। इस बालवत्सल लेडी के बच्चे और कितनेही अन्य कुटुम्बी, अन्तकाल में, इसके पास ही थे।

१३—पण्डित बालकृष्ण भट्ट का देहान्त।

भट्टजी, तुम्हारे शरीर-त्याग का समाचार सुन कर बड़ी व्यथा हुई। उस व्यथा की इयत्ता हम किस प्रकार बतावें। हमारा कण्ठ रुँधा हुआ है, हमारे नेत्र साश्रु हैं, हमारा शरीर अवसन्न है। इलाहाबाद में तुम्हारे रहते, वहां जाने पर, यह जन तुम्हारे दर्शनों से बहुधा वञ्चित नहीं हुआ। अपने आने की सूचना भी, वह, प्रायः दो दिन पहले ही, तुम्हें देता रहा है। इसलिए कि तुम मकान ही पर मिलो और तुम्हारा गिलौड़ीदान भी भरा हुआ मिले। तुम्हारी इच्छा न रहते भी तुम्हारे पान हम तुम्हारे पानदान से निकाल निकाल कर खा गये। कितनी ही दफ़े मिठाई और फल तुमसे बलवत् मँगवा कर हमने खाये। और भी न मालूम कितनी तकलीफ़ें तुम्हें दीं। तुम्हें चिढ़ाने में, तुम्हें खिझाने में, तुम्हारे मुख से निकले हुए निर्भर्त्सना-वाक्य सुनने में सुख था। इसीसे तुमको हम दिक़ करते थे; "बाला चिरं चुम्बिता" की याद दिला कर तुम्हारी कटूक्तियां सुनते थे; तरह तरह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंडित बालकृष्ण भट्ट।

इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

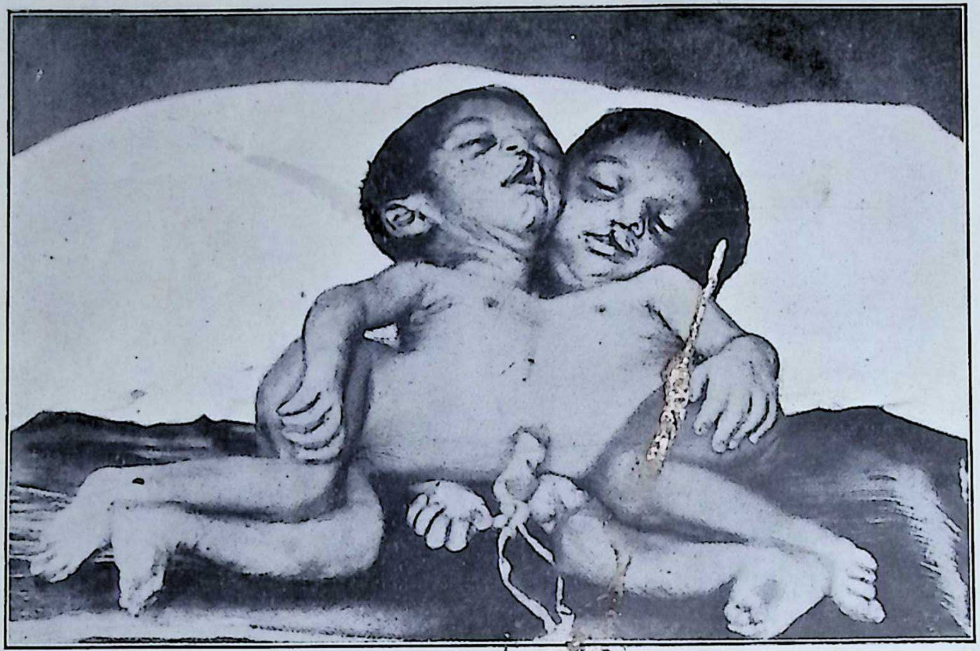

बम्बई के अस्पताल में उत्पन्न लड़कियों का एक जुड़ा हुआ जोड़ा ।

इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की वक्रोक्तियाँ कह कर तुम्हारे क्षणिक, नहीं, कृतक कोप, की वृद्धि करते थे । इससे अपूर्व मनोरञ्जन होता था—एक अनिर्वचनीय सुखानुभव होता था। तुममें हमारी भक्ति थी। इससे तुम हमारी यह सारी धृष्टता क्षमा करते थे; हम पर कृपा करते थे; हमसे स्नेह रखते थे। यही कारण है जो आज हम तुम्हारे लिए "त्वङ्कार" का प्रयोग कर रहे हैं। इस त्वङ्कार के रस से तुम ख़ूब अभिज्ञ थे। इसीसे आज हमने "आप" का बहिष्कार कर दिया है। भट्टजी, अब वे सरस कथायें और पुराने कवियों की वे हृदय-रञ्जिनी उक्तियाँ कहाँ सुनने को मिलेंगी? तुम तो चल दिये!

संस्कृत के सुपण्डित—कायस्थ-पाठशाला में संस्कृत के प्रोफ़ेसर—होकर भी तुमने हिन्दी को आश्रय दिया। अँगरेज़ी से अभिज्ञ होने पर भी तुमने हिन्दी का अनादर नहीं किया। हिन्दीप्रदीप को निकाल कर, बहुत कुछ कष्ट उठाये [illegible] तुमने उसे बन्द नहीं किया। तीस [illegible] वर्ष तक उसे निकालते ही चले गये। [illegible]ढ़ कर मातृभाषा-प्रेम और क्या हो सकता है?

प्रोफ़[illegible]से पृथक् हो[illegible] तुमने हिन्दी की सेवा नहीं छोड़ी। पङ्गु हो जाने पर भी तुम उसी में निरत रहे। यहाँ तक कि नेत्रों के धोखा देने पर भी तुम उस व्रत के व्रती बने ही रहे। भट्टजी, तुम्हारी कौन कौन बात याद करें! तुम्हारे जीवन की अन्यान्य घटनाओं का उल्लेख और लोग करें। हमारे लिए तो यह अवसर इतना ही कहने का है। अब हम तुम्हारी आत्मा का प्रतिबिम्ब जनार्दन में देखना चाहते हैं। अखिलेश्वर इस आशा को फलवती करे।

१४—भारत-भारती का प्रकाशन।

बाबू मैथिलीशरण गुप्त की भारत-भारती छप गई। इस नोट के निकलने के पहले ही वह शायद प्रकाशित हो जाय। इसके दो संस्करण निकलनेवाले हैं। एक राज-संस्करण, दूसरा साधारण संस्करण। पहला संस्करण ६० पौंड के मोटे चिकने आर्ट पेपर पर छपा है। उस पर कपड़े की सुवर्णवर्णाङ्कित जिल्द रहेगी। मूल्य होगा २) कापी। दूसरे संस्करण की कापियाँ मामूली मोटे काग़ज़ पर छपी हैं। उन पर साधारण जिल्द रहेगी। मूल्य १) कापी होगा। छपाई निर्णयसागर प्रेस की है। पुस्तक की पृष्ठ-संख्या २०० के लगभग है। यह पुस्तक बाबू रामकिशोर गुप्त, चिरगांव, ज़िला झाँसी को लिखने से मिलेगी।

यह काव्य वर्त्तमान हिन्दी-साहित्य में युगान्तर उत्पन्न करनेवाला है। वर्त्तमान और भावी कवियों के लिए यह आदर्श का काम देगा। इसके जो कितने ही अंश सरस्वती में निकल चुके हैं उनसे इसके महत्त्व का अनुमान पाठकों ने पहले ही कर लिया होगा। यह सोते हुओं को जगानेवाला है; भूले हुओं को ठीक राह पर लानेवाला है; निरुद्योगियों को उद्योगशील बनानेवाला है; आत्मविस्मृतों को पूर्व-स्मृति दिलानेवाला है; निरुत्साहियों को उत्साहित करनेवाला है; उदासीनों के हृदयों में उत्तेजना उत्पन्न करनेवाला है। यह स्वदेश पर प्रेम उत्पन्न कर सकता है; यह पूर्व-पुरुषों के विषय में [illegible]भाव का उन्मेष कर सकता है; यह सुख, समृद्धि और कल्याण की प्राप्ति में हमारा सहायक हो सकता है। इसमें वह सञ्जीवनी शक्ति है जिसकी प्राप्ति हिन्दी के और किसी भी काव्य से नहीं हो सकती। इससे हम लोगों की मृतप्राय नसों में शक्ति का सञ्चार हो सकता है—उनमें फिर सजीवता आ सकती है; क्योंकि हम क्या थे और अब क्या हैं, इसका मूर्त्तिमान् चित्र इस में देखने को मिल सकता है। जिन्होंने मुसल्मानों को जगाने और उनका दिल दहलानेवाला हाली का लिखा हुआ, मुसद्दस-नामक काव्य, उर्दू में, देखा है उन्हें उसका स्मरण दिला देने ही से इस काव्य की महत्ता उनकी समझ में आ जायगी। क्योंकि यह उसी के नमूने पर लिखा गया है। आशा है, हम लोग इससे अधिक नहीं तो उतना लाभ तो अवश्य ही उठावेंगे जितना कि मुसल्मानों ने उक्त मुसद्दस से उठाया है। आशा है, सरस्वती के पाठक इसे लेकर एक बार इसे साद्यन्त पढ़ेंगे और पढ़ चुकने पर—

"हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
मिल कर विचारेंगे हृदय से ये समस्यायें सभी"॥

आशा है, भारत-भारती के कर्त्ता के इस किञ्चित् परिवर्तित अनुरोध-वाक्य को मान लेने की कृपा पाठक अवश्य करेंगे।

१५—पाटलिपुत्र

इस नाम का एक नया साप्ताहिक समाचारपत्र बांकीपुर से निकलने लगा है। अब तक (१० जुलाई १९१४ तक) इसके दो अङ्क निकले हैं। इसका सम्पादन योग्यतापूर्वक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता है। कागज़ इसका मोटा- चिकना और टाइप सुन्दर है। हर अङ्क में दो तख्ते कागज़ के ८ पृष्ठ रहते हैं। मूल्य इसका २ रुपये साल है। पाटलिपुत्र का हम सानन्द स्वागत करते हैं। आशा है कि यह पत्र दिन पर दिन उन्नति करता जायगा और कुछ ही दिनों में इसकी गणना नामी पत्रों में होने लगेगी।

इसके दूसरे अङ्क में महामहोपाध्याय श्रीयुत हरप्रसाद शास्त्री का एक लेख, पृथ्वीराजरासौ पर, है। उसमें शास्त्रीजी ने लिखा है कि जो रासौ बनारस से प्रकाशित होकर निकला है वह जाली है। चन्द का बनाया हुआ असल रासौ छोटा ग्रन्थ है। चन्द के वंशजों ने उसमें अपनी अपनी कवितायें जोड़ कर उसे उस आकार को पहुँचा दिया है जिसमें वह बनारस से निकला है। शास्त्रीजी के लेख का कुछ अंश नीचे दिया जाता है:—

"सन् १९०४ में ग्रियर्सन साहब के लिखने पर लार्ड कर्ज़न ने राजपूताना और गुजरात में प्रचलित भाट-बन्दीजनों की ऐतिहासिक कृतियों की खोज के लिए कुछ रुपया देना स्थिर किया। खोज के काम के लिए नागरी-प्रचारिणी सभा और पण्डित सुधाकर द्विवेदी को लिखा गया, पर वह काम काशी से न हो पाया। पाँचवें वर्ष सन् १९०९ में यह काम मुझे सौंपा गया। इस सम्बन्ध में जब मैं राजपूताना गया तब चन्दवरदाई के विषय में कुछ वर्ष पहले जो वादविवाद हुआ था वह याद पड़ा। अतएव मैं चन्द के घर का पता लगाने और उनके वंशजों से मिलने के प्रयत्न में लगा। चन्द का घर मुझे नागौर में मिला। नान्हूराम ब्रह्मभाट इस समय चन्द के मूलवंश में वर्त्तमान हैं।

"नान्हूराम ने हस्तलिखित चार समयों को एशियाटिक सोसाइटी के सामने परसाल उपस्थित किया। इन चार समयों में से पूरा महोबा-समय हम आगे चल कर इस पत्र में छापते हैं। इसके देखने से ज्ञात होता है कि बनारस के छपे पृथ्वीराज-रासौ से यह भिन्न है। मुझको अच्छी तरह याद है कि कोई तीस वर्ष पहले महामहोपाध्याय श्यामलदान ने यह सिद्ध करना चाहा था कि प्रचलित रासौ बिलकुल जाली है। इसके उत्तर में मथुरा के पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या ने काशीनिवासी बाबू श्यामसुन्दरदास की सहयोगिता से पृथ्वीराज-रासौ का बनारस-संस्करण छापा और उसके उपक्रम में श्यामलदान के आक्रमणों से रासौ की रक्षा करने का बहुत प्रयत्न किया। किन्तु मर्म की बात यह है कि चन्द के बेटे झल्ल ने, जो बहुत बड़ा कवि था, अपने बाप के मरने पर, उनके छोटे ग्रन्थ को पल्लवित किया। १८००० श्लोकों का जो छपा हुआ ग्रन्थ है उसमें से जितना कि चन्द और उसकी स्त्री का संवाद है वह झल्ल ने अपनी मां का नाम चिरस्थायी करने को अपनी तरफ़ से जोड़ दिया है। नान्हू से मालूम हुआ कि झल्ल के बाद भी उसके वंशज अकबर के समय तक ग्रन्थ बढ़ाते गये। अकबर ने पृथ्वीराज-रासौ सुनना चाहा था। छपा हुआ ग्रन्थ प्रायः अकबर के समय तक का पल्लवित ग्रन्थ है। इसके बाद और भी जोड़ा गया है, जिससे ग्रन्थ की संख्या सवा लाख श्लोकों की हो गई है, पर वह थोड़े ही [illegible] को याद है। चन्द के वंशज (नागौरवाले) कहते हैं कि मूल पृथ्वी[illegible] कोई तीन या चार हज़ार श्लोक-संख्या का था और वह अ[illegible]न्थ था। चन्द उसे पूरा न कर पाये थे"।

नान्हूराम और शास्[illegible] कथनमात्र [illegible]थ प्रक्षिप्त या जाली नहीं माना जा सकता। इन महाशयों [illegible] कथन ब्रह्मवाक्य नहीं। इन्हें अपनी बात की पुष्टि में प्रमाण देना चाहिए। दुःख की बात है कि शास्त्री जी के सदृश विद्वान् और नामी पुरातत्त्वज्ञ ने भी प्रमाण देने का प्रयास उठाने की आवश्यकता न समझी। इस दशा में कोई भी विचारवान् मनुष्य उनके कथन को आँखें मूँद कर मान लेने का साहस न करेगा।

१६—एक आवश्यक प्रार्थना।

लखनऊ की हिन्दी-साहित्य-सभा के अधिकारियों और कार्य्यकर्त्ताओं से प्रार्थना है कि इन पंक्तियों के लेखक में सम्मेलन का काम करने की योग्यता नहीं। इसके अतिरिक्त उसकी शारीरिक अस्वस्थता भी बाधक है। अतएव कार्य्यकर्त्ताओं को उससे और अधिक पत्र-व्यवहार करने तथा अपने दर्शनों से देहात में उसे कृतार्थ करने का कष्ट न उठाना चाहिए। यह उसके लिए दुःख और दुर्भाग्य की बात है। पर इलाज नहीं; लाचारी है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुस्तक-परीक्षा ।

१—भक्तिरत्नावलिः । श्रीमद्भागवत में ऐसे सैकड़ों श्लोक हैं जो भक्ति-रस से भरे हुए हैं । ऐसे श्लोक प्रायः हर स्कन्ध में हैं । सांसारिक क्लेशों से दुखी होने पर हमें बहुधा इन श्लोकों की शरण लेनी पड़ती है । एकान्त में उनका बार बार पाठ करने से चित्त को बहुत शान्ति मिलती है । जिस रासपञ्चाध्यायी की कुछ लोग नाना प्रकार निन्दा करते हैं उसके अनेक अंशों का पाठ करते करते भावुक जनों की आंखों से अश्रुधारा बहने लगती है। उनके कण्ठ का अवरोध हो जाता है । कभी कभी तो वे विकल और विह्वल तक हो जाते हैंः—

कुर्वन्ति हि त्वयि रतिं कुशलाः स्व आत्म-
न्नित्यप्रिये पतिसुतादिभिरार्तिदैः किम् ॥
तन्नः प्रसीद परमेश्[illegible]र मास्म छिन्द्या
आशां भृतां त्वयि चिर[illegible] ॥
चित्तं सुखेन भवत[illegible]हेषु
यन्निर्वि[illegible] करावाप[illegible]कृत्ये ॥
[illegible] न चलतस्त[illegible]लाद्
यामः कथं व्रजमथो करवाम किं वा ॥ ३४ ॥

ऐसे अनेक श्लोकों पर हमने, अपनी पुस्तक में, निशान कर दिये हैं । इससे उन्हें ढूँढ़ना नहीं पड़ता । अनेक धन्यवाद हैं प्रयाग के पाणिनि-कार्यालय को जिसने ये हमारे निशान किये हुए, तथा और भी अनेक, श्लोक पुस्तक के रूप में अलग ही हमारे लिए सुलभ कर दिये । इसी संग्रह का नाम भक्तिरत्नावलिः है । विष्णुपुरी-नामक किसी संन्यासी के द्वारा यह संग्रह किया गया है । इसमें १३ विरचन या अध्याय हैं । स्मरण, कीर्त्तन, पादसेवा आदि भक्ति के अङ्ग हैं । भागवत के भिन्न भिन्न स्थलों से इन्हीं अङ्गों के अनुरूप श्लोक चुन चुन कर इसके प्रत्येक विरचन में रक्खे गये हैं । उदाहरणार्थ, सातवें विरचन में पादसेवन का निरूपण है । उसमें भागवत के सातवें स्कन्ध के उन्नीसवें अध्याय का दसवां श्लोक रक्खा गया है । इस श्लोक में प्रह्लाद की उक्ति है । यह बात भी श्लोक के हवाले के आगे लिख दी गई है । श्लोक यह हैः—

विप्राद् द्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभ-
पादारविन्दविमुखाच्छ्वपचं वरिष्ठम् ।
मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थप्राणं
पुनाति स कुलं नतु भूरिमानः ॥

श्लोकों के नीचे संग्रहकार ही की लिखी हुई संस्कृत-टीका भी है । पुस्तकान्त में श्लोकों का भावार्थ हिन्दी में भी दे दिया गया है और इस पुस्तक के तथा भक्तिमार्ग के सम्बन्ध में एक निबन्ध भी जोड़ दिया गया है । पुस्तक में बड़े आकार के कोई डेढ़ सौ पृष्ठ हैं और मूल्य भी डेढ़ ही रुपया है । अच्छी छपी है। काग़ज़ अच्छा और मोटा है ।

पाणिनि-कार्य्यालय की एक पुस्तक की समालोचना में अभी उस दिन हम इस बात की शिकायत कर चुके हैं कि उसके प्रूफ़-संशोधन में असावधानता हुई है । यही शिकायत हमारी इस पुस्तक के विषय में भी है । भागवत का एक [illegible]लोक हमें इस तरह याद हैः—

अहो बकी यं स्तनकालकूटं जिघांसयापाययदप्यसाध्वी ।
लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं कं वा दयालुं शरणं व्रजेम ॥

इस श्लोक में ' कं वा ' पाठ है । परन्तु भक्तिरत्नावलिः में यह 'किंवा' हो गया है, यद्यपि टीका में 'कं वा' ही है । इसके सिवा छापने में पदों का छेद भी ठीक ठीक नहीं हुआ । बकी, यं, स्तनकालकूटं— ये तीनों पद अलग अलग हैं; पर छापने में वे सब एक ही में मिला दिये गये हैं । मूल में 'असाध्वी' पद है । परन्तु टीका में—"बकी पूतना साध्वी दुष्टचित्ता"—पद इस प्रकार अलग अलग छापे गये हैं । 'पूतना' और 'साध्वी' के बीच में स्पेस छोड़ देने से 'असाध्वी' का 'साध्वी' हो गया । यह अनर्थ हुआ । इस पुस्तक का सम्पादन संस्कृत के एक पेंशनयाफ़्ता प्रोफ़ेसर महाशय ने किया है । अशक्तता के कारण शायद प्रूफ़ देखने का परिश्रम उनसे अच्छी तरह नहीं हो सका ।

❋

२—राजस्थाननो इतिहास, भाग पहलो । जब अपने देश की किसी अन्य भाषा का कोई अच्छा ग्रन्थ देखने को मिलता है तब चित्त बहुत प्रसन्न होता है । साथही हिन्दी के साहित्य की हीनता का स्मरण हो आता है । अतएव दुःख भी होता है । टाड साहब के लिखे हुए "राजस्थान" नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ के तीन अनुवाद गुजराती में पहले ही से विद्यमान हैं । अब एक और निकलने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

लगा है । यह अनुवाद गुजराती के सस्तुं-साहित्य-वर्धक कार्य्यालय, बम्बई-अहमदाबाद, के उद्योग का फल है । इसके पहले भाग की कापी इस समय हमारे सामने है । इसकी पृष्ठ-संख्या बड़े आकार के सात सैा पृष्ठों के ऊपर है । काग़ज़ मोटा और छपाई सुन्दर है । नयनाभिराम जिल्द बँधी हुई है । अनेक चित्रों से अलङ्कृत है । तिस पर भी मूल्य केवल ३॥) रुपये है । इसका एक संस्करण २॥) का और दूसरा २) का भी है । अतएव कहना चाहिए कि सस्ते दामों में उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित करने में इस कार्य्यालय ने कमाल कर दिया । मुरादाबाद के परलोकवासी पण्डित बलदेवप्रसाद मिश्र ने राजस्थान का हिन्दी-अनुवाद किया । मुंशी देवीप्रसाद ने उसका संशोधन किया । तब उसे बम्बई के वेङ्कटेश्वर प्रेस ने छाप कर प्रकाशित किया । यह गुजराती-अनुवाद इसी हिन्दी-रूपान्तर का अनुवाद है । मिश्र जी के अनुवाद में जगह जगह पर टिप्पणियां भी हैं । वे भी गुजराती-संस्करण में दे दी गई हैं । पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा ने भी कुछ टिप्पणियां उस अनुवाद में दी हैं जो खड्गविलास प्रेस से निकला है । वे भी इस अनुवाद में शामिल कर ली गई हैं । अतएव यह कहना पड़ता है कि गुजराती-अनुवाद के कर्ता और प्रकाशकों ने इसे यथाशक्य सर्वाङ्गसुन्दर बनाने में कोई कसर नहीं की । इस पहले भाग में उदयपुर, अर्थात् मेवाड़, का ही इतिहास है । अवशिष्ट अंश इसके अगले भाग या भागों में निकलेगा । जो लोग गुजराती पढ़ और समझ सकते हैं उन्हें इस पुस्तक को अपने संग्रह में अवश्य रखना चाहिए ।

इन हिन्दी और गुजराती अनुवादों के विषय में हमारा कुछ निवेदन है । किसी के मूल-लेख में फेरफार करने का किसी को अधिकार नहीं । ऐतिहासिक पुस्तकों के विषय में यह बात और भी दृढ़तापूर्वक कही जा सकती है । परन्तु टाड के राजस्थान के अनुवादों में इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया । टाड साहब ने अपने ग्रन्थ में मेवाड़ के राना लोगों का सम्बन्ध ईरानियों से बताया है । एक क्रिश्चियन राजकुमारी के सम्पर्क का भी उसमें उल्लेख है । पर ये बातें हिन्दी के अनुवाद से निकाल दी गई हैं । इसके सिवा उदयपुर-नरेश महाराजा फ़तेहसिंह का चरित बढ़ा दिया गया है । मिश्र जी ने कुछ और भी फेरफार किये हैं । ये बातें गुजराती-अनुवाद के आरम्भिक निवेदन में स्वीकार की गई हैं । प्रायः इसी घटाये बढ़ाये हिन्दी-अनुवाद का अनुसरण इस गुजराती-अनुवाद में किया गया है । इस पिछले अनुवाद के अनुवादक ने भी अपनी बुद्धि के अनुसार कहीं कहीं पर न्यूनाधिकता की है । हमारी समझ में यह सब कतर-ब्योंत न होता तो अच्छा होता । टाड साहब के ग्रन्थ का ठीक ठीक अनुवाद करके अनुवादकों को जो कुछ कहना था वह वे टिप्पणियों में कह सकते थे । ऐसा करने से टाड साहब के ग्रन्थ की असलियत को धब्बा न पहुँचता । टाड साहब ने निःसन्देह भूलें की हैं । पर उन्हें बताने के लिए मूल-ग्रन्थ के अंश-विशेष निकालने या उनमें फेरफार करने की ज़रूरत न थी । उनका स्पष्टीकरण पादटीकाओं अथवा एक अलग निबन्ध में अच्छी तरह हो सकता था ।

※

नीचे [illegible] पुस्तकें [illegible] मिल गई हैं । भेजनेवाले महाशयों को धन्यवादः—

(१) बाल-विवाह
(२) वृद्ध-विवाह
(३) ईश्वरास्तित्व
}[illegible]क—मन्त्री, [illegible]कारिणी सभा, ईटा[illegible]

(४) दयानन्दकुतर्कतिमिरतरणि— लेखक—श्रीयुत मुनि लब्धिविजयजी

(५) श्राविकाश्रम, मुम्बई, की चतुर्थ वार्षिक रिपोर्ट }—प्रसिद्धकर्त्ता—लल्लूभाई प्रेमानन्द परीख ।

(६) कर्म्मफल-महाशास्त्र—प्रकाशक, पण्डित पी० डी० दत्त चोखराजदत्त ।

(७) नडियाद-हिन्दू-अनाथाश्रम की रिपोर्ट—प्रेषक, गोकुलदास द्वारकादास तलाटी, मन्त्री ।

(८) नारायण-स्तुति—लेखक, सारंगगढ़-निवासी श्रीयुत नारायणप्रसाद ।

(९) म्युनिसिपैलिटी की लालटेन—लेखक, पण्डित विष्णु दीक्षित रानडे, बनारस ।

Printed and published by Apurva Krishna Bose, at the Indian Press, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सरस्वतीपाक-उन्माद, मूर्च्छा और मस्तिष्क की बीमारियों को दूर करके शक्ति को बढ़ाता है

पंडित रामदयालु शर्म्मा का

आयुर्वेदोक्त औषधालय तथा चिकित्सालय,

अजमेर

धर्म्म रहे अरु धन बचे, रोग समूल नसाय ।
यह सुख क्यों न उठाइये, देशी औषधि खाय ॥

हमारे यहाँ विविध प्रकार के रोगों का नाश [illegible]ने वाली, भाँति भाँति की सिद्ध औषधियाँ जैसे—क्वाथ, चूर्ण, गोली, अवले[illegible]ष्ट, रस, धातु, उपधातु, तैल, घृत, लेप, नेत्रों के अंजन, दाँतों के मंजन, अर्क [illegible] माजून, जवारिश, ख़मीरे, दवाउल मुश्क, जवाहिर मोहरा, लऊक, शिकंजबी[illegible]था तरह २ के सफूफ और और .कुर्स आदि जो खाने में रुचिकर और तत्क्षण [illegible] दि[illegible]ाले हैं, देशी खांड से बने, शुद्ध, पवित्र, ताज़े, और सब के सुभीते योग्य [illegible]मय तय्या[illegible]ते हैं जिनके असाधारण गुण और प्रभावोत्पादक चमत्कारों के विषय में बड़े २ विद्वानों और प्रतिष्ठित पुरुषों के प्रमाणपत्र उपस्थित हैं। सूचीपत्र में छपे, रोग-निर्धारण [illegible]त्र के अनुसार बाहर के रोगियों का निदान करके व्यवस्थापत्र सहित औषधि वी० पी० द्वारा [illegible]जी जाती है। इकट्ठे ख़रीदार सहयोगी वैद्यवरों को कमीशन भी दिया जाता है। पूरा पूरा वृत्तान्त सूचीपत्र मँगा कर देखिए, बिना मूल्य भेजा जाता है। जो लोग अनेक प्रकार की चिकित्सा कराने पर भी तन्दुरुस्ती से निराश हो चुके हों वे यहाँ से भी एक बार औषध मँगा कर परीक्षा कर देखें। संक्षिप्त सम्मति :—

१......प्रयोजन के लिये कोई भी अंग्रेज़ी मेडिकल हाल पं० रामदयालु शर्म्मा के आयुर्वेदोक्त औषधालय से अच्छा नहीं हो सकता। देशी औषधियाँ पुष्कल और प्रत्येक काम साफ़ सुथरा और प्रथम श्रेणी का है......

डी० एफ० एफ० मलन, लेफ्टीनेन्ट कर्नल, आई० एम० एस०
चीफ मेडीकल ऑफीसर, राजपूताना
आबू (अजमेर)

२......आपके सरस्वतीपाक ने बहुत फ़ायदा किया। अग्निसंदीपन चूर्ण वास्तव में संजीवनी बूटी है। मैं तारीफ़ वा अत्युक्ति से नहीं लिखता किन्तु संन्यासधर्मानुसार जो सत्य वा तथ्य है वही लिखता हूँ....पाचन को ठीक करके जठराग्नि को प्रदीप्त करने के लिये इस चूर्ण से उत्तम मुझे आज दिन तक कोई भी दूसरी औषधि नहीं मिली...

स्वामी नित्यानन्द (सरस्वती)

मागदावटी-अनुपानविधि के अनुसार एक ही औषध पचासों रोगों का नाश करती है

अग्निसंदीपन चूर्ण-मन्दाग्नि का नाश करके पाचन-शक्ति बढ़ाने में अद्वितीय है और बहुत ही स्वादिष्ट है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

* * * इंडियन प्रेस, प्रयाग की सर्वोत्तम पुस्तकें * * *

मानस-कोश ।

अर्थात्

"रामचरितमानस" के कठिन कठिन शब्दों का सरल अर्थ ।

हमने काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा के द्वारा सम्पादित करा कर यह "मानसकोश" नामक पुस्तक प्रकाशित की है। इस "मानसकोश" को सामने रखकर रामायण के अर्थ समझने में हिन्दीप्रेमियों को अब बड़ी सुगमता होगी। इसमें उत्तमता यह है कि एक एक शब्द के एक एक दो दो नहीं, कई कई पर्यायवाचक शब्द देकर उनका अर्थ समझाया गया है। इसमें अकारादि क्रम से ६०४५ शब्द हैं। मूल्य केवल १) रुपया रक्खा गया है, जो पुस्तक की लागत और उपयोगिता के सामने कुछ भी नहीं है। जल्द मँगाइए।

सचित्र हिन्दी महाभारत

(मूल आख्यान)

५०० से अधिक पृष्ठ बड़ी साँची १९ चित्र

अनुवादक—हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी।

महाभारत ही आर्यों का प्रधान ग्रन्थ है, यही आर्यों का सच्चा इतिहास है और यही सनातन धर्म का बीज है। इसी के अध्ययन से हिन्दुओं में धर्म-भाव, सत्पुरुषार्थ और समयानुसार काम करने की शक्ति जाग्रत हो उठती है। यदि इस बूढ़े भारतवर्ष का ५ हस्र वर्ष पहले का सच्चा इतिहास जानना हो, यदि भारतवर्ष में स्त्रियों को सुशिक्षित करके पातिव्रत धर्म का पुनरुद्धार करना अभीष्ट हो, यदि बालब्रह्मचारी भीष्मपितामह के पावन चरित को पढ़कर ब्रह्मचर्य रक्षा का महत्त्व देखना हो, यदि भगवान कृष्णचन्द्र के उपदेशों से अपने आत्मा को पवित्र और बलिष्ठ बनाना हो, तो इस "महाभारत" ग्रन्थ को मँगा कर अवश्य पढ़िए। इसकी भाषा बड़ी सरल, बड़ी ओजस्विनी और बड़ी मनोहारिणी है। प्रत्येक पढ़ी लिखी स्त्री अथवा कन्या को यह महाभारत मँगा कर अवश्य पढ़ना और उससे लाभ उठाना चाहिए। मूल्य केवल ३) रुपये।

[कविरत्न श्रीअखिलानन्द-प्रणीत]

दयानन्ददिग्विजय ।

महाकाव्य

हिन्दी-अनुवादसहित

जिसके देखने के लिए सहस्रों आर्य्य वर्षों से उत्कण्ठित हो रहे थे, जिसके रसास्वादन के लिए [illegible] संस्कृतज्ञ विद्वान् लालायित हो रहे थे, जिसकी [illegible] मधुर और र[illegible]ली कविता के लिए सहस्रों आर्य [illegible] [illegible]चल हो रही थी वही महाकाव्य छप कर तैया[illegible]। यह ग्रन्थ आर्य-समाज के लिए बड़े गौ[illegible]ी चीज़ है [illegible] आर्यों का भूषण कहें तो अ[illegible]ुक्ति न होगी। स्वामीजी [illegible] ग्रन्थों को छोड़ कर आज तक आर्य-समाज में जितने छोटे बड़े ग्रन्थ बने हैं उन सबमें इसका आसन ऊँचा है। प्रत्येक वैदिकधर्मानुरागी आर्य को यह ग्रन्थ लेकर अपने घर को अवश्य पवित्र करना चाहिए। यह महाकाव्य २१ सर्गों में सम्पूर्ण हुआ है। मूल ग्रन्थ के रायल आठ पेजी साँची के ६१५ पृष्ठ हैं। इसके अतिरिक्त ५७ पृष्ठों में भूमिका, ग्रन्थकार का परिचय, विषयानुक्रमणिका, आवश्यक विवरण, त्रुटिपूर्ति, यन्त्रालय-प्रशस्ति और सहायक-सूची आदि अनेक विषयों का समावेश किया गया है।

उत्तम सुनहरी जिल्द बँधी हुई इतनी भारी पोथी का मूल्य सर्वसाधारण के सुभीते के लिए केवल ४) चार रुपये ही रक्खा है। जल्द मँगाइए।

सौभाग्यवती ।

पढ़ी लिखी स्त्रियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। इसके पढ़ने से स्त्रियाँ बहुत कुछ उपदेश ग्रहण कर सकती हैं। मूल्य ≈)॥

मिलने का पता—मैनेजर, इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

✻ ✻ ✻ इंडियन प्रेस, प्रयाग की सर्वोत्तम पुस्तकें ✻ ✻ ✻

(महाकविकालिदासकृत)

रघुवंश

का गद्यात्मक हिन्दी-अनुवाद

(श्री० पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी लिखित)

इस अनुवाद में एक दो नहीं अनेक विशेषतायें हैं। इसमें कालिदास के लिखे केवल शब्दों का ही अनुगमन नहीं किया गया है; किन्तु उन शब्दों के प्रयोग द्वारा महाकवि कालिदास ने जो अनुपम भाव दरसाये हैं उन्हीं भावों को, उन्हीं भीतरी मर्मों को, महाकवि की उन्हीं प्रतिभा-प्रदीप्त कल्पनाओं तथा लोकोत्तरानन्ददायिनी उक्तियों के गूढ़ रहस्यों को, सबके समझने योग्य हिन्दी भाषा [illegible] विशद रूप से प्रकाशित किया [illegible]

जो आनन्द सं[illegible] विद्वानों को मूल रघुवंश के पढ़ने [illegible]ता है वही [illegible]नन्द हिन्दी जानने वालों [illegible] इससे प्राप्त होगा। [illegible] इस कथन में अत्युक्ति का लेश मात्र भी न समझिए 'हाथ-कंगन को आरसी [illegible]या ?' जब आप इस अपूर्व ग्रन्थ को देखेंगे तभी आपको इसके जौहर मालूम होंगे।

सुन्दर चित्रों से सुभूषित। पृष्ठ कुल मिलाकर ३००। सुन्दर सुनहरी जिल्द। मूल्य केवल २)

विनयपत्रिका।

(आगरानिवासी पं० रामेश्वरभट्ट-कृत सरला टीकासहित)

गोस्वामी तुलसीदासजी के नाम को कौन नहीं जानता। जिस कवि की कविता को सुन कर हिन्दु ही नहीं, विदेशी और विधर्मी लोग भी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हैं उसकी कविता की प्रशंसा में कुछ लिखना सूय को दीपक से दिखाना है। रामायण से उतर कर विनयपत्रिका का ही नंबर है। नहीं नहीं, प्रेम और भक्ति के वर्णन की दृष्टि से विनयपत्रिका का नंबर रामायण से भी पहले गिना जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। विनयपत्रिका का एक एक पद भक्ति और प्रेम रस में सराबोर हो रहा है। अर्थ ऐसी सरल भाषा में है कि बालक भी समझ सकते हैं। पृष्ठ ३७४। सुन्दर जिल्द। मूल्य २)

प्रकृति।

यह पुस्तक पण्डित रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी, एम० ए० की बँगला 'प्रकृति' का हिन्दी-अनुवाद है। बँगला में इस पुस्तक की बहुत प्रतिष्ठा है। विषय वैज्ञानिक है। हिन्दी में यह पुस्तक अपने ढंग की एकही है। इस पुस्तक को पढ़ कर हिन्दी जानने वालों को अनेक विज्ञान-सम्बन्धी बातों से परिचय हो जायगा। इसमें सैार जगत् की उत्पत्ति, आकाश-तरंग, पृथिवी की आयु, मृत्यु, आर्यजाति, परमाणु, प्रलय आदि १४ विषयों पर बड़ी उत्तमता से निबन्ध लिखे गये हैं। आशा है, हिन्दी-प्रेमी इस पुस्तक को विशेष चाव के साथ पढ़ेंगे और अनेक लाभ उठावेंगे। मूल्य १)

कर्त्तव्य-शिक्षा।

जो लोग अपने बालकों को कर्तव्यशील बना कर नीति-निपुण और शिष्टाचारी बनाना चाहते हैं उनको "कर्तव्य-शिक्षा" की पुस्तक मँगा कर अपने बालकों के हाथ में ज़रूर देनी चाहिए। बालकों को ही नहीं, यह पुस्तक हिन्दी जानने वाले मनुष्यमात्र के काम की है। पैाने तीन सै। पृष्ठ की भारी पोथी का मूल्य केवल १) एक रुपया।

जापान-दर्पण।

(ग्रन्थकर्त्ता के हाफ़टोन चित्र सहित)

जिस हिन्दुधर्मावलम्बी वीर जापान ने महाबली रूस को पछाड़ कर सारे संसार में आर्य्यजाति मात्र का मुख उज्ज्वल किया है, उसी वीरशिरोमणि जापान के भूगोल, आचरण, शिक्षा, उत्सव, धर्म, व्यापार, राजा, प्रजा, सेना और इतिहास आदि बातों का, इस पुस्तक में, पूरा पूरा वर्णन किया गया है। भारत की अधोगति पर आँसू बहानेवाले देश-भक्तों को तो इस पुस्तक से अवश्य कुछ शिक्षा लेनी चाहिए। ३५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १) से घटा कर ॥।) बारह आने कर दिया।

पुस्तक मिलने का पता—मैनेजर, इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

* * * इंडियन प्रेस, प्रयाग की सर्वोत्तम पुस्तकें * * *

चरित्रगठन ।

जो नवयुवक विद्यार्थी चरित्रगठन के अभिलाषी हैं वे तो इसे अवश्य ही पढ़ें, और विशेष कर उन्हीं के लिए यह पुस्तक बनाई गई है। वे इस पुस्तक को पढ़ कर आप तो लाभ उठावेंगे ही; किन्तु अपने भावी सन्तानों को भी विशेष लाभ पहुँचा सकेंगे। इस पुस्तक के सभी विषय सुपाठ्य हैं। जिस कर्तव्य से मनुष्य अपने समाज में आदर्श बन सकता है उसका उल्लेख इस पुस्तक में विशेष रूप से किया गया है। उन्नति, उदारता, सुशीलता, दया, क्षमा, प्रेम, प्रतियोगिता आदि अनेक विषयों का वर्णन उदाहरणों के साथ किया गया है। अतएव क्या बालक, क्या वृद्ध, क्या युवा, क्या स्त्री सभी इस पुस्तक को एक बार अवश्य एकाग्र मन से पढ़ें और इससे पूर्ण लाभ उठावें। २३२ पृष्ठ की ऐसी उपयोगी पुस्तक का मूल्य नाममात्र के लिए केवल ॥।) बारह आना है।

कुमारसम्भवसार ।

(लेखक—पण्डित महावीरप्रसादजी द्विवेदी)

कवि-कुलगुरु कालिदास के "कुमार-सम्भव" काव्य का यह मनोहर सार छप कर तैयार हो गया। प्रत्येक हिन्दी-कविता-प्रेमी को द्विवेदी जी की यह मनोहारिणी कविता पढ़ कर आनन्द प्राप्त करना चाहिए। कविता बड़ी रसवती और प्रभावशालिनी है। मूल्य केवल ।) चार आने।

भारतवर्ष में पश्चिमीय शिक्षा ।

श्रीमान् पण्डित मनोहरलाल ज़ुतशी, एम० ए० के नाम को कौन नहीं जानता। आप उर्दू और अँगरेज़ी के प्रसिद्ध लेखक हैं। आपने "एज्युकेशन इन ब्रिटिश इंडिया" नामक एक पुस्तक अँगरेज़ी में लिखी है और उसे इंडियन प्रेस, प्रयाग ने छापकर प्रकाशित किया है। पुस्तक बड़ी खोज के साथ लिखी गई है। उक्त पुस्तक का सारांश हिन्दी और उर्दू में भी छप गया है। आशा है हिन्दी और उर्दू के पाठक इस उपयोगी पुस्तक को मँगाकर अवश्य लाभ उठावेंगे। मूल्य इस प्रकार है :—

एज्युकेशन इन ब्रिटिश इंडिया (अँगरेज़ी में)	२॥)
भारतवर्ष में पश्चिमीय शिक्षा (हिन्दी में)	।=)
हिन्द में मग़रबी तालीम (उर्दू में)	।=)

कर्मयोग ।

स्वामी विवेकानन्दजी के कर्मयोग-सम्बधी व्याख्यानों का हिन्दी-अनुवाद करा कर यह "कर्मयोग" नामक पुस्तक छापी गई है। इसमें सात अध्याय हैं। उनमें क्रमशः—१—कर्म का मनुष्य चरित्र पर प्रभाव, २—निष्काम कर्म का महत्त्व, ३-धर्म क्या है ?, ४—पर... ५—बेलाग रहना ही सच्चा त्याग है, ६—मुक्ति और ...योग का आदर्श—इन विषयों का वर्णन ...ही ओज... भाषा में किया गया है। अध्यात्मविद्या... कर्मयोग के जि... को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य केवल ।=)

संक्षिप्त इतिहासमाला ।

लीजिए, हिन्दी में जिस चीज़ की कमी थी उसकी पूर्ति का भी प्रबन्ध हो गया। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पण्डित श्यामविहारी मिश्र, एम० ए० और पण्डित शुकदेवविहारी मिश्र, बी० ए० के सम्पादकत्व में पृथ्वी के सभी प्रसिद्ध प्रसिद्ध देशों के हिन्दी में संक्षिप्त इतिहास तैयार होने का प्रबन्ध किया गया है। यह समस्त इतिहासमाला कोई २०, २२ संख्याओं में पूर्ण होगी। इसकी क्रमशः एक एक पुस्तक इंडियन प्रेस, प्रयाग, से प्रकाशित होती रहेगी। अब तक ये ४ पुस्तकें छप चुकी हैं :—

१—जर्मनी का इतिहास	...	।=)
२—फ़्रांस का इतिहास	...	।≡)
३—रूस का इतिहास	...	।=)
४—इँगलेंड का इतिहास	...	॥=)
५—जापान का इतिहास	...	॥)

पुस्तक मिलने का पता—मैनेजर, इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

❋ ❋ ❋ इंडियन प्रेस, प्रयाग की सर्वोत्तम पुस्तकें ❋ ❋ ❋

बालसखा-पुस्तकमाला ।

इंडियन प्रेस, प्रयाग से "बालसखा-पुस्तकमाला" नामक सीरीज़ में जितनी किताबें आज तक निकली हैं वे सब हिन्दी-पाठकों के लिए, विशेष कर बालक-बालिकाओं और स्त्रियों के लिए, परमोपयोगी प्रमाणित हो चुकी हैं। इस 'माला' की सब किताबों की भाषा ऐसी सरल—सबके समझने योग्य—रक्खी है कि जिसे थोड़े पढ़े लिखे बालक भी बड़ी आसानी से पढ़ कर समझ लेते हैं। इस 'माला' में अब तक जितनी पुस्तकें निकल चुकी हैं उनका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जाता है:—

बालभारत—पहला भाग ।

१—इसमें महाभार[illegible] कुल कथा ऐसी सरल हिन्दी [illegible] लिखी गई है कि बालक और स्त्रि[illegible] पढ़क[illegible] समझ सकती हैं। यह [illegible] चरित [illegible] को अवश्य पढ़ाना चाहिए। मूल्य ॥) मूल्य आठ आने।

बालभारत—दूसरा भाग ।

२—इसमें महाभारत से छाँट कर बीसियों ऐसी कथायें लिखी गई हैं कि जिनको पढ़कर बालक अच्छी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। हर कथा के अन्त में कथानुरूप शिक्षा भी दी गई है। मूल्य वही ॥)

बालरामायण—सातों काण्ड ।

३—इसमें रामायण की कुल कथा बड़ी सीधी भाषा में लिखी गई है। इसकी भाषा की सरलता में इससे अधिक और क्या प्रमाण दें कि गवर्नमेंट ने इस पुस्तक को सिविलियन लोगों के पढ़ने के लिए नियत कर दिया है। भारतवासियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥)

बालमनुस्मृति ।

४—आज कल आर्य-सन्तान अपनी प्राचीन धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक रीति-रस्मों को न जान कर कैसे घोर अन्धकार में धँसती चली जा रही है सो किसी भी विचारशील से छिपा नहीं है। इसी दोष के दूर करने के लिए 'मनुस्मृति' में से उत्तम उत्तम श्लोकों को छाँट छाँट कर उनका सरल हिन्दी में अनुवाद लिखा गया है। मूल्य ।)

बालनीतिमाला ।

५—नीतिविद्या बड़े काम की विद्या है। हमारे यहाँ चार नीतिज्ञ बड़े प्रसिद्ध हो गये हैं। शुक्र, विदुर, चाणक्य और कणिक। इन्हीं के नाम से चार पुस्तकें विख्यात हैं। शुक्रनीति, विदुरनीति, चाणक्यनीति औ[illegible]णिकनीति। ये सब पुस्तक संस्कृत में हैं। हिन्दी जाननेवालों के उपकार के लिए हमने इन चारों पुस्तकों का संक्षिप्त हिन्दी-अनुवाद छापा है। इसकी भाषा बालकों और स्त्रियों तक के समझने लायक़ है। मूल्य ॥)

बालभागवत—पहला भाग ।

६—लीजिए, 'श्रीमद्भागवत' की कथा भी अब सरल हिन्दी-भाषा में बन गई। जो लोग संस्कृत नहीं जानते, केवल हिन्दी-भाषा ही जानते हैं, वे भी अब श्रीमद्भागवत की भक्ति-रस-भरी कथाओं का स्वाद चख सकते हैं। इस 'बालभागवत' में 'श्रीमद्भागवत' की कथाओं का सार लिखा गया है। इसकी कथायें बड़ी रोचक, बड़ी शिक्षादायक और भक्ति रस से भरी हुई हैं। हर एक हिन्दी-प्रेमी हिन्दू को इस पुस्तक की एक एक कापी ज़रूर ख़रीदनी चाहिए। मूल्य ॥) आने

बालभागवत—दूसरा भाग।

अर्थात्

श्रीकृष्णलीला।

७—श्रीकृष्ण के प्रेमियों को यह बालभागवत का दूसरा भाग ज़रूर पढ़ना चाहिए। इसमें, श्रीमद्भागवत में वर्णित श्रीकृष्ण भगवान् की अनेक लीलाओं की कथायें लिखी गई हैं। मूल्य केवल ॥)

पुस्तक मिलने का पता—मैनेजर, इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

* * * इंडियन प्रेस, प्रयाग की सर्वोत्तम पुस्तकें * * *

बालगीता ।

८—गीता की एक एक शिक्षा, एक एक बात मनुष्यों को भुक्ति और मुक्ति की देनेवाली है। ऐहिक और पारमार्थिक सुख चाहने वालों को गीता के उपदेशों से ज़रूर शिक्षा लेनी चाहिए। गीता में जगह जगह ऐसा अमृतमय उपदेश भरा हुआ है कि जिसके पान से मनुष्य अमर-पदवी तक पा सकता है। श्रीकृष्णचन्द्र महाराज के मुखारविन्द से निकले हुए सदुपदेश को कौन हिन्दू न पढ़ना चाहेगा? अपने आत्मा को पवित्र और बलिष्ठ बनाने के लिए यह "बालगीता" ज़रूर पढ़नी चाहिए। इसमें पूरी गीता का सार बड़ी सरल भाषा में लिखा गया है। मूल्य ॥)

बालोपदेश ।

९—यह पुस्तक बालकों को ही नहीं युवा, वृद्ध, वनिता सभी को उपयोगी तथा चतुर, धर्मात्मा और शीलसम्पन्न बनाने वाली है। राजा भर्तृहरि के विमल अन्तःकरण में जब संसार से वैराग्य उत्पन्न हुआ था तब उन्होंने एक दम भरा पूरा राज-पाट छोड़ कर संन्यास ले लिया था। उस परमानन्दमयी अवस्था में उन्होंने वैराग्य और नीति-सम्बन्धी दो शतक बनाये थे। इस 'बालोपदेश' में उन्हीं भर्तृहरि-कृत नीतिशतक का पूरा और वैराग्यशतक का संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद छापा गया है। यह पुस्तक स्कूलों में बालकों के पढ़ने के लिए बड़ी उपयोगी है। मूल्य ।)

बालआरब्योपन्यास (सचित्र) चारों भाग।

१०-१३—दिलचस्प क़िस्से कहानियों के लिए दुनिया भर के उपन्यासों में अरबियन नाइट्स का नम्बर सबसे पहला है। इसमें से कुछ अयोग्य कहानियों को निकाल कर, यह विशुद्ध संस्करण निकाला गया है, इसलिए, अब, यह किताब क्या स्त्री, क्या पुरुष सभी के पढ़ने लायक़ है। इसके पढ़ने से हिन्दी-भाषा का प्रचार होगा, मनोरञ्जन होगा, घर बैठे दुनिया की सैर होगी, बुद्धि और विचार-शक्ति बढ़ेगी, चतुराई सीखने में आवेगी, साहस और हिम्मत बढ़ेगी। कहाँ तक कहें, इसके पढ़ने से अनेक लाभ होंगे। मूल्य प्रत्येक भाग का ॥)

बालपंचतंत्र ।

१४—इसके पाँचों तंत्रों में बड़ी मनोरंजक कहानियों के द्वारा सरल रीति पर नीति की शिक्षा दी गई है। बालक-बालिकायें इसकी मनोरंजक कहानियों को बड़े चाव से पढ़ कर नीति की शिक्षा ग्रहण कर सकती हैं। यह "बालपंचतंत्र" विष्णुशर्मा कृत असली [illegible] का सरल हिन्दी में सार है। यह पुस्तक प्रत्येक हिन्दी [illegible] और विशेष कर बालकों के पढ़ने के योग्य है। [illegible]॥, आठ आने।

बाल[illegible]देश ।

१५—इस पुस्तक के पढ़ने से बालकों [illegible] बुद्धि बढ़ती है, नीति की शिक्षा मिलती है, [illegible]ता के लाभों का ज्ञान होता है और शत्रुओं के पंजे में न फँसने और फँस जाने पर उससे निकलने के उपायों और कर्त्तव्यों का बोध हो जाता है। यह पुस्तक, पुरुष हो या स्त्री, बालक हो या बूढ़ा, सभी के काम की है। इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य आठ आने।

बालहिन्दीव्याकरण ।

१६—यदि आप हिन्दी-व्याकरण के गूढ़ विषयों को सरल और सुगम रीति से जानना चाहते हैं, यदि आप हिन्दी शुद्ध रूप से लिखना और बोलना जानना चाहते हैं, तो "बालहिन्दीव्याकरण" पुस्तक मँगा कर पढ़िए और अपने बाल-बच्चों को पढ़ाइए। स्कूलों में लड़कों के पढ़ाने के लिए यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है। मूल्य ।) चार आने।

पुस्तक मिलने का पता—मैनेजर, इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

* * * इंडियन प्रेस, प्रयाग की सर्वोत्तम पुस्तकें * * *

बालविष्णुपुराण ।

१७—विष्णुपुराण में कितनी ही ऐसी विचित्र ग्रेगर शिक्षाप्रद कथायें हैं कि जिनके जानने की हिन्दी वालें को बड़ी ज़रूरत है। इस पुराण में कलियुगी भविष्य राजाओं की वंशावली का बड़े विस्तार से वर्णन किया गया है। जो लेग संस्कृत भाषा में विष्णुपुराण की कथाओं का आनन्द नहीं लूट सकते, उन्हें 'बालविष्णु-पुराण' पढ़ना चाहिए। इस पुस्तक को विष्णुपुराण का सार समझिए। मूल्य ।)

बाल-स्वास्थ्य-रक्षा ।

१८—यह पुस्तक प्रत्येक हिन्दी [illegible]नवाले को पढ़नी चाहिए। प्रत्येक [illegible] एक एक कापी अपने घर में [illegible]हिए। बालकों को ते आरम्भ [illegible] पुस्तक [illegible]ढकर स्वास्थ्य-सुधार [illegible] का ज्ञान प्राप्त कर ले[illegible] चाहिए। इसमें बतलाय[illegible]ाया है कि मनुष्य किस प्रकार रह कर, किस प्रकार [illegible]भोजन करके, नीरोग रह सकता है। इसमें प्रति दिन [illegible] बर्ताव में आनेवाली खाने की चीज़ों के गुण-दोष भी अच्छी तरह बताये गये हैं। कहाँ तक कहें, पुस्तक मनुष्य-मात्र के काम की है। इतनी उपयोगी पुस्तक का मूल्य केवल ॥) आठ आना रक्खा है।

बालगीतावलि ।

१९—महाभारत में क्या नहीं है। उसमें सभी कुछ मौजूद है। महाभारत के रत्नों का सागर कहना चाहिए, शिक्षा का भण्डार कहना चाहिए। आप जानते हैं "बालगीतावलि" में क्या है? इसमें महा-भारत में से ९ गीताओं का संग्रह किया गया है। उन गीताओं में ऐसी उत्तम उत्तम शिक्षायें हैं कि जिनके अनुसार बर्ताव करने से मनुष्य का परम कल्याण हो सकता है। हमें पूरी आशा है कि समस्त हिन्दी-प्रेमी इस पुस्तक को पढ़ कर उत्तम शिक्षा का लाभ करेंगे। मूल्य ॥) आठ आने।

बालनिबन्धमाला ।

२०—इसमें कोई ३५ शिक्षादायक विषयों पर, बड़ी सुन्दर भाषा में, निबन्ध लिखे गये हैं। बालकों के लिए तो यह पुस्तक उत्तम गुरु का काम देगी। ज़रूर मँगाइए। मूल्य ।=)

बालस्मृतिमाला ।

२१—हमने १८ स्मृतियों का सार-संग्रह करा कर यह "बालस्मृतिमाला" प्रकाशित की है। आशा है, सनातनधर्म के प्रेमी अपने अपने बालकों के हाथ में यह धर्मशास्त्र की पुस्तक देकर उनको धर्मिष्ठ बनाने का उद्योग करेंगे। मूल्य केवल ॥) आठ आने।

बालपुराण ।

२२—पुराणों में बहुत सी ऐसी कथायें हैं जिनसे मनुष्यों को बहुत कुछ उपदेश मिल सकता है। पर पुराण इतने अधिक और बड़े हैं कि उन सबका पढ़ना प्रत्येक मनुष्य के लिए असम्भव नहीं तो महाकष्ट-साध्य अवश्य है। इसलिए सर्वसाधारण के सुभीते के लिए हमने अठारह महापुराणों का साररूप 'बाल-पुराण' तैयार करा कर प्रकाशित किया है। इसमें अठारहों पुराणों की संक्षिप्त कथासूची दी गई है और यह भी बतलाया गया है कि किस पुराण में कितने श्लोक और कितने अध्याय आदि हैं। पुस्तक बड़े काम की है। इतनी उपयोगी पुस्तक का मूल्य केवल ॥)

बालभोजप्रबन्ध ।

२३—राजा भोज का विद्याप्रेम किसी से छिपा नहीं है। संस्कृत भाषा के "भोजप्रबन्ध" नामक ग्रन्थ में राजा भोज के संस्कृत-विद्याप्रेम-सम्बन्धी अनेक आख्यान लिखे हुए हैं। वे बड़े मनोरञ्जक और शिक्षादायक हैं। उसी भोजप्रबन्ध का साररूप यह "बाल-भोजप्रबन्ध" छपकर तैयार हो गया। सभी हिन्दी-प्रेमियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य बहुत ही कम केवल ॥) आठ आने।

मिलने का पता—मैनेजर, इंडियन प्रेस, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

* * * इंडियन प्रेस, प्रयाग की सर्वोत्तम पुस्तकें * * *

धोखे की टट्टी ।

इस उपन्यास में एक अनाथ लड़के की नेकनीयती और नेकचलनी और एक सनाथ और धनाढ्य लड़के की बदनीयती और बदचलनी का फोटो खींचा गया है। हमारे भारतीय नवयुवक इसके पढ़ने से बहुत कुछ सुधर सकते हैं, बहुत कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। ज़रा मँगाकर देखिए तो कैसी "धोखे की टट्टी" है। मूल्य ।=)

पार्वती और यशोदा ।

इस उपन्यास में स्त्रियों के लिए अनेक शिक्षायें दी गई हैं। इसमें दो प्रकार के स्त्री-स्वभावों का ऐसा अच्छा फ़ोटो खींचा गया है कि समझते ही बनता है। स्त्रियों के लिए ऐसे ऐसे उपन्यासों की अत्यन्त आवश्यकता है। 'सरस्वती' के प्रसिद्ध कवि पण्डित कामताप्रसाद गुरु ने ऐसा शिक्षादायक उपन्यास लिखकर हिन्दी पढ़ी लिखी स्त्रियों का बहुत उपकार किया है। हर एक स्त्री को यह उपन्यास अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य ।=)

सुशीला-चरित ।

आज कल हमारे देश के स्त्री-समाज में ऐसे ऐसे दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुराचार घुसे हुए हैं जिनके कारण स्त्री-समाज ही नहीं पुरुष-समाज भी नाना प्रकार के दुःखजालों में फँस कर घोर नरक-यातना भोग रहा है। यदि भारतवासी अपने देश, धर्म और जाति की उन्नति करना चाहते हैं तो सब से पहले, सब प्रकार की उन्नतियों के मूल स्त्री-समाज का सुधार करना चाहिए। फिर देखिए, आपकी सभी कामनायें आप से आप ही सिद्ध हो जायँगी। स्त्री-समाज के सुधार की शिक्षा देने में 'सुशीलाचरित' पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। प्रत्येक पढ़ी लिखी स्त्री को सुशीला-चरित अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य १)

बाला-बोधिनी ।

(पाँच भाग)

लड़कियों के पढ़ने के लिए ऐसी पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता थी जिनमें भाषाशिक्षा के साथही साथ लाभदायक उपयोगी उपदेशों के पाठ हों और उनमें ऐसी शिक्षा भरी हो जिनकी, वर्तमान काल में, लड़कियों के लिए अत्यन्त आवश्यकता है। हमारी बालाबोधिनी इन्हीं आवश्यकताओं के पूर्ण करने लिए प्रकाशित हुई हैं। क्या देशी और क्या सरकारी [illegible] पुत्री-पाठशालाओं की पाठ्य-पुस्तकों में बाला-बोधिनी [illegible] करना चाहिए । इन पुस्तकों के कवर-पेज ऐसे सुन्द[illegible] छापे गये हैं कि देखते ही बनता है। मूल्य पाँ[illegible] भाग[illegible] और प्रत्येक भाग का क्रमशः =), [illegible], ।-), ।[illegible]

समाज

(लेखक—पं० जनार्दन झा)

मिष्टर आर. सी. दत्त लिखित बँगला उपन्यास का हिन्दी-अनुवाद बहुत ही सरल भाषा में किया गया है। पुस्तक बड़े महत्त्व की है। यह सामाजिक उपन्यास सभी हिन्दी जाननेवालों के बड़े काम का है। एक वार पढ़ कर अवश्य देखिए मूल्य ॥)

सुखमार्ग ।

इस पुस्तक का जैसा नाम है इसमें गुण भी वैसा ही है। इस पुस्तक के पढ़ते ही सुख का मार्ग दिखाई देने लगता है। जो लोग दुखी हैं; सुख की खोज में दिन रात सिर पटकते रहते हैं उनको यह पुस्तक ज़रूर पढ़नी चाहिए। मूल्य केवल ।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुपये में दो रुपये का माल ।

दद्रु-कुठार

दुनिया भर में यही एक दवा है जिससे बिना किसी जलन या तकलीफ़ के दाद जड़ से जाता रहता है इसके लगाते ही खुजली बन्द हो जाती है और दो तीन दफ़े लगाने से कैसा ही दाद क्यों न हो जड़ से जाता रहता है और फिर नहीं होता।

ऐसे लोग जो यह विश्वास किये बैठे थे कि दाद जड़ से नहीं जाता उनके दाद जड़ से खो चुके हैं तब ही तो इतने दावे के साथ कहते हैं कि दद्रुकुठार से दाद जड़ से ज़रूर जाता रहता है चाहे वह कैसा ही [illegible] क्यों न हो । क़ीमत फ़ी शीशी ।) डाक [illegible] ३ शीशी तक ।) १२ शीशी की क़ीमत [illegible])

[illegible]कुठा[illegible]फ़्त में मिलेगा ।

आजकल सभी [illegible] इनाम देते हैं परन्तु हम जो इनाम देते हैं उसे देख कर आपको दाँतों में अँगुली दबानी पड़ेगी। आश्चर्य्य के समुद्र में डूबना पड़ेगा।

देखिये दद्रुकुठार की १२ शीशी एक साथ लेने से यह रास्कोप सिष्टम इनाम मिलती है जिसे बेच कर आप दवा की क़ीमत वसूल कर सकेंगे और दवा मानों मुफ़्त में बच रहेगी।

देखिये दद्रुकुठार के लिये लोग क्या कहते हैं ।

भारतमित्र कलकत्ता ता० १-७-११ दद्रुकुठार सचमुच दाद के लिये कुठार ही है । इसके लगाने में किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं होती। दुष्ट दाद के कारण जो लोग दुखी हों वे तुरन्त इसे ख़रीद कर लाभ उठावैं ।

सत्यसनातनधर्म्म, कलकत्ता ता० २०-७-११ हमारे मित्रों ने परीक्षा की और बहुत उपकारी पाया ।

हिन्दी-वङ्गवासी, कलकत्ता ता० १० जून १९१२ दद्रुकुठार दाद की बड़ी ही असर-दार दवा है । पुराने से पुराना दाद आनन-फानन भागता है । सिवा दाद के यह खुजली आदि विविध चर्म्मरोग पर भी काम करती है । इसमें सन्देह नहीं, कि इस दवा का नाम ही नाम नहीं, इसमें बहुतेरे गुण हैं ।

हाँ एक बात ज़रूर याद रखने की है यदि आपको पूरा उपहार और सच्ची दवा की ज़रूरत हो तो सिर्फ़ हमारे ही पते से मंगाइये । हमारा विज्ञापन सावधानी से अपने पास रखिये ।

बे रोज़गारों का रोज़गार शौक़ीनों का शौक़

वायस्कोप यानी सिनोमोटो-ग्राफ़ ।

चलती फिरती तस्वीरों का तमाशा ।

आज कल विलायत के लोग जो न करें सो थोड़ा है । तरह तरह के खेल तमाशे विलायती शहर, जादूगर, रेल, तार, बहुत से हँसी के तमाशे यह सब बातें वायस्कोप की बदौलत घर बैठे देखने को मिलते हैं । वायस्कोप से हम विलायत का दरबार घर बैठे देख सकते हैं,

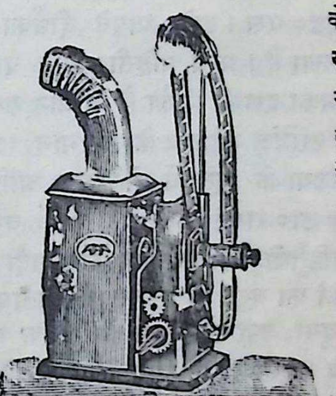

कलकत्ते में जिस रोज़ यह तमाशा होता है उस दिन बैठने को जगह नहीं मिलती क्योंकि इस तमाशे में तस्वीरें चलती फिरती घूमती हूबहू बात चीत करती दिखलाई पड़ती हैं जिनको देख कर दाँतों में अंगुली दबानी पड़ती है, परन्तु ऐसे बड़े वायस्कोप की क़ीमत क़रीब दो हज़ार होने के कारण सब लोग उसको

(आगे का भी पृष्ठ देखिए)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं ख़रीद सकते इसी लिये जर्म्मनी से हमने छोटे वायस्कोप तैयार कराके मँगाये हैं जिनमें तरह तरह के खेल तमाशे दिखलाई पड़ते हैं जिनको देख कर हँसते हँसते लोट पोट हो जाना पड़ता है एक तो हमारे कहने से ही मँगाइये।

वायस्कोप।

यह वायस्कोप बहुत ही मज़बूत लोहे का बना हुआ है इसके साथ में ६ प्रकार की चलती फिरती तस्वीरों के ६ फिलम भेजे जाते हैं और १२ प्लेट मेजिक लालटेन के भी भेजे जाते हैं जिनसे मेजिक लालटेन का भी खेल किया जा सकता है। इसका फोकस परदे पर अन्दाज़ १½ फुट पड़ता है। क़ीमत ५) डाकख़र्च वग़ैरह २)

वायस्कोप के साथ उसके चलाने का पर्चा अङ्गरेज़ी और हिन्दी भाषा में छपा रहता है जिससे हर कोई सहज में चला सकता है।

मँगाने का पता,— जोशी कम्पनी शिवठाकुर लेन, कलकत्ता नं० ८

पंडित श्री गिरधर शर्म्माजी द्वारा सम्पादित।

शुश्रूषा! शुश्रूषा!! शुश्रूषा!!!

हिन्दी की अपूर्व पुस्तक। इस पुस्तक के लेखक हैं भारतप्रसिद्ध इन्दौर के स्टेट सारजन, अनुभवी डाक्तर श्रीमान् गोपाल रामचन्द्र तांबे G.K. TAMBE M.H.A.Sc. L.M.& S. एम०एच०ए०एस०सी० एल० एम० एंड० एस। इसे आपने दीर्घकाल के अनुभव से लिखा है। ग्रन्थ अद्वितीय और परमोपयोगी है। भूमिका इसकी लिखी है श्रीमान् गवरनर जनरल लार्ड हार्डिंज़ महोदय के वर्तमान डाक्टर और सेंट्रल इंडिया के भूतपूर्व मेडिकल आफ़िसर लेफ्टेन्ट कर्नल डा० रावर्ट C.I.E., I.M.S., वग़ैरह। सरस्वती, जैनहितैषी, वैदिकसर्वस्व, सत्यवादी आदि पत्रों ने पुस्तकों को बहुत ही महत्त्वपूर्ण बताया है। प्रत्येक वाल, युवा, वृद्ध स्त्री पुरुष को पुस्तक अवश्य पढ़ना चाहिये। पुस्तक की उपयोगिता देखते हुवे मूल्य ॥=) कुछ भी नहीं है। शीघ्रता कीजिये। नहीं तो पछताना पड़ेगा।

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर॰एस॰पी॰ब्रादर्स॰एंड॰कंपनी,

झालरापाटन शहर।

शुभ संवाद।

विवेक फ्लूट हारमोनियम

इसने हारमो[illegible] सर्वोच्च स्थान अधिकार किया है।

नं० १	सिंगल रीड चार [illegible]			मूल्य १८॥)
नं० ३	,,	,,	[illegible] ब[illegible]	२२॥)
नं० ७	,,	,,	फ़र्स्ट क्लास [illegible]	[illegible]
नं० ९	डवल्ल रीड पांच स्टाप			मूल्य २[illegible])
नं० ११	,,	,,	फेनसी बक्स	,, [illegible])
नं० १५	,,	,,	,, फर्स्ट क्लास	,, [illegible]५)

आर्डर के साथ ५) रुपये अग्रिम भेजना चाहिये।

आप यदि कलकत्ता से कोई चीज़ मँगाना चाहें तो हम लोगों को लिखिये। हम लोग आप के चाह के मवाफिक सुई से लेकर सोने के ज़ेवर वगैरः कुल भेजेंगे। हमारे पास बाईसिकिल, ग्रामोफोन बाजा, कमेरा वग़ैरः मौजूद है।

सेन ब्रादर्स, ७२-६ बेन्टिक स्ट्रीट,

कलकत्ता।

मित्र! मित्र!! मित्र!!!

यदि आप घर बैठे ही सैकड़ों प्रकार के व्यौपार करना सीख कर १००) से २५०) रु० तक प्रतिमास पैदा करना चाहते हैं तो शीघ्र ही छपने वाले मित्र मासिक पत्र का प्रथमाङ्क मुफ़्त पसन्दी के लिये मँगा देखिए। वार्षिक मूल्य १)

पता—मित्र-कार्य्या,

रुस्तमगढ़, एटा—यू० पी०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रदर रोग भयानक है

हमारा पिछले १५ वर्ष का तजर्बा बतलाता है कि प्रदर रोग से पीड़ित स्त्रियां कैसे स्वास्थ प्राप्त कर सकती हैं, और बल, शक्ति आदि कैसे बढ़ा सकती हैं।

प्रदर रोग निश्चित हानिकारक और दुःखदाई है। इसको English में Leucorrhoea कहते हैं। इसमें पहले प्रसवस्थान से थोड़ा २ पानी बहता है और स्त्रियां इसकी ओर ध्यान नहीं देती। थोड़े समय पीछे यह पानी ज़्यादा बहने लगता है और उनको दुर्बल कर देता है और हाथ पैरों में पटकन, कमर में दर्द, चित्त मलीन रहना [illegible] काम में दिल न लगना, दि[illegible] धड़कना आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं [illegible] हीं होता, यदि हो जावे तो [illegible] है तब [illegible] आरम्भ का समय स्मरण आता है।

[illegible] रोग का उत्तम इलाज "सुपारी पाक" है। इसका सेवन गर्भ को पुष्टि देता है, और बच्चे को बलवान और सुन्दर बनाता है और बच्चा जनते समय किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देता। मूल्य १६ तोला १)

मिलने का पता :—

वैद्यराज सरदारीलाल

आयुर्वैदिक फा० कम्पनी लिमिटेड

गुमटी बाज़ार, लाहौर।

तार का पता—"रसायन" लाहौर।

आवश्यकता है !!

बताने की—हिन्दी में यह किताबें छपने से ठेकेदार, मिस्त्री, सब ओवरसियर, सर्वेअर, पटवारी, ज़िमींदार आदि कितना लाभ उठा सकते हैं। (१) सिविल इंजीनियरिंग—इसमें सामाने इमारत, सड़कों, आबपाशी आदि कई मुफ़ीद बातों का बयान है। मू० १) (२) सर्वेइंग और लेवलिंग—इसमें सब तरह की पैमायश व लेविल करने के तरीक़े दिये हैं। मू० ॥)

निहालचन्द्र गौड़, माधोकालिज—उज्जैन।

नयी पुस्तक ! नया ढंग !! नया उपदेश !!!

प्रसिद्ध अमरीकन यात्री

श्रीयुत सत्यदेवजी की ओजस्विनी लेखनी द्वारा प्रसूत।

यदि आप अमरीका-सम्बन्धी विषयों को जानना चाहते हैं। यदि आप अपने तथा अपने बालबच्चों को सच्चरित्र, देशभक्त तथा धार्मिक बनाना चाहते हैं तो निम्न लिखित पुस्तकें पढ़िये।

अमरीका-पथ-प्रदर्शक ।-) अमरीकाभ्रमण ॥) अमरीका के विद्यार्थी ।) राजर्षि भीष्म ।) सत्य-निबन्धावली ॥) मनुष्य के अधिकार ।-) आश्चर्य्य-जनक घन्टी ।=) जातीयशिक्षा -) राष्ट्रीयसंध्या)॥ श्रीयुत सत्यदेवजी का फोटो ।=) अन्य उपयोगी पुस्तकें राष्ट्रीयसन्देश ।=) भारतगीताञ्जलि ।) महात्मा श्रीकृष्ण ।) बालविनोद ।=) वनिताविनोद ॥=) महात्मा मेज़िनी ।)

नोटः—हमने "सत्यग्रन्थमाला" का सारा स्टाक तथा उसकी पुस्तकों की कापी-राइट ख़रीद ली है अब श्रीयुत सत्यदेवजी रचित पुस्तकें हमारे यहाँ ही मिलती हैं। एजन्टों को कमीशन दिया जाता है।

निवेदक

मैनेजर-हिन्दी-साहित्य-रत्नाकर कार्य्यालय,

मुज़फ़्फ़रपुर (विहार)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पढ़िये ! अवश्य पढ़िये ! नहीं तो पछताओगे ?

हिन्दी भाषा का अपूर्व ग्रंथ

सर्व धर्म शास्त्रों का सार
कई वर्षों के कठिन परिश्रम का फल.

प्रभु भक्ति

प्रत्येक प्रभुभक्त को
नित्य अवश्य पढ़ने योग्य.

हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारे फ़ानी में, कुछ अच्छे कर्म करले चार दिन की ज़िन्दगानी में।
बहा लेजाएगा एक दिन वो दरयाए फ़ना सबको, रुकावट आ नहीं सक्ती कभी उसकी रवानी में।
कयामिस जान ही सब कूंच कर जावेंगे दुनियाँ से, कोई बचपन कोई पीरी कोई अहदे जवानी में।

प्यारे धर्मबन्धुओं !

जगत् के सुख दुःखरूपी जाल में क्यों आप ऐसे फंस गये हैं कि कभी भगवत की भक्ति का स्मरण भी नहीं। ज़रा एक श्वान (कुत्ता) को भी तो देखियेगा कि प्रभुभक्ति (मालिक की ख़िदमत) ही में अवसर पर अपने प्राण तक न्योछावर कर देता है तो मनुष्य होकर प्रभुभक्ति को भूल जाना कितनी बड़ी भूल है। भाइयो उठों और सचेत होकर अपने कर्त्तव्य पालन में ध्यान दो, आयु का कुछ भी भरोसा नहीं है यदि काल के सिर पर चढ़ आने पश्चात् भगवत् की भक्ति का स्मरण हुआ तो वही कहावत चरितार्थ होगी कि "अब पछताये क्या हुये जब चिड़ियाँ चु[illegible] खेत" अतएव परमात्मा की भक्ति में सदैव कटिबद्ध रहियेगा।

परम आनन्द अर्थात् मोक्ष सुख को प्राप्त करने के लिये योग्य साध[illegible]क शास्त्रों को पढ़ने से प्राप्त हो सक्ता है जिसके लिये पूरे २ विद्याध्ययन की आवश्यक्ता है अनेक शास्त्रो[illegible] सद् ज्ञान प्राप्त करने के लिये यदि आपने योग्य विद्याध्ययन नहीं किया है भगवान का वंदन पूज[illegible]न आदि[illegible] समय मन की चंचलता के कारण यदि आपका चित्त स्थिर नहीं रहता है संस्कृत के[illegible] स्तुति आदि करते समय भावार्थ नहीं समझने के कारण यदि प्रभु से पूर्ण प्रेम उत्पन्न नहीं होता है और न भक्ति का आनन्द आता है तो हमारे धर्मबंधुओ ! लीजिये आपकी सेवा में "प्रभुभक्ति" ग्रंथ भेट करते हैं कई वर्षों तक कितने ही शास्त्र पढ़कर जो ज्ञान आप संपादन कर सकते हैं वह केवल एक "प्रभुभक्ति ग्रंथ" पढ़कर प्राप्त कर सकते हैं। ग्रंथ जितना बड़ा है उतना ही अधिक आनंददायक और उपयोगी है। इस ग्रन्थ में १६ प्रकरण हैं। सुन्दर टाइप, मनोहर कागज़, और पक्की ज़िल्द बंधी है। यह ग्रंथ हिन्दीभाषा में होने से प्रत्येक हिन्दी जानने वाला इसको भले प्रकार समझ सकता है। इसको पढ़ते समय अन्य सर्व बातों को भूलकर चित्त एकाग्र होकर प्रभुप्रेम में मग्न होजाता है और भक्ति का अपूर्व आनंद आता है और ऐसा प्रतीत होने लगता है मानों साक्षात् प्रभुही के दर्शन होरहे हैं, साक्षात् प्रभुही से वार्त्तालाप में अपनी सर्व निवेदने कह रहे हैं अनेक युक्तियों द्वारा निवेदनों की स्वीकृति करा रहे हैं। ग्रंथ पढ़ते २ हाथ से छोड़ते समय ऐसा मालूम होता है मानों एक आनंदभवन छोड़ कर किसी दुःखागार में आफँसा। स्थानाभाव से इस ग्रंथ की पूरी प्रशंसा यहाँ नहीं की जासक्ती है और न यहाँ पर अधिक प्रशंसा शोभा देती है। जब पाठक इस ग्रंथ को पढ़कर स्वयं अपने मुख से प्रशंसा करेंगे तब पाठकों के मुख पर ही इसकी प्रशंसा शोभा देगी और तबही लेखक का परिश्रम सफल होगा। अब आपसे हमारा अंतिम हार्दिक निवेदन यही है कि आप क़िस्से, नाटक, उपन्यास आदि पढ़ने में अपने अमूल्य समय और द्रव्य को वृथा व्यय न कीजियेगा, इस प्रभुभक्ति ग्रंथ को नित्य एक वा आधा प्रकरण अवश्य पाठ कीजियेगा और अपनी संतान को भी पढ़ाइयेगा जिससे ज्ञानी सदाचारी धर्मज्ञ बने और आत्मा का कल्याण करे। प्रत्येक भाई इस ग्रंथ को ख़रीद कर अवश्य लाभ उठावें अतएव इस ग्रंथ का मूल्य केवल १) एक रुपया रक्खा गया है। डाकव्यय ≡)

इन्द्रियों के क्षणिक सुखों के लिये सैकड़ों रुपये सदा व्यय करते हो तो मेरे प्यारे भाइयो ! आत्मा के कल्याणार्थ इस ग्रंथरूपी योग्य साधन को केवल एक रुपये में प्राप्त करने में भी हर्गिज़ देर न कीजियेगा—निम्नलिखित पते से शीघ्र वी. पी. द्वारा मंगवा लीजियेगा ॥

पत्रव्यवहार करने का पता—बाबू बालचन्द ऐण्ड मूलचन्द बोहरा, नया बाज़ार, अजमेर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

❀ इंडियन प्रेस, प्रयाग, के रंगीन चित्र ❀

चित्रकला, संगीतविद्या और कविता, इनमें देखा जाय तो परस्पर बहुत ही लगाव मिलेगा। जैसे अच्छे कवि की कविता मन को मोह लेती है, अच्छे गवैये का संगीत हृदय को प्रफुल्लित कर देता है वैसेही चतुर चित्रकार का बनाया चित्र भी सहृदय को चित्र-लिखित सा बना देता है। बड़े बड़े लोगों के चित्रों को भी सदा अपने सामने रखना परम उपकारी होता है। ऐसे उत्तम चित्रों के संग्रह से अपने घर को, अपनी बैठक को सजाने की इच्छा किसे न होगी? अच्छे चित्रों को बनानेवाले ही एक तो कम मिलते हैं, और अगर एक आध खोज करने से मिला भी तो चित्र बनवाने में एक एक चित्र पर हज़ारों की लागत बैठ जाती है। इस कारण उन को बनवाना और उनसे अपने [illegible] को सुसज्जित करने की अभिलाषा पूर्ण करना हर एक के [illegible] असंभव है। हमारे यहाँ से प्रकाशित होने वाली सरस्वती [illegible]कपत्रिका में जैसे सुन्दर मनोहर चित्र निकलते हैं सो [illegible] की ज़[illegible] नहीं है। हमने उन्हीं चित्रों में से उपयोगी उत्तम चुन हुए कुछ चित्र (बँधा कर रखने के लायक़) बड़े आकार में छपवाये हैं। चित्र स[illegible] नयनमनोहर, आठ आठ दस दस रंगों में सफ़ाई के साथ छपे हैं। एक बार हाथ में लेकर छोड़ने को जी नहीं चाहता। चित्रों के नाम, दाम और परिचय नीचे लिखा जाता है। शीघ्रता कीजिए, चित्र थोड़े ही छपे हैं—

शुक-शूद्रक-परिचय

(१४ रंगों में छपा हुआ)

आकार—२७½″ × १७″ दाम ३) रु०

संस्कृत कादम्बरी की कथा के आधार पर यह चित्र बना है। महा प्रतापी शूद्रक राजा की भारी भव्य सभा लगी हुई है। एक परम सुन्दरी चाण्डाल-कन्या राजा को अर्पण करने के लिए एक तोते का पिँजड़ा लेकर आती है। तोते का मनुष्य की वाणी में आशीर्वाद देना देख कर सारी सभा चकित हो जाती है। उसी समय का दृश्य इसमें दिखाया गया है।

शुक-शूद्रक-संवाद

(१४ रंगों में छपा हुआ)

आकार—३१″ × १८¾″ दाम ३) रु०

संस्कृत कादम्बरी की कथा के आधार पर यह चित्र भी बना है। इस चित्र में राजमहल—अन्तःपुर का दृश्य बहुत अच्छे ढँग से दिखाया गया है। राजा शूद्रक लेटा है। रानियाँ बैठी हैं। मन्त्री भी उपस्थित है। चाण्डालकन्या के दिये हुए उसी तोते से राजा के बातचीत करने का सुन्दर दृश्य दिखाया गया है।

चित्रों के मिलने का पता—**मैनेजर, इंडियन प्रेस, प्रयाग।**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

✻ इंडियन प्रेस, प्रयाग, के रंगीन चित्र ✻

भक्ति-पुष्पांजलि

आकार—१३½″ × ९½″ दाम ॥=)

एक सुन्दरी शिवमन्दिर के द्वार पर पहुँच गई है। सामने ही शिवमूर्ति है। सुन्दरी के साथ एक बालक है और हाथ में पूजा की सामग्री है। इस चित्र में सुन्दरी के मुख पर, इष्टदेव के दर्शन और भक्ति से होने वाला आनन्द, श्रद्धा और सौम्यता के भाव बड़ी .खूबी से दिखलाये गये हैं।

चैतन्यदेव

आकार—१०½″ × ६″ दाम ।=) मात्र

महाप्रभु चैतन्यदेव बंगाल के एक अनन्य भक्त वैष्णव हो गये हैं। वे कृष्ण का अवतार और वैष्णव धर्म के एक आचार्य माने जाते हैं। वे एक दिन घूमते विचरते जगन्नाथपुरी पहुँचे। वहाँ गरुड़स्तम्भ के नीचे खड़े होकर दर्शन करते करते वे भक्ति के आनन्द में बेसुध होगये। उसी समय के सुन्दर दर्शनीय भाव इस चित्र में बड़ी .खूबी के साथ दिखलाये गये हैं।

बुद्ध-वैराग्य

आकार—१८½″ × २३″ दाम २) रु०

संसार में अहिंसा-धर्म का प्रचार करने वाले महात्मा बुद्ध का नाम जगत् में प्रसिद्ध है। उन्होंने राज्यसम्पत्ति को लात मार कर वैराग्य ग्रहण कर लिया था। इस चित्र में महात्मा बुद्ध ने अपने राज-चिह्नों को निर्जन में जाकर त्याग दिया है और अपने अनुचर से उन्हें उठाकर घर ले जाने के लिए कह रहे हैं। उस समय के, बुद्ध के मुख पर, वैराग्य और अनुचर के मुख पर आश्चर्य के चिह्न इस चित्र में बड़ी .खूबी के साथ दिखलाये गये हैं।

अहल्या

आकार—१३½″ × १८½″ दाम १) रु०

अहल्या अलौकिक सुन्दरी थी। वह गौतम ऋषि की स्त्री थी। इस चित्र में यह दिखाया गया है कि अहल्या वन में फूल चुनने गई है और एक फूल हाथ में लिये खड़ी कुछ सोच रही है। सोच रही है देवराज इन्द्र के सौन्दर्य को—उन पर वह एक प्रकार से मोहित सी होगई है। इसी अवस्था को इस चित्र में चतुर चित्रकार ने बड़ी कारीगरी के साथ दिखलाया है। चित्र बहुत ही दर्शनीय बना है।

शाहजहाँ की मृत्युशय्या

आकार [illegible] × १०″ दाम ॥)

शाहजहाँ बाद[illegible] को [illegible] कुचक्री बेटे औरंगज़ेब ने धो[illegible]र क़ैद [illegible] था। उसकी प्यारी बेटी जहाँनारा भी बाप के पास क़ैद की हालत में रहती थी। शाहजहाँ का मृत्युकाल निकट है, जहाँनारा सिर पर हाथ रक्खे [illegible]ए चिन्तित हो रही है। उसी समय का दृश्य इस चित्र में दिखलाया गया है। शाहजहाँ के मुख पर मृत्युकाल की दशा बड़ी ही .खूबी के साथ दिखलाई गई है।

भारतमाता

आकार—१०½″ × ६″ दाम ।=)

इस चित्र का परिचय देने की अधिक आवश्यकता नहीं। जिसने हमको पैदा किया है, जो हमारा पालन कर रही है, जिसके हम कहलाते हैं, और जो हमारा सर्वस्व है उसी जननी जन्मभूमि भारत-माता का तपस्विनी वेष में यह दर्शनीय चित्र बनाया गया है। प्रत्येक भारतवासी को यह चित्र अपने घर में, अपनी आँखों के आगे रखना चाहिए।

चित्रों के मिलने का पता—**मैनेजर, इंडियन प्रेस, प्रयाग।**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu